वार्षिक रिपोर्ट
ANNUAL REPORT
2017-18

रानी लक्ष्मी बाई केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय
झांसी 284 003, भारत
Rani Lakshmi Bai Central Agricultural University
Jhansi 284 003, India

रा.ल.बा. के.कृ.वि.

वार्षिक रिपोर्ट

2017-18

जुलाई 2017 - जून 2018

रानी लक्ष्मी बाई केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय
झांसी 284 003, भारत

वार्षिक रिपोर्ट 2017-2018

(जुलाई 2017 से जून 2018)

दूरभाष	:	0510-2730555, 0510-2730777
फैक्स	:	0510-2730555
ई-मेल	:	vcrlbcau@gmail.com
वेबसाइट	:	http://www.rlbcau.ac.in

प्रकाशन

डॉ. मुकेश श्रीवास्तव

कुलसचिव

रानी लक्ष्मी बाई केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय

झांसी 284003

संकलन और संपादन

प्रो. डॉ. कुसुमाकर शर्मा

सलाहकार

डॉ. मीनाक्षी आर्य

वैज्ञानिक (पादप रोगविज्ञान)

डॉ. मुकेश श्रीवास्तव

कुलसचिव

रानी लक्ष्मी बाई केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय

झांसी 284003

आभार

कृषि ज्ञान प्रबंध निदेशालय (डीकेएमए)

भारतीय कृषि अनुसंधन परिषद, कृषि अनुसंधान भवन-1,

पूसा, नई दिल्ली 110012

मै. प्रिन्ट-ओ-वर्ल्ड, 2568, मंदिर लेन, शादीपुर, नई दिल्ली-110008 द्वारा लेजरटाईपसैट तथा मै. रायल ऑफसेट पिंटर्स, ए-89/1, नारायणा इंडस्ट्रियल एरिया, फेस-1, नई दिल्ली-110028 द्वारा मुद्रित।

प्राक्कथन

मुझे रानी लक्ष्मी बाई केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय (आरएलबीसीएयू), झांसी का चतुर्थ वार्षिक प्रतिवेदन प्रस्तुत करते हुए अत्यंत प्रसन्नता हो रही है। इस प्रतिवेदन में वर्ष 2017-18 के दौरान विश्वविद्यालय के प्रमुख विकास और महत्वपूर्ण घटनाओं पर प्रकाश डालते हुए उनकी समीक्षा की गई है।

विश्वविद्यालय ने राष्ट्रीय महत्व की एक संस्था के रूप में अपनी स्थापना के अधिदेशित उद्देश्यों को प्राप्त करने हेतु कृषि शिक्षा, अनुसंधान एवं विस्तार के क्षेत्र में निरंतर प्रगति की है। विश्वविद्यालय की शैक्षणिक गतिविधियों को बी.एससी. (ऑनर्स) कृषि, बी.एससी. (ऑनर्स) बागवानी और बी.एससी. (ऑनर्स) वानिकी की उपाधि हेतु चल रहे तीन पूर्व स्नातक कार्यक्रमों के लिए वांछित बुनियादी ढांचा उपलब्ध कराकर सबल बनाया गया है। भा.कृ.अ.प.-अखिल भारतीय प्रवेश परीक्षा के माध्यम से नामांकित किए गए 80 नए छात्रों को प्रवेश दिया गया है। नया शैक्षणिक खण्ड गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए आधुनिक सुविधाओं से युक्त पूर्व-रचित संरचनाओं में कार्यशील हो गया है। विश्वविद्यालय ने छात्रों तथा संकाय सदस्यों की सुविधा के लिए अपनी प्रयोगशालाओं, कक्षाओं तथा प्रयोगात्मक शिक्षा संसाधनों को सबल बनाया है।

बुंदेलखंड क्षेत्र की कृषि-पारिस्थितिकीय स्थिति को ध्यान में रखते हुए अनुसंधान कार्य मुख्यत: दलहनों व तिलहनों का उत्पादन बढ़ाने की उपयुक्त प्रौद्योगिकी विकास पर केन्द्रित रहा है। फसल प्रणाली में चना, ग्रीष्मकालीन मूंग, तिल और तोरिया-सरसों फसलों के शामिल किए जाने से उत्पादन व उत्पादकता में और अधिक बढ़ोतरी होने की संभावना है। भा.कृ.अ.प.-अखिल भारतीय समन्वित चना अनुसंधान परियोजना के विश्वविद्यालय केन्द्र में चने की उत्पादकता और उत्पादन को बढ़ाने की दिशा में उल्लेखनीय उपलब्धियां हुई हैं। अनेक प्रविष्टियों (बारानी, सिंचित, काबुली, देसी तथा अधिक बड़ी काबुली) का उनकी उपज क्षमता तथा जैविक व अजैविक प्रतिकूल स्थितियों के प्रति सहिष्णुता के लिए मूल्यांकन किया गया। इस क्षेत्र में चने का स्टंट विषाणु तथा *एस्कोकाइटा* झुलसा रोग उभरते हुए रोगों के रूप में रिकॉर्ड किए गए हैं। भा.कृ.अ.प. ने 1 अप्रैल 2018 से विश्वविद्यालय में अखिल भारतीय समन्वित तोरिया-सरसों अनुसंधान परियोजना का एक केन्द्र भी स्थापित किया है, ताकि बुंदेलखंड क्षेत्र में इस महत्वपूर्ण तिलहनी फसल की खेती को बढ़ावा दिया जा सके।

खेती की श्रेष्ठ विधियों को बढ़ावा देने के लिए विश्वविद्यालय द्वारा कृषक भ्रमण कार्यक्रमों की व्यवस्था की गई। संकाय द्वारा चने, सरसों और तिल के 130 प्रशिक्षण एवं अग्र पंक्ति प्रदर्शन तथा अन्य विस्तार क्रियाकलाप सफलतापूर्वक आयोजित किए गए जिनसे सैकड़ों किसानों को लाभ

हुआ। विश्वविद्यालय के अध्यापक तथा छात्र स्वच्छ भारत अभियान (एसबीए), राष्ट्रीय समाज सेवा (एनएसएस), राष्ट्रीय कृषि उत्सव तथा अखिल भारतीय अंतर कृषि विश्वविद्यालय खेल-कूद प्रतियोगिता में शामिल होने की दिशा में सक्रिय रहे हैं।

आवश्यक भवनों (कृषि, बागवानी और वानिकी महाविद्यालय के लिए शैक्षणिक भवन; प्रशासनिक भवन, कुलपति निवास, छात्रावास आदि) के लिए निर्माण कार्य करते हुए बुनियादी ढांचे के विकास में उल्लेखनीय प्रगति हुई है। यह समस्त कार्य झांसी में पूर्ण गति से हो रहे हैं। इससे निकट भविष्य में शिक्षा, अनुसंधान एवं विस्तार के लिए अति उत्कृष्ट सुविधाएं सृजित करने का कार्य और अधिक तेजी से सम्पन्न होगा। ऐसी अपेक्षा है कि अधिष्ठाताओं तथा निदेशकों के वैधानिक पद शीघ्र ही भरे जाएंगे तथा विभिन्न शैक्षणिक व गैर-शैक्षणिक पदों के सृजन के लिए भारत सरकार के वित्त मंत्रालय की वांछित स्वीकृति भी विश्वविद्यालय को शीघ्र प्राप्त होगी।

विश्वविद्यालय को अनेक विशिष्ट व्यक्तियों व शिक्षाविदों के आतिथ्य का सुअवसर प्राप्त हुआ है। विश्वविद्यालय उनके प्रोत्साहन, मार्गदर्शन तथा महत्वपूर्ण योगदान के प्रति उनका ऋणी है। प्रबंधन मंडल, वित्त समिति, भवन एवं निर्माण कार्य समिति सहित अनेक समितियों के सदस्यों ने हमें निरंतर अपना समर्थन देते हुए हमारा मार्गदर्शन किया है। मैं इन सभी के प्रति हृदय से आभार व्यक्त करता हूं।

विश्वविद्यालय श्री राम नाथ कोविंद जी, माननीय विजिटर, श्री राधा मोहन सिंह जी, माननीय केन्द्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री, भारत सरकार और डॉ. पंजाब सिंह, माननीय कुलाधिपति का उनके मार्गदर्शन तथा वांछित समर्थन के लिए ऋणी हैं। मैं केन्द्र तथा राज्य सरकारों; डॉ. त्रिलोचन महापात्र, सचिव, कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा विभाग, कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार तथा महानिदेशक, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद को इनके महत्वपूर्ण योगदान हेतु हृदय से धन्यवाद देता हूं। मैं डॉ. मुकेश श्रीवास्तव, कुलसचिव; श्री जवाहर लाल शर्मा, प्रशासनिक अधिकारी, भा.कृ.अ.प.-सीएएफआरआई, झांसी तथा श्री महेश मुलानी, वित्त एवं लेखा अधिकारी, भा.कृ.अ.प.-सीआईएई, भोपाल को भी उनके द्वारा वांछित सहायता प्रदान करने के लिए हार्दिक धन्यवाद देता हूं। मैं अपने वैज्ञानिकों तथा अन्य स्टाफ से प्राप्त सामूहिक सहयोग और सहायता के लिए भी उनका आभारी हूं जिन्होंने ऊंचे स्वप्न देखे तथा सीमित संख्या में होने के बावजूद भी निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए अथक कार्य किया है। मैं प्रोफेसर डॉ. कुसुमाकर शर्मा तथा उनके समर्पित संपादकीय दल को यह वार्षिक प्रतिवेदन समय पर तैयार करने के लिए बधाई देता हूं।

अरविन्द कुमार

दिनांक: 30 जुलाई, 2018
स्थान : झांसी

(अरविन्द कुमार)
कुलपति

विषय-सूची

प्राक्कथन *iii*

विश्वविद्यालय 1

1. प्रस्तावना 2
2. लक्ष्य 2
3. विश्वविद्यालय प्राधिकारी एवं शासन 2
4. शैक्षणिक गतिविधियां 5
5. संकाय 6
6. एआईसीआरपी – चना उप केन्द्र 16
7. विस्तार गतिविधियां 25
8. बुनियादी ढांचे का विकास 31
9. वित्त एवं बजट 41
10. अन्य प्रमुख गतिविधियां/कार्यक्रम 42
11. अतिथियों की सूची 48
12. संकाय सदस्यों की सम्मेलनों/प्रशिक्षणों/बैठकों में प्रतिभागिता 51
13. पुरस्कार एवं सम्मान 53
14. प्रकाशन 53
15. वर्ष 2018-19 के लिए भावी कार्यक्रम 56

अनुबंध I 57
अनुबंध II 59
अनुबंध III 60
अनुबंध IV 68
अनुबंध V 69
अनुबंध VI 70
अनुबंध VII 71
अनुबंध VIII 72

विश्वविद्यालय

1. प्रस्तावना

रानी लक्ष्मी बाई केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय भारत का ऐसा प्रथम कृषि विश्वविद्यालय है जिसकी स्थापना वर्ष 2014 में भारत सरकार द्वारा संसद के एक अधिनियम के अंतर्गत राष्ट्रीय महत्व की संस्था के रूप में की गई थी। इसका मुख्यालय उत्तर प्रदेश राज्य के झांसी में है। कृषि के क्षेत्र में शिक्षा, अनुसंधान तथा विस्तार शिक्षा के कार्यक्रमों के संदर्भ में इसका कार्य क्षेत्र और उत्तरदायित्व पूरे देश में व्याप्त है, तथापि बुंदेलखंड क्षेत्र से संबंधित मामलों को विशेष रूप से प्राथमिकता दी गई है। विश्वविद्यालय अधिनियम में यह व्यवस्था है कि सभी महाविद्यालय, अनुसंधान एवं प्रयोगात्मक केन्द्र तथा अन्य संस्थाएं जो विश्वविद्यालय के प्राधिकार के अंतर्गत स्थापित हुई हैं या की जानी हैं वे विश्वविद्यालय के अधिकारियों तथा प्राधिकारियों के पूर्ण प्रबंध व नियंत्रण के अंतर्गत आने वाली घटक इकाइयां होंगी। विश्वविद्यालय अधिनियम की धारा 4 (2) के प्रावधान के अंतर्गत विश्वविद्यालय ने अपने मुख्यालय के अलावा, कृषि महाविद्यालय व बागवानी एवं वानिकी महाविद्यालय, झांसी में स्थापित किए हैं। दो अन्य महाविद्यालय नामत: पशुचिकित्सा एवं पशुविज्ञान महाविद्यालय तथा मात्स्यकी महाविद्यालय, दतिया, मध्य प्रदेश में स्थापित किए जा रहे हैं। विश्वविद्यालय को कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा विभाग, कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली से सीधे वित्तीय सहायता प्राप्त होती है।

2. लक्ष्य

रानी लक्ष्मी बाई केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय अधिनियम- 2014 के अनुसार विश्वविद्यालय के उद्देश्य स्पष्ट रूप से परिभाषित हैं जो निम्नानुसार हैं:

क. जैसा उचित हो, कृषि तथा सम्बद्ध विज्ञानों की विभिन्न शाखाओं में उचित शिक्षा प्रदान करना;

ख. कृषि तथा संबंध विज्ञानों में अधिगम या सीखने तथा अनुसंधान करने में और अधिक प्रगति करना;

ग. बुंदेलखंड में सम्मानित न्यायिक क्षेत्र के राज्यों के जिलों में विस्तार शिक्षा के कार्यक्रम चलाना;

घ. राष्ट्रीय तथा अंतरराष्ट्रीय शैक्षणिक संस्थाओं के साथ साझीदारी और सम्पर्कों को बढ़ावा देना; और

ड. समय-समय पर निर्धारित किए गए अन्य ऐसे कार्यों को सम्पन्न करना।

3. विश्वविद्यालय प्राधिकारी एवं शासन

कुलपति विश्वविद्यालय के प्रधान कार्यपालक व शैक्षणिक प्रमुख तथा प्रबंध मंडल, वित्त समिति और शैक्षणिक परिषद के पदेन अध्यक्ष हैं। प्रबंध मंडल, वित्त समिति और शैक्षणिक परिषद शीर्ष निकाय हैं जो प्रशासनिक, वित्तीय व शैक्षणिक मामलों में निर्णय लेते हैं। विश्वविद्यालय की प्रस्तावित शासन संरचना चित्र में दर्शायी गई है।

3.1 प्रबंधन मंडल

प्रबंधन मंडल प्रधान कार्यपालक निकाय है तथा यह विश्वविद्यालय द्वारा निर्णय लेने और इसके प्रबंध के लिए उत्तरदायी है। रिपोर्टाधीन अवधि के दौरान प्रबंधन मंडल का गठन अनुबंध-I में दिया गया है। इस अवधि के दौरान प्रबंधन मंडल की तीन बैठकें आयोजित हुईं।

क्र. सं.	बैठक	तिथि	उपस्थित मंडल सदस्यों की संख्या
1.	5वीं	4 अगस्त 2017	14
2.	6वीं	31 जनवरी 2018	12
3.	7वीं	14 जून 2018	09

प्रबंधन मंडल द्वारा विभिन्न बैठकों में लिए गए महत्वपूर्ण निर्णयों में निम्न निर्णय शामिल हैं:

पांचवीं बैठक

- शैक्षणिक वर्ष 2016-17 के लिए वार्षिक प्रतिवेदन का अनुमोदन

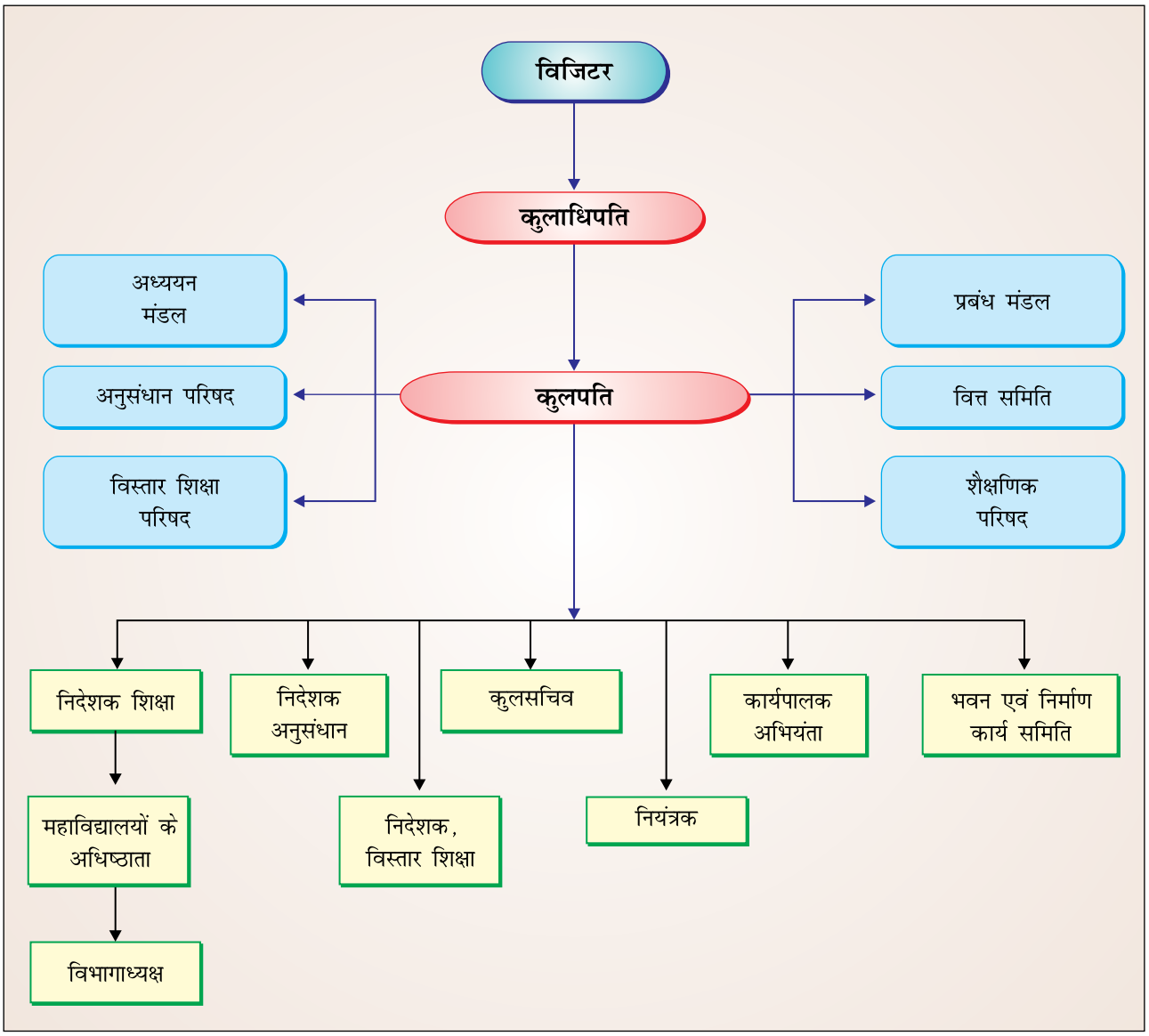

विश्वविद्यालय की शासन संरचना

- वर्ष 2017-18 से 2019-20 के लिए बजट आकलनों के अंतर्गत सूचित किए गए आवंटनों का मूल्यांकन तथा प्रस्तावित ईएफसी
- विश्वविद्यालय द्वारा 2017-18 के दौरान किए गए सिविल निर्माण कार्यों की प्रगति और स्थिति का मूल्यांकन
- अधिदेशित लेखापरीक्षा के लिए वर्ष 2016-17 हेतु वार्षिक लेखों का अनुमोदन
- निदेशकों/अधिष्ठाताओं के पदों के लिए चयन समिति में सदस्यों के कुलपति द्वारा नामांकन हेतु कम से कम कुलपति या समतुल्य पदों पर कार्यरत या कार्य कर चुके छह प्रतिष्ठित वैज्ञानिकों के पैनल का नामांकन
- निदेशकों/अधिष्ठताओं/प्राध्यापक या समतुल्य पदों के लिए स्कोर-कार्ड दिशानिर्देशों पर विचार
- प्रबंधन मंडल तथा विभिन्न समितियों के

प्रबंधन मंडल की 5वीं बैठक का दृश्य

गैर-सरकारी सदस्यों के मानदेय/बैठक में भाग लेने के शुल्क के संशोधन पर विचार

- शैक्षणिक वर्ष 2017-18 के दौरान 25 शिक्षण एसोसिएट को नियुक्त करने की स्वीकृति
- डॉ. कुसुमाकर शर्मा और डॉ. एस.के. शर्मा के परामर्शकों के रूप में कार्यकाल के विस्तार की स्वीकृति

छठी बैठक

- विजिटर को प्रस्तुत किए जाने के लिए वर्ष 2015-16 और 2016-17 के लिए वार्षिक लेखों के लेखापरीक्षा प्रतिवेदन का अनुमोदन
- वर्ष 2017-18 से 2019-20 के लिए ईएफसी द्वारा अनुमोदित आबंटनों का मूल्यांकन
- विश्वविद्यालय द्वारा किए गए सिविल निर्माण कार्यों की प्रगति एवं स्थिति का मूल्यांकन
- शैक्षणिक वर्ष 2018-19 के दौरान विश्वविद्यालय के विभिन्न पूर्व स्नातक कार्यक्रमों में प्रवेश पाने वाले छात्रों की संख्या का अनुमोदन
- शैक्षणिक वर्ष 2018-19 और उसके बाद प्रवेश पाने वाले छात्रों के लिए शुल्क के ढांचे में प्रस्तावित संशोधन का अनुमोदन।

सातवीं बैठक

- रानी लक्ष्मी बाई केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, झांसी में शिक्षा निदेशक, अनुसंधान निदेशक तथा विस्तार शिक्षा निदेशक और कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता तथा बागवानी एवं वानिकी महाविद्यालय के अधिष्ठाता की नियुक्ति के लिए चयन समिति द्वारा की गई सिफारिशों का अनुमोदन
- वर्ष 2017-18 के लिए वार्षिक लेखों का अनुमोदन

- प्रश्न-पत्र तैयार करने और परीक्षा उत्तर पुस्तिकाओं के मूल्यांकन के पारिश्रमिक के संशोधन का अनुमोदन
- विशेषज्ञों/अतिथि व्याख्याताओं के मानदेय में संशोधन का अनुमोदन
- विश्वविद्यालय के एनपीएस योगदाताओं को ब्याज की अदायगी का अनुमोदन
- एनपीएस के योगदाता के रूप में डॉ. अरविन्द कुमार के नामांकन का अनुमोदन
- छुट्टी नकदीकरण के लाभों के विस्तार तथा राष्ट्रीय पेंशन योजना के अंतर्गत आने वाले विश्वविद्यालय के कर्मचारियों को 'सेवानिवृत्ति उपादान तथा मृत्यु उपादान' का अनुमोदन
- अध्ययन दौरे पर छात्रों को सरकारी आवास प्रभारों की प्रतिपूर्ति का अनुमोदन
- फार्म उपकरणों तथा ग्रीनहाउस/पॉलीहाउस की खरीद का अनुमोदन
- डॉ. कुसुमाकर शर्मा के परामर्शक के रूप में नियुक्ति की अवधि के विस्तार का अनुमोदन
- विश्वविद्यालय नियंत्रक की सेवानिवृत्ति की आयु बढ़ाने का अनुमोदन
- शैक्षणिक वर्ष 2017-18 के लिए वार्षिक प्रतिवेदन का अनुमोदन।

3.2 वित्त समिति

विश्वविद्यालय की वित्त समिति में पदेन अध्यक्ष के रूप में कुलपति, वित्तीय सलाहकार, कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा विभाग; मंडल द्वारा नामित तीन व्यक्ति जिनमें से कम से कम एक व्यक्ति मंडल का सदस्य होगा; विजिटर द्वारा नामित तीन व्यक्ति; इसके सदस्य तथा विश्वविद्यालय के नियंत्रक इसके सदस्य-सचिव हैं (अनुबंध-II)। इस अवधि के दौरान वित्त समिति की दो बैठक हुई।

क्र. सं.	बैठक	तिथि	उपस्थित वित्त समिति के सदस्यों की सं.
1.	5वीं	10 जनवरी 2018	05
2.	6वीं	08 जून 2018	06

वित्त समिति की बैठक में कार्यसूची की जिन मदों पर चर्चा हुई और जो प्रमुख निर्णय लिए गए वे निम्नानुसार हैं:

पांचवीं बैठक

- वर्ष 2015-16 और 2016-17 के लिए वार्षिक लेखों के लेखापरीक्षा प्रतिवेदन का मूल्यांकन
- वर्ष 2017-18 से 2019-20 के लिए ईएफसी द्वारा अनुमोदित आबंटनों का मूल्यांकन

छठवीं बैठक

- वर्ष 2017-18 के लिए वार्षिक लेखों का अनुमोदन
- वर्ष 2018-19 के लिए बजट आकलनों के अंतर्गत सूचित किए गए आबंटनों का मूल्यांकन
- प्रश्न-पत्र तैयार करने, परीक्षा उत्तर पुस्तिकाओं के मूल्यांकन और अतिथि व्याख्याताओं के पारिश्रमिक का संशोधन
- विश्वविद्यालय के एनपीएस अंशदाताओं को ब्याज की अदायगी का अनुमोदन
- एनपीएस के अंशदाता के रूप में डॉ. अरविंद कुमार के नामांकन का अनुमोदन
- छात्रों को अध्ययन दौरों के लिए सरकारी आवास के प्रभारों की प्रतिपूर्ति
- अर्जित ब्याज से फार्म उपकरणों तथा ग्रीनहाउस/पॉली हाउस की खरीद
- विश्वविद्यालय के दतिया परिसर हेतु मास्टर प्लान का मूल्यांकन

4. शैक्षणिक गतिविधियां

शैक्षणिक सत्र 2017-18 के लिए भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद द्वारा आयोजित पूर्व स्नातक कार्यक्रमों के लिए कृषि एंव सम्बद्ध विज्ञानों में अखित भारतीय

प्रवेश परीक्षा के माध्यम से प्रवेश देने की क्षमता तथा पंजीकृत छात्रों की संख्या का विवरण निम्न तालिका में दिया गया है।

छात्र	बी.एससी. (ऑनर्स)			
	कृषि	बागवानी	वानिकी	कुल
प्रवेश क्षमता	40	20	20	80
पंजीकृत	37	14	13	64

विश्वविद्यालय का चौथा शैक्षणिक सत्र 25 जुलाई 2017 से प्रारंभ हुआ। डॉ. मुकेश श्रीवास्तव, कुलसचिव ने नए प्रवेश पाए छात्रों को विश्वविद्यालय के बारे में संक्षेप में बताया जिसमें पृष्ठभूमि, लक्ष्य तथा हाल की उपलब्धियों के साथ गुरूजनों की अपेक्षाओं का उल्लेख भी किया गया था। प्रथम वर्ष के सभी छात्रों के लिए विश्वविद्यालय में 11 सितम्बर 2017 को अनुस्थापन कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसमें विश्वविद्यालय के नए छात्रों तथा वरिष्ठ छात्रों, संकाय सदस्यों व स्टाफ ने भाग लिया। कुलपति डॉ. अरविन्द कुमार ने मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित होकर इस कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। कुलसचिव डॉ. मुकेश श्रीवास्तव ने विश्वविद्यालय की हाल की उपलब्धियों, शैक्षणिक विषयों, वित्तीय सहायता एवं छात्रवृत्तियों, छात्र कल्याण, आचार संहिता, खेल-कूद के महत्व आदि के बारे में बताते हुए विश्वविद्यालय के संबंध में एक संक्षिप्त व्याख्यान दिया। माननीय कुलपति ने छात्रों का विश्वविद्यालय परिवार में स्वागत किया तथा किसानों की आय दुगुनी करने के संदर्भ में उन्हें सामान्य रूप से शिक्षा का महत्व और विशेष रूप से उच्च कृषि शिक्षा का योगदान समझने का परामर्श दिया। उन्होंने कृषि शिक्षा तथा देश के सामाजिक-सांस्कृतिक विकास के बीच मौजूद सशक्त संबंध की विस्तार से व्याख्या करते हुए बताया कि यह इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि कृषि हमारे देश की लगभग आधी जनसंख्या की आजीविका में सहायता पहुंचाती है। उन्होंने महाविद्यालय/विश्वविद्यालय स्तर पर मौलिक कौशल प्राप्त करने व उसे सुधारने और इसके साथ ही व्यक्तित्व, पहल लेने तथा सृजनशीलता के विकास हेतु परिसर में उपस्थित अवसरों का लाभ उठाने तथा शिक्षा क्षेत्र में हुए विकास के बारे में जागरूक रहने का प्रयास करते रहने के लिए छात्रों का आह्वान किया। कार्यक्रम के अंत में एक सांस्कृतिक कार्यक्रम और तद्पश्चात् रात्रि भोज का भी आयोजन हुआ।

5. संकाय

विश्वविद्यालय में अब तक नियमित शिक्षण/गैर-शिक्षण स्टाफ नहीं है। विश्वविद्यालय अधिनियम की धारा 6 (x, xi) के संदर्भ में शैक्षणिक, अनुसंधन, विस्तार शिक्षा, प्रशासनिक, मंत्रालयीन और अन्य पदों को सृजित करने और इनकी नियुक्ति करने की शक्ति के अंतर्गत विश्वविद्यालय की वित्त समिति तथा प्रबंधन मंडल ने मुख्यालय तथा 4 घटक महाविद्यालयों (कृषि महाविद्यालय; बागवानी एवं वानिकी महाविद्यालय; पशुचिकित्सा एवं पशुविज्ञान महाविद्यालय; तथा मात्स्यकी महाविद्यालय) के लिए भा.कृ.अ.प. द्वारा कृषि विज्ञान की विभिन्न शाखाओं और भारतीय पशुचिकित्सा परिषद (वीसीआई) द्वारा पशुचिकित्सा विज्ञान में पूर्व स्नातक/स्नातकोत्तर शिक्षा के लिए न्यूनतम मानकों व मानदंडों के आधार पर 254 शैक्षणिक तथा 234 गैर-शैक्षणिक पदों के सृजन की स्वीकृति प्रदान की है। तथापि, वित्त मंत्रालय ने पदों के सृजन हेतु वित्तीय स्वीकृति देने के लिए प्रस्ताव पर विचार करने से पहले व्यय प्रबंध समिति (ईएमसी) के माध्यम से जीएफआर 2017 (ix) के अनुसार विश्वविद्यालय का मूल्यांकन कराए जाने की इच्छा व्यक्त की। ईएमसी ने जनवरी 2018 में अपना प्रतिवेदन प्रस्तुत कर दिया है तथा 254 शैक्षणिक तथा 234 गैर-शैक्षणिक पदों के प्रस्तावित संकाय शक्ति की अनुशंसा की है जो मानदंडों तथा प्रत्यायन आधारों के अनुसार है। इन पदों को प्राथमिकता के

आधार पर स्वीकृत करने की सिफारिश की गई है। यह प्रस्ताव कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा विभाग द्वारा वित्तीय स्वीकृति के लिए वित्त मंत्रालय को 4 अप्रैल 2018 को पुनः प्रस्तुत किया गया। तथापि, कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा विभाग द्वारा दिए गए अनुमोदन के अनुसार वैधानिक पदों पर भर्ती करने की प्रक्रिया पूरी की जा चुकी है। इस दौरान विश्वविद्यालय अपनी शैक्षणिक गतिविधियां 34 संविदा/अतिथि संकाय, वैज्ञानिकों तथा शैक्षणिक एसोसिएट की सहायता से सम्पन्न कर रहा है।

विश्वविद्यालय द्वारा इस शैक्षणिक वर्ष के दौरान बी.एससी. (ऑनर्स) कृषि के प्रथम, द्वितीय, तृतीय और चतुर्थ वर्ष के छात्रों तथा बी.एससी. (ऑनर्स), बागवानी व बी.एससी. (ऑनर्स) वानिकी के प्रथम व द्वितीय वर्ष के छात्रों के लिए निम्नलिखित पाठ्यक्रम उपलब्ध कराए गए।

बी.एससी. (ऑनर्स) कृषि प्रथम वर्ष

I. सेमिस्टर

क्र.सं.	पाठ्यक्रम कोड	पाठ्यक्रम का शीर्षक	क्रेडिट घंटे
1.	एपीए 101	सस्यविज्ञान के मूल तत्व	4 (3+1)
2.	एपीएस 118	मृदा विज्ञान के मूल तत्व	3 (2+1)
3.	एपीएच 176	बागवानी के मूल तत्व	2 (1+1)
4.	एपीएफ 179	वानिकी का परिचय	2 (1+1)
5.	एबीबी 155	पादप जैव-रसायनविज्ञान एवं जैवप्रौद्योगिकी के मूल तत्व	3 (2+1)
6.	एएसी 148	ग्रामीण समाज विज्ञान एवं शैक्षणिक मनोविज्ञान	2 (2+0)
7.	एआरसी 172	प्राथमिक गणित	2 (2+0)
8.	एआरसी 171	परिचयात्मक जीवविज्ञान	2 (1+1)
9.	एएमसी 166	मानव मूल्य एवं आचार नीति	1 (1+0)
10.	एएसी 147	अंग्रेजी में बोधागम्यता एवं संचार कौशल	2 (1+1)
11.	एआरसी 173	कृषि विरासत	1 (1+0)
12.	एएमसी 167	एनएसएस	2 (0+2)

II. सेमिस्टर

क्र.सं.	पाठ्यक्रम कोड	पाठ्यक्रम का शीर्षक	क्रेडिट घंटे
1.	एजीपी 113	आनुवंशिकी के मूल तत्व	3 (2+1)
2.	एबीबी 156	कृषि सूक्ष्मजीविज्ञान	2 (1+1)

क्र.सं.	पाठ्यक्रम कोड	पाठ्यक्रम का शीर्षक	क्रेडिट घंटे
3.	एएई 132	परिचयात्मक मृदा एवं जल संरक्षण अभियांत्रिकी	2 (1+1)
4.	एबीबी 157	फसल कार्यिकी के मूल तत्व	2 (1+1)
5.	एईसी 127	कृषि अर्थशास्त्र के मूल तत्व	2 (2+0)
6.	एपीपी 138	पादप रोगविज्ञान के मूल तत्व	4 (3+1)
7.	एपीई 121	कीट विज्ञान के मूल तत्व	4 (3+1)
8.	एएसी 149	कृषि विस्तार शिक्षा के मूल तत्व	3 (2+1)
9.	एएसी 115	संचार कौशल एवं व्यक्तित्व विकास	2 (1+1)
10.	एएनसी 167	एनएसएस	2 (0+2)

बी.एससी. (ऑनर्स) कृषि द्वितीय वर्ष

III. सेमिस्टर

क्र.सं.	पाठ्यक्रम कोड	पाठ्यक्रम का शीर्षक	क्रेडिट घंटे
1.	एएसटी 241	पादप प्रजनन के मूल तत्व	3 (2+1)
2.	एपीएच 211	सब्जियों तथा मसालों के लिए उत्पादन प्रौद्योगिकी	2 (1+1)
3.	एईसी 226	कृषि वित्त एवं सहकारिता	3 (2+1)
4.	एपीए 201	फसल उत्पादन प्रौद्योगिकी - I (खरीफ फसलें)	2 (1+1)
5.	एएलएम 266	पशुधन एवं कुक्कुट प्रबंधन	4 (3+1)
6.	एपीए 202	पर्यावरण अध्ययन एवं आपदा प्रबंधन	3 (1+2)
7.	एबीपी 251	कृषि-सूचना प्रणाली	2 (1+1)
8.	एएई 231	फार्म यंत्र एवं शक्ति	2 (1+1)
9.	एपीई 221	सांख्यिकीय विधियां	2 (1+1)
10.	एएनसी 267	एनएसएस	1 (0+1)

IV सेमिस्टर

क्र.सं.	पाठ्यक्रम कोड	पाठ्यक्रम का शीर्षक	क्रेडिट घंटे
1.	एपीए 205	फसल उत्पादन प्रौद्योगिकी-II (रबी फसलें)	2 (1+1)
2.	एपीएच 277	शोभाकारी फसलों, एमएपी और भूदृश्य निर्माण के लिए उत्पादन प्रौद्योगिकी	2 (1+1)
3.	एएई 235	पुनर्नव्य ऊर्जा एवं हरित प्रौद्योगिकी	2 (1+1)

क्र.सं.	पाठ्यक्रम कोड	पाठ्यक्रम का शीर्षक	क्रेडिट घंटे
4.	एपीएस 217	समस्याप्रद मृदाएं एवं उनका प्रबंध	2 (2+0)
5.	एपीएच 278	फल एवं रोपण फसलों के लिए उत्पादन प्रौद्योगिकी	2 (1+1)
6.	एएसटी 241	बीज प्रौद्योगिकी के सिद्धांत	3 (1+2)
7.	एपीए 206	फार्मिंग प्रणाली एवं टिकाऊ कृषि	1 (1+0)
8.	एईसी 227	कृषि विपणन व्यापार एवं मूल्य	3 (2+1)
9.	एपीए 207	परिचयात्मक कृषि-मौसम विज्ञान एवं जलवायु परिवर्तन	2 (1+1)
10.		वैकल्पिक पाठ्यक्रम	3 credit
11.	एएनसी 266	शैक्षणिक भ्रमण	2 (0+2)
12.	एएनसी 267	एनएसएस/एनसीसी/शारीरिक शिक्षा तथा योगाभ्यास	2 (0+2)

वैकल्पिक पाठ्यक्रम

क्र.सं.	पाठ्यक्रम कोड	पाठ्यक्रम का शीर्षक	क्रेडिट घंटे
1.	एईएस 293	वाणिज्यिक पादप प्रजनन	3 (1+2)
2.	एईएस 294	भूदृश्य निर्माण	3 (2+1)
3.	एईएस 296	जैव-नाशकजीवनाशी एवं जैव-उर्वरक	3 (2+1)
4.	एईएस 391	सुरक्षित खेती	3 (2+1)
5.	एईएस 392	सूक्ष्म प्रवर्धन की प्रौद्योगिकियां	3 (1+2)
6.	एईएस 393	उच्च तकनीक बागवानी	3 (2+1)
7.	एईएस 394	खरपरतवार प्रबंध	3 (2+1)

बी.एससी. (ऑनर्स) कृषि तृतीय वर्ष

V. सेमिस्टर

क्र.सं.	पाठ्यक्रम कोड	पाठ्यक्रम का शीर्षक	क्रेडिट घंटे
1.	एईसी 326	कृषि व्यापार प्रबंधन के मूल तत्व	2 (1+1)
2.	एपीए 301	फील्ड फसलें I (खरीफ)	3 (2+1)
3.	एपीपी 336	बागवानी फसलों के रोग एवं उनका प्रबंधन	3 (2+1)
4.	एपीई 321	फसल नाशकजीव एवं भंडारित अनाज के नाशकजीव एवं उनका प्रबंधन	3 (2+1)

क्र.सं.	पाठ्यक्रम कोड	पाठ्यक्रम का शीर्षक	क्रेडिट घंटे
5.	एएसी 346	ग्रामीण समाज शास्त्र एवं शैक्षणिक मनोविज्ञान के मूल तत्व	2 (2+0)
6.	एजीपी 311	पादप जैवप्रौद्योगिकी के सिद्धांत	3 (2+1)
7.	एपीए 302	फार्मिंग प्रणालियां एवं टिकाऊ कृषि	2 (1+1)
8.	एपीएच 331	फलों एवं सब्जियों का सस्योत्तर प्रबंधन एवं मूल्यवर्धन	2 (1+1)

VI. सेमिस्टर

क्र.सं.	पाठ्यक्रम कोड	पाठ्यक्रम का शीर्षक	क्रेडिट घंटे
1.	एईसी 327	उत्पादन अर्थशास्त्र एवं फार्म प्रबंधन	2 (1+1)
2.	एएसी 347	कृषि प्रौद्योगिकी के हस्तांतरण हेतु विस्तार की विधियां	2 (1+1)
3.	एबीबी 351	जैव रसायनविज्ञान	3 (2+1)
4.	एएसी 348	उद्यमशीलता विकास एवं संचार कौशल	2 (1+1)
5.	एपीए 303	खेत फसलें - II सेमिस्टर (रबी)	3 (2+1)
6.	एफएचएल 341	अंग्रेजी में बोधगम्यता एवं संचार कौशल	2 (1+1)
7.	एफईएस 371	पर्यावरण विज्ञान	2 (1+1)
8.	एपीए 304	खरपतवार प्रबंधन	2 (1+1)
9.	एएई 331	पुनर्नव्य ऊर्जा	2 (1+1)

VII. सेमिस्टर (आरएडब्ल्यूई): 20 क्रेडिट घंटे

बी.एससी. (ऑनर्स) कृषि के अंतिम वर्ष के छात्रों को 7वें सेमिस्टर के दौरान 20 क्रेडिट घंटों का आरएडब्ल्यूई कार्यक्रम प्रदान किया गया। कार्यक्रम के एक अंग के रूप में छात्रों को ग्रामीण स्थितियों, किसानों द्वारा अपनाई गई कृषि प्रौद्योगिकी स्थितियों, किसानों की समस्याओं के प्राथमिकीकरण तथा किसान परिवारों के साथ कार्य करने हेतु कौशल तथा सही प्रवृत्ति विकसित करने के लिए व्यक्तिगत किसान परिवारों के साथ सम्बद्ध किया गया ताकि वे ग्रामीण क्षेत्रों के सम्पूर्ण विकास का व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त कर सकें। बाद में उन्हें औद्योगिक प्रशिक्षणार्थी के रूप में वन-वर्धन उद्योग का भ्रमण भी कराया गया।

VIII. सेमिस्टर (प्रयोगात्मक शिक्षा): 20 क्रेडिट घंटे

बी.एससी. (ऑनर्स) कृषि के अंतिम वर्ष के छात्रों में अति उच्च कौशल युक्त व्यावसायिकता विकसित करने के प्राथमिक उद्देश्य से उन्हें प्रयोगात्मक शिक्षण प्रदान किया गया ताकि वे अपने स्वयं के उद्यम स्थापित कर सकें। निम्नलिखित उद्यम अपनाने पर विशेष बल दिया गया:

खुम्बी की खेती में प्रयोगात्मक शिक्षा कार्यक्रम

अंतिम वर्ष के छात्रों को प्रयोगात्मक शिक्षा कार्यक्रम (ईएलपी) के अंतर्गत प्रशिक्षण दिया गया, ताकि वे खुम्बी पर आधारित उद्यम स्थापित करने के लिए न केवल प्रत्यक्ष विशेषज्ञता प्राप्त कर सकें बल्कि उनमें आत्मविश्वास का संचार भी हो सके। प्रशिक्षणार्थी छात्रों को खुम्बी की खेती की विधि तथा प्रक्रियाओं के बारे में भली-भांति प्रशिक्षित किया गया जिसमें माध्यम तैयार करना, ऊतक संवर्धन, खुम्बी बीज तैयार करना, खुम्बी उपज प्राप्त करना और इस उपज की बाजार में बिक्री जैसे पहलू शामिल थे।

सस्योत्तर प्रौद्योगिकी में प्रयोगात्मक शिक्षा

इस कार्यक्रम के अंतर्गत बी.एससी. (कृषि) के अंतिम वर्ष के छात्रों ने आय सृजन हेतु विभिन्न उत्पाद तैयार किए तथा उन्हें वाणिज्यिक स्तर पर बेचा। मानकीकृत एवं आर्थिक रूप से व्यावहारिक विभिन्न उत्पादों में तत्काल भोज्य आलू का कस्टर्ड, तत्काल भोज्य आलू का हलुआ मिक्स, नींबू का जड़ी-बूटी युक्त पाचक, चुकंदर का पाचक, रेशायुक्त आम स्क्वैश, किन्नो-नींबू स्क्वैश, अचार, जैम, बेल के उत्पाद आदि शामिल थे। इन उत्पादों का लाभ:लागत अनुपात ज्ञात किया गया जो निम्नानुसार है:

उत्पाद का नाम	लाभ : लागत अनुपात
मिश्रित फलों का जैम	2.5:1
लहसुन का अचार	2:1
मिर्च का अचार	2.6:1
गाजर का अचार	3:1
चुकंदर का पाचक	1.4:1
नींबू का पाचक	3.5:1
किन्नो-नींबू स्क्वैश	3:1
आम का स्क्वैश	3:1

ऑयस्टर की उपज

बिक्री के लिए तैयार ऑयस्टर

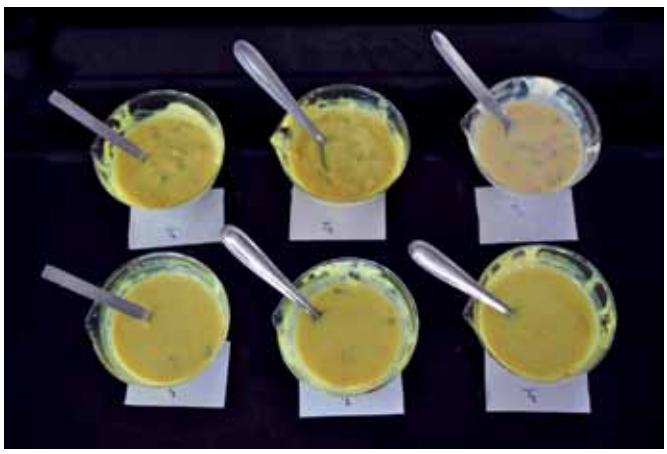

क. तत्काल भोज्य आलू का कस्टर्ड (विभिन्न उपचारों का)।

ख. रेशा युक्त आम का स्क्वैश

ग. नींबू जड़ी-बूटी पाचक

घ. एंथोसियानिन से समृद्ध सूखे हुए अंजीर

ड़. मिर्च का अचार (जो जैम जैसा लगता है)

बी.एससी. (ऑनर्स) वानिकी प्रथम वर्ष

I. सेमिस्टर

क्र.सं.	पाठ्यक्रम कोड	पाठ्यक्रम का शीर्षक	क्रेडिट घंटे
1.	एफएनआर 117	भूगर्भ विज्ञान एवं मृदाएं	3 (2+1)
2.	एफएनआर 116	सस्यविज्ञान एवं बागवानी का परिचय	3 (2+1)
3.	एफबीएस 143	पादप जैव रसायन विज्ञान	2 (1+1)
4.	एफएसए 102	वृक्ष-विज्ञान	3 (2+1)
5.	एफबीएस 145	मौलिक गणित	2 (2+0)
6.	एफएसए 101	वानिकी का परिचय	2 (2+0)
7.	एफबीएस 142	संचार कौशल एवं व्यक्तित्व विकास	2 (1+1)
8.	एफबीएस 144	वन वनस्पति विज्ञान	2 (1+1*)

क्र.सं.	पाठ्यक्रम कोड	पाठ्यक्रम का शीर्षक	क्रेडिट घंटे
9.	एफबीएस 141	सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी	2 (1+1)
10.	एफबीएस 146	शारीरिक शिक्षा-II	1 (0+1)
11.	एफबीएस 147	एनएसएस	1 (0+1)

II. सेमिस्टर

क्र.सं.	पाठ्यक्रम कोड	पाठ्यक्रम का शीर्षक	क्रेडिट घंटे
1.	एफबीटी 111	पादप कार्यिकी	3 (2+1)
2.	एफबीटी 112	पादप कोशिका विज्ञान एवं आनुवंशिकी	2 (1+1)
3.	एफएसए 103	वन वर्धन के सिद्धांत एवं व्यवहार	3 (2+1)
4.	एफपीयू 126	काष्ठ आकृतिविज्ञान	3 (2+1)
5.	एफडब्ल्यूएम 136	वन्य जीवन जीवविज्ञान	3 (2+1)
6.	एफएनआर 118	वन सुरक्षा	3 (2+1)
7.	एफबीएस 148	सांख्यिकीय विधियां एवं प्रयोगात्मक डिजाइन	3 (2+1)
8.	एफबीएस 149	भौतिक शिक्षा-II	1 (0+1)
9.	एफबीएस 150	एनएसएस-II	1 (0+1)

बी.एससी. (ऑनर्स) वानिकी द्वितीय वर्ष

III. सेमिस्टर

क्र.सं.	पाठ्यक्रम कोड	पाठ्यक्रम का शीर्षक	क्रेडिट घंटे
1.	एफबीटी 211	वृक्ष सुधार	3 (2+1)
2.	एफएनआर 219	वन पारिस्थितिकी एवं जैवविविधता	3 (2+1)
3.	एफएनआर 217	वन सर्वेक्षण एवं अभियांत्रिकी	3 (2+1)
4.	एफएनआर 216	पर्यावरणीय अध्ययन एवं आपदा प्रबंधन	3 (2+1)
5.	एफएनआर 218	मृदा जीवविज्ञान एवं उर्वरता	3 (2+1)
6.	एफएसए 201	कृषि वानिकी के सिद्धांत	3 (2+1)
7.	एफएसए 202	वन परिमाण	3 (2+1)
8.	एफबीएस 241	शारीरिक शिक्षा-III	1 (0+1)
9.	एफबीएस 247	एनएसएस	1 (0+1)

IV. सेमिस्टर

क्र.सं.	पाठ्यक्रम कोड	पाठ्यक्रम का शीर्षक	क्रेडिट घंटे
1.	एफएसए 203	वन प्रबंधन	3 (2+1)
2.	एफएसए 204	भारतीय वृक्षों का वन वर्धन	3 (2+1)
3.	एफपीयू 226	काष्ठ उत्पाद एवं उपयोग	3 (2+1)
4.	एफपीयू 227	मानव वनस्पतिविज्ञान, औषधीय एवं सगंधीय पौधो	3 (2+1)
5.	एफडब्ल्यूएम 236	पक्षी विज्ञान एवं सरीसृप विज्ञान	3 (2+1)
6.	एफबीटी 212	बीज प्रौद्योगिकी एवं पौधाशाला प्रबंधन	3 (2+1)
7.	एफएनआर 220	वनभूमि एवं पशुधान प्रबंधन	2 (1+1)
8.	एफबीएस 243	वन आदिमजाति विज्ञान एवं मानवविज्ञान	2 (2+0)
9.	एफबीएस 244	राज्य वन का अधययन भ्रमण	1 (0+1)
10.	एफबीएस 247	एनएसएस-III	1 (0+1)

बी.एससी. (ऑनर्स) बागवानी प्रथम वर्ष

I. सेमिस्टर

क्र.सं.	पाठ्यक्रम कोड	पाठ्यक्रम का शीर्षक	क्रेडिट घंटे
1.	एचएफएस 101	बागवानी के मूल तत्व	3 (2+1)
2.	एचएसएस 166	अर्थशास्त्र एवं विपणन	3 (2+1)
3.	एबीबी 159	प्राथमिक पादप जैव रसायनविज्ञान	2 (1+1)
4.	एबीबी 158	प्राथमिक सांख्यिकी एवं कम्प्यूटर अनुप्रयोग	3 (2+1)
5.	एचएफएस 102	आनुवंशिकी एवं कोशिका आनुवंशिकी का सिद्धांत	3 (2+1)
6.	एचएनआर 131	मृदा विज्ञान के मूल तत्व	2 (1+1)
7.	एबीबी 160	परिचयात्मक फसल कार्यिकी	2 (1+1)
8.	एचएफएल 121	भूदृश्य वास्तुशास्त्र के सिद्धांत	2 (1+1)
9.	एबीबी 161	परिचयात्मक सूक्ष्मजीवविज्ञान	2 (1+1)
10.	एफबीएस 142	संचार कौशल एवं व्यक्तित्व विकास	2 (1+1)
11.	एचएसएस 167	एनएसएस	1 (0+1)

II. सेमिस्टर

क्र.सं.	पाठ्यक्रम कोड	पाठ्यक्रम का शीर्षक	क्रेडिट घंटे
1.	एचएफएस 104	उष्ण कटिबंधीय एवं उपोष्ण फल	3 (2+1)
2.	एचवीएस 101	उष्ण कटिबंधीय एवं उपोष्ण सब्जियां	3 (2+1)
3.	एचएफएस 105	पादप प्रजनन के सिद्धांत	3 (2+1)
4.	एचएनआर 132	मृदा उर्वरता एवं पोषण प्रबंधन	2 (1+1)
5.	एचएनआर 134	बागवानी फसलों में जल प्रबंधन	2 (1+1)
6.	एचएफएस 103	पादप प्रवर्धन एवं पौधाशाला प्रबंधन	2 (1+1)
7.	एचएनआर 133	पर्यावरणीय अध्ययन एवं आपदा प्रबंधन	3 (2+1)
8.	एबीबी 162	बागवानी फसलों की वृद्धि एवं विकास	2 (1+1)
9.	एचएसएस 170	शारीरिक एवं स्वास्थ्य शिक्षा	1 (0+1)
10.	एचएसएस 169	सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी	2 (1+1)
11.	एचएसएस 167	एनएसएस	1 (0+1)

बी.एससी. (ऑनर्स) बागवानी द्वितीय वर्ष

III. सेमिस्टर

क्र.सं.	पाठ्यक्रम कोड	पाठ्यक्रम का शीर्षक	क्रेडिट घंटे
1.	एचवीएस 201	शीतोष्ण सब्जी फसलें	2 (1+1)
2.	एचएफएस 201	शीतोष्ण फल फसलें	2 (1+1)
3.	एचपीपी 226	पादप रोगविज्ञान के मूल तत्व	3 (2+1)
4.	एचपीपी 227	फल, रोपण, औषधीय एवं सगंधीय फसलों के रोग	3 (2+1)
5.	एबीबी 255	प्राथमिक पादप जैवप्रौद्योगिकी	2 (1+1)
6.	एचएएस 202	बागवानी फसलों में खरपतवार प्रबंधन	2 (1+1)
7.	एचपीपी 228	कीटविज्ञान के मूल तत्व	3 (2+1)
8.	एचएफएल 221	वाणिज्यिक पुष्प विज्ञान	3 (2+1)
9.	एचपीएच 216	खाद्य प्रौद्योगिकी के मूल तत्व	2 (1+1)
10.	एचपीपी 229	बागवानी फसलों के सूत्रकृमि नाशकजीव एवं उनका प्रबंधन	2 (1+1)
11.	एचएसएस 267	एनएसएस	1 (0+1)

IV. सेमिस्टर

क्र.सं.	पाठ्यक्रम कोड	पाठ्यक्रम का शीर्षक	क्रेडिट घंटे
1.	एचएनआर 231	मृदा, जल एवं पादप विश्लेषण	2 (1+1)
2.	एचवीएस 202	मसाले और कांडीमेंट	3 (2+1)
3.	एचएफएल 222	शोभाकारी बागवानी	3 (2+1)
4.	एचएफएस 203	रोपण फसलें	3 (2+1)
5.	एचएफएस 204	फल एवं रोपण फसलों का प्रजनन	3 (2+1)
6.	एचएनआर 232	फार्म शक्ति एवं यंत्र	2 (1+1)
7.	एचपीपी 230	फल, रोपण, औषधीय एवं सगंधीय फसलों के कीट नाशकजीव	3 (2+1)
8.	एचवीएस 203	परिशुद्ध खेती तथा सुरक्षित कृषि	3 (2+1)
9.	एचएफएस 205	शुष्क भूमि बागवानी	2 (1+1)
10.	एचएसएस 267	राष्ट्रीय सेवा योजना/राष्ट्रीय कैडिट कोर	1 (0+1)

6. एआईसीआरपी - चना उप केन्द्र

अनुसंधान के तकनीकी कार्यक्रम में भा.कृ.अ.प. - एआईसीआरपी चना कार्यक्रम के अंतर्गत प्रजनन, रोग प्रतिरोध, बीजोत्पादन, अंतरफसलन तथा पोषक तत्व और जल प्रबंधन के बहु-आयामी दृष्टिकोण के साथ बुंदेलखंड क्षेत्र में चने का उत्पादन बढ़ाने का कार्य जारी रहा। वर्ष 2017-18 के दौरान रबी मौसम में चने पर निम्नलिखित समन्वित परीक्षण किए गए:

6.1 पादप प्रजनन

विश्वविद्यालय फार्म पर चना पादप प्रजनन के उपज संबंधी परीक्षणों के लिए 266 प्रविष्टियों का मूल्यांकन किया गया।

क्र. सं.	परीक्षण	प्रविष्टियों की सं.
क.	**भा.कृ.अ.प.-एआईसीआरपी चना**	
1.	आईवीटी बारानी	33
2.	एवीटी 1 बारानी	04
3.	आईवीटी (काबुली + ईएलएस काबुली)	26
4	एवीटी 1 (देसी सिंचित समय पर बोई गई)	04
5	एवीटी (देसी सिंचित समय पर बोई गई)	45
ख.	**'इकार्डा' चना अंतरराष्ट्रीय पौधशालाएं**	
1	एफएलआरपी - सीआईईएन - एलएस-2018 (बड़े बीज वाली)	36
2	एफएलआरपी - सीआईईएन - एस-2018 (वसंत)	36
3	एफएलआरपी - सीआईडीटीएन-एस-2017 (सूखा)	42
ग.	**'इक्रीसेट' - चना**	
1	आईसीवीटी - काबुली	20
2	आईसीवीटी - देसी	20

- निम्नलिखित केन्द्र परीक्षण किए गए:

क) आनुवंशिकी संभाग, भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली के सहयोग से F_5 और

F_6 पीढ़ियों में प्रगत वंशक्रमों के साथ चने पर दो केन्द्र परीक्षण किए जा रहे हैं।

ख) आर.ए.के. कृषि महाविद्यालय (सेहोर), राजमाता विजयराजे सिंधिया कृषि विश्वविद्यालय, ग्वालियर के सहयोग से F_7 पीढ़ी में प्रगत वंशक्रमों के साथ चने का एक केन्द्र परीक्षण किया जा रहा है।

ग) जवाहर लाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय, जबलपुर के सहयोग से प्रगत वंशक्रमों के साथ चने का एक केन्द्र परीक्षण किया जा रहा है।

- **संकरीकरण कार्यक्रम:** उपज के लिए विविधता, अपने घटक परीक्षणों तथा मुख्य रोगों के विरुद्ध प्रतिरोध से युक्त प्रजनन सामग्री सृजित करने के लिए 44 ताजे संकर तैयार करने के सफल प्रयास किए गए।

क्र.सं.	संकर
1.	आईसी-44226 × बीजी 362
2.	आईसी- 223011 × बीजी 362
3.	आईसी 555039 × बीजी 362
4.	डब्ल्यूसीजी 95-50 × पूसा 249
5.	दिग्विजय × आरएसजी 4
6.	बीजी 1003 × डब्ल्यूसीजी 1
7.	बीजी 362 × बीजी 391
8.	बीजीडी 112 × पूसा 372
9.	बीजी 118 × जेजी 11
10.	जेजी 11 × बीजी 362
11.	आरएसजी 902 × सीएसजी 8962
12.	बीजी 1053 × पीबीजी 1
13.	उज्ज्वल × बीजी 1053
14.	आरएसजी 902 × सीएसजी 8962
15.	पूसा 372 × आईसीसीवी 92844
16.	बीजी 118 × जेजी 11
17.	दिग्विजय × आरएसजी 4
18.	जेजी × बीजीएम 547
19.	बीजी 1003 × डब्ल्यूसीजी 1
20.	पूसा 212 × जीएनजी 1958
21.	आईसी 223011 × बीजी 362
22.	अन्नीगेरी × डब्ल्यूसीजी 95-50
23.	आईसी 83386 × एसटी पीवाईटी 2-30
24.	इकार्डा-एलएस 115 × उज्ज्वल
25.	इकार्डा डीटी -126 × डब्ल्यूसीजी 2
26.	आईसी 450005 × एसटी पीवाईटी-2-30
27.	आईसी 75501 × बीजी 1053
28.	आईसी 27231 × आईसी 44221
29.	आईसी 590013 × आईसी 44226
30.	इकार्डा एलएस-128 × बीजी 1053
31.	आईसी 55085 × बीजीडी 72
32.	इकार्डा डीटी-119 × डब्ल्यूसीजी 2
33.	इकार्डा-एस-116 × उज्ज्वल
34.	आईसी 75501 × बीजी 1053
35.	आईसी 261136 × बीजी 362
36.	इकार्डा एलएस 133 × बीजीडी 72
37.	आईसी 118592 × बीजीडी 72
38.	आईसी 590013 × आईसी 44226
39.	आईसी 555039 × बीजी 362
40.	इकार्डा डीटी-129 × डब्ल्यूसीजी 2
41.	इकार्डा एलएस-115 × उज्ज्वल
42.	आईसी 44226 × बीजी 362
43.	आईसी 261136 × बीजी 362
44.	इकार्डा एलएस-118 × उज्ज्वल

- **प्रजनन सामग्री की स्थिति:** निम्न प्रजनन सामग्री को अगली पीढ़ी में मूल्यांकन, चयन व आगे बढ़ाने के लिए विभिन्न पीढ़ियों में उगाया गया:

पीढ़ी	संकरों की संख्या	एसपीएस	विपुल
F_1	21	21	-
F_4	6	6	6
शटल प्रजनन/F_7	47	41	-
शटल प्रजनन/F_6	23	8	10

- **उपज परीक्षण/केन्द्र परीक्षण:** विश्वविद्यालय द्वारा विभिन्न उपज परीक्षणों/केन्द्र परीक्षणों में उपज (कि.ग्रा./है) के लिए किए गए परीक्षणों के संदर्भ में आशाजनक प्रविष्टियों का संक्षिप्त विवरण नीचे दिया गया है:

परीक्षण	प्रविष्टियों की संख्या	उपज सहित आशाजनक प्रविष्टियां (कि.ग्रा./है.)
आईसीवीटी-देसी	20	आईसीसीवी 171114(2357 कि.ग्रा./है.), आईसीसीवी 171106 (2190 कि.ग्रा./है.)
आईसीवीटी-काबुली	20	आईसीसीवी 171314(1429 कि.ग्रा./है.), आईसीसीवी 171311 (1381 कि.ग्रा./है.)
'इकार्डा'-एफएलआरपी-सीआईईएन- एलएस	36	एफएलआईपी 10-266सी (1746 कि.ग्रा./है.)
'इकार्डा'-एफएलआरपी-सीआईईएन- एस	36	एफएलआईपी 10-234सी (1603 कि.ग्रा./है.)
'इकार्डा'-एफएलआरपी-सीआईडीटीएन	42	एफएलआईपी 10-186सी (1708 कि.ग्रा./है.), एफएलआईपी 10-120सी (1667 कि.ग्रा./है.), एफएलआईपी 10-19सी (1639 कि.ग्रा./है.), एफएलआईपी-10-24सी (1611 कि.ग्रा./है.)
एसटी-1	24	बीजीएम 1040 (2111I कि.ग्रा./है.), बीजीएम 1036 (2083 कि.ग्रा./है.), बीजीएम 1042 (2083 कि.ग्रा./है.), बीजीएम 1037 (1805 कि.ग्रा./है.)
एसटी-2	26	एफ-6-378 (3667 कि.ग्रा./है.), एफ 6-63 (3167 कि.ग्रा./है.), एफ 6-67 (3056 कि.ग्रा./है.), एसटी-पीवाईटी-2 (30) (3000 कि.ग्रा./है.), एफ-6-18(2944 कि.ग्रा./है.)
एसटी-3	6	एफ4-जेजी 2017-6 (1857 कि.ग्रा./है.), एफ 4-जेजी 2017-2 (1849 कि.ग्रा./है.), जेजी 2017-3 (1698 कि.ग्रा./है.), जेजी 2017-4 (1611 कि.ग्रा./है.)

- **पादप आनुवंशिक संसाधान:** वर्ष 2015-16 और 2016-17 में एनबीपीजीआर, नई दिल्ली से प्राप्त की गई चने की लगभग 160 जननद्रव्य प्रविष्टियों का एक संकलन उगाया गया तथा उसका अनुरक्षण किया गया। इन प्रविष्टियों का तीन सूक्ष्म-पर्यावरणों नामत: समय पर बुवाई (11.11.2017), मध्यम पछेती बुवाई (03-12-2017) और पछेती बुवाई

(22-12-2017) के अंतर्गत वर्ष 2017-18 में मूल्यांकन किया गया। इन्हें उर्वरकों की अनुशंसित खुराकों का उपयोग करते हुए उगाया गया था। बुवाई की तीन भिन्न तिथियों में रोग, कीट अंतरक्रियाओं और जीनप्ररूपी निष्पादन की प्रवृत्तियों पर पर्यावरणीय बलों के प्रभाव के मूल्यांकन हेतु एक अध्ययन किया गया।

- **एआईसीआरपी-चना आईवीटी परीक्षण में प्रस्तुत नई प्रविष्टियां**

काबुली

देसी

काबुली चने की नई प्रविष्टियों, नामत: **आरएलबीजीके-1** और **आरएलबीजीके-2** व देसी प्रविष्टियों, **आरएलबीजी-1 और आरएलबीजी-2** को रबी 2017-18 के दौरान उपज में योगदान देने वाले गुणों के संदर्भ में अंचलवार छंटाई हेतु एआईसीआरपी-चना आईवीटी परीक्षण काबुली और देसी में प्रस्तुत किया गया। इन प्रविष्टियों की रोग/नाशकजीव सहिष्णुता तथा विभिन्न रोगों के प्रति संवेदनशीलता सूचकांक के लिए भी छंटाई की जाएगी।

- **भा.कृ.अ.प.-एआईसीआरपी-चना आईवीटी परीक्षण में प्रस्तुत प्रविष्टियां**

अनुशंसित कवकनाशियों के उपचार के पश्चात् रबी मौसम के दौरान प्रदर्शन प्लाटों (काबुली

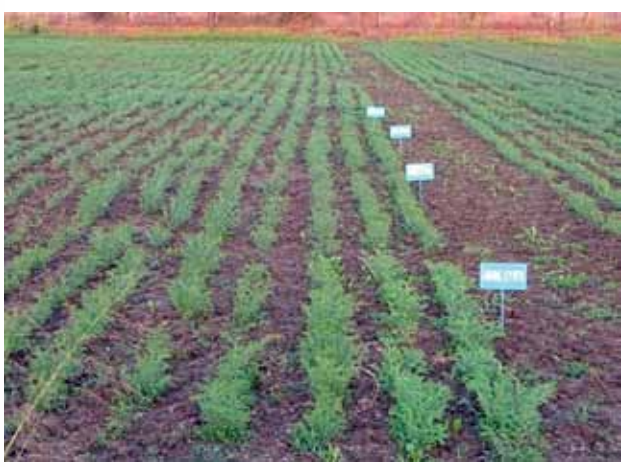

विश्वविद्यालय फार्म क्षेत्र में उगाए गए तथा मूल्यांकित प्रगत प्रजनन वंशक्रम तथा विसंयोजनशील समष्टियां

28.8 मी.^{2} तथा देसी 19.2 मी.^{2}) में बुंदेलखंड क्षेत्र के लिए चने की किस्मों का जैविक तथा अजैविक प्रतिकूल स्थितियों के प्रति सहिष्णुता तथा प्रतिरोध के लिए इनके निष्पादन का मूल्यांकन किया गया।

रबी 2017-18 के दौरान प्रदर्शन प्लाटों (अ-प्रतिकृत) में चने की किस्मों का निष्पादन

क्र. सं.	किस्में/जीनप्ररूप	उपज (क्विंटल/है.)	परिपक्वता (दिनों में)	बीज का आकार (ग्रा/100 बीज)	टिप्पणी
काबुली चना					
1.	बीजी 1053	25.00	122	24.90	बारानी, सिंचित, मुर्झान के प्रति सहिष्णु, मृदा जनित रोगों के विरुद्ध प्रतिरोधी, एनडब्ल्यूपीजैड, सीजैड
2.	उज्ज्वल (आईपीसीके 2004-29)	19.72	126	23.06	मुर्झान के प्रति मध्यम प्रतिरोधी तथा बीजीएम के प्रति सहिष्णु, फसल की अंतिम अवस्था में नमी की कमी तथा तेज गर्मी से बच जाती है, सीजैड
3.	बीजी 1003	17.60	132	28.46	मुर्झान के प्रति सहिष्णु, एनईपीजैड
4.	बीजी 1108	20.42	120	23.33	समय पर बुवाई, सिंचित, पकाने की दृष्टि से श्रेष्ठ गुणवत्ता युक्त, मृदा जनित रोगों के विरुद्ध प्रतिरोधी
5.	पूसा 2024	20.00	120	22.78	बारानी, सिंचित, मृदा जनित रोगों तथा फली बेधक के विरुद्ध मध्यम सहिष्णु
6.	पूसा 5023 (पूसा शक्तिमान)	23.61	130	31.67	फ्यूजेरियम मुर्झान, शुष्क जड़ सड़न के विरुद्ध मध्यम प्रतिरोध तथा प्रतिरोध से युक्त, पकाने की दृष्टि से श्रेष्ठ गुणवत्ता युक्त
देसी चना					
7.	पूसा 212	20.07	122	22.813	मुर्झान प्रतिरोधी, सी जैड
8.	दिग्विजय	22.92	117	21.285	बारानी, मुर्झान प्रतिरोधी
9.	पूसा 244	22.92	129	15.273	मुर्झान तथा स्टंट प्रतिरोधी, सीजैड
10.	आरएसजी-44	19.27	125	12.619	सूखा तथा पाले के प्रति सहिष्णु
11.	बीजी-5028 (पूसा भीम)	27.60	125	21.085	अत्यधिक बड़े बीज, मुर्झान के विरुद्ध मध्यम प्रतिरोधी
12.	बीजीडी 72	27.08	125	23.979	मुर्झान तथा जड़ सड़न के विरुद्ध प्रतिरोधी, बड़े बीज वाली, सीजैड
13.	डब्ल्यूसीजी-1 (सदभावना)	29.17	129	19.274	शुष्क जड़ सड़न के विरुद्ध मध्यम प्रतिरोधी, उत्तर प्रदेश

क्र. सं.	किस्में/जीनप्ररूप	उपज (क्विंटल/है.)	परिपक्वता (दिनों में)	बीज का आकार (ग्रा/100 बीज)	टिप्पणी
14.	जेएकेआई 9218	20.50	129	15.341	"यूजेरियम मुर्झान, जड़ सड़न और स्कंध सड़न के विरुद्ध प्रतिरोधी, बारानी
15.	बीजी-.391	35.42	129	23.434	मुर्झान तथा जड़ सड़न के विरुद्ध मध्यम प्रतिरोधी, बड़े बीज वाली, सीधो पौधों वाली, सीजैड
16.	बीजी-362	35.06	129	24.789	मुर्झान के प्रति सहिष्णु, बड़े बीज वाली, एनडब्ल्यूपीजैड
17.	जेजी 11	29.17	129	21.415	मुर्झान के विरुद्ध प्रतिरोधी, जड़ सड़न के विरुद्ध मध्यम प्रतिरोधी, बड़े बीज वाली, एसजैड
18.	सीएसजी 8962 (करनाल चना 1)	20.63	132	12.228	लवण सहिष्णु, मुर्झान के विरुद्ध प्रतिरोधी
19.	आरएसजी 902 (अरूणा)	20.73	129	26.051	शुष्क जड़ सड़न, मुर्झान, फली बेधक के विरुद्ध मध्यम प्रतिरोधी
20.	फुल्ले जी-5 (विश्वास)	21.77	122	18.554	सिंचित, सीजैड
21.	आईसीसीवी 92944	22.13	122	19.803	बारानी, गर्मी को सह सकने वाली
22.	पूसा -372	26.04	126	26	मुर्झान, झुलसा तथा जड़ सड़न के विरुद्ध मध्यम प्रतिरोधी, छोटे बीज वाली, एनईपीजैड, एनडब्ल्यूपीजैड, सीजैड
23.	बीजीडी 112	17.19	137	16.34	गहरे हरे रंग की पत्तियां
24.	पूसा 547	24.48	121	22.86	सिंचित, मुर्झान, जड़ सड़न, स्टंट रोगों तथा फली बेधक कीट के विरुद्ध सहिष्णु, एनडब्ल्यूपीजैड
25.	जीएनजी 1958	15.63	130	27.24	सिंचित, एनडब्ल्यूपीजैड
26.	पीवीजी 1	10.94	129	15.1	एस्कोकाइटा झुलसा के विरुद्ध प्रतिरोधी, एनडब्ल्यूपीजैड
27.	डब्ल्यूसीजी 2 (सूर्या)	23.96	130	13.412	जड़ सड़न के विरुद्ध प्रतिरोधी, स्टंट तथा शुष्क जड़ सड़न के प्रति सहिष्णु, उत्तर प्रदेश
28.	बीजी 1103	28.65	127	22.524	मुर्झान, जड़ सड़न, ब्रूकिड के विरुद्ध प्रतिरोधी, पछेती बुवाई के लिए उपयुक्त
29.	डब्ल्यूसीजी 95-50	24.48	117	18.56	मुर्झान तथा तना सड़न के विरुद्ध प्रतिरोधी
30.	अन्नीगेरी	25.00	119	17.172	बारानी, एसजैड
31.	जेजी 315	31.25	124	14.859	मुर्झान प्रतिरोधी, सीजैड

क्र. सं.	किस्में/जीनप्ररूप	उपज (क्विंटल/है.)	परिपक्वता (दिनों में)	बीज का आकार (ग्रा/100 बीज)	टिप्पणी
32.	पीडीजी 4	20.31	127	17.372	अंकुरण के पश्चात् शाकनाशी के प्रति सहिष्णु
33.	आरएसजी 888 (अनुभव)	25.00	120	21.729	बारानी, मुर्झान, जड़ सड़न के विरुद्ध मध्यम प्रतिरोधी, एनडब्ल्यूपीजैड
34.	जेजी 130	20.83	127	12.471	मुर्झान के विरुद्ध प्रतिरोधी, मध्य प्रदेश
35.	पूसा 547	24.68	118	26.955	पछेती बुवाई, सिंचित, मुर्झान, जड़ सड़न, स्टंट रोगों और फली बेधक कीट के प्रति सहिष्णु, एनडब्ल्यूपीजैड
36.	सी-235	20.31	129	12.301	तना सड़न तथा झुलसा के प्रति सहिष्णु, पंजाब और हरियाणा

एनडब्ल्यूपीजैड: उत्तर पश्चिमी मैदानी क्षेत्र, सीजैड : मध्य क्षेत्र, एसजैड: दक्षिणी क्षेत्र, एनडब्ल्यूपीजैड : उत्तर पूर्वी मैदानी क्षेत्र

6.2 पादप रोगविज्ञान

- चने के स्कंधा सड़न रोग के विरुद्ध 214 आईवीटी, एवीटी 1 और एवीटी-2 (देसी, काबुली, बारानी, पछेती बोई गई, एमएच, डीटीआईएल आदि) प्रविष्टियों को गमलों में उगाते हुए मूल्यांकन हेतु लिया गया।

स्कंधा सड़न की गमलों में छंटाई

स्कंधा सड़न रोग

- रोगी प्लाटों में मुर्झान रोग को बढ़ाने के लिए जेजी 62 किस्म की बुवाई पूर्व-रबी मौसम (सितम्बर) में की गई तथा एक माह के बाद मुर्झाए हुए पौधों को मिट्टी में मिलाया गया। चने के भूसे तथा ज्वार के दानों पर प्रगुणन के पश्चात् संरोप भी मिलाया जा रहा है।
- सेहोर केन्द्र तथा 'इक्रीसेट' से प्राप्त विभेदों नामत: सी 104, जेजी 74, सीपीएस 1, बीजी 212, डब्ल्यूआर 315, केडब्ल्भ्यूआर 108, चाफा, एन्नेगिरी, एल 550, डेल्टा और के 850 के सैट को प्रगुणित किया गया।
- वर्ष 2017-18 के दौरान झांसी केन्द्र से विभिन्न केन्द्रों को जेजी-62 का 42 कि.ग्रा. बीज

मुर्झान के प्रकोप को दर्शाते हुए मुर्झान से रोगी प्लांट

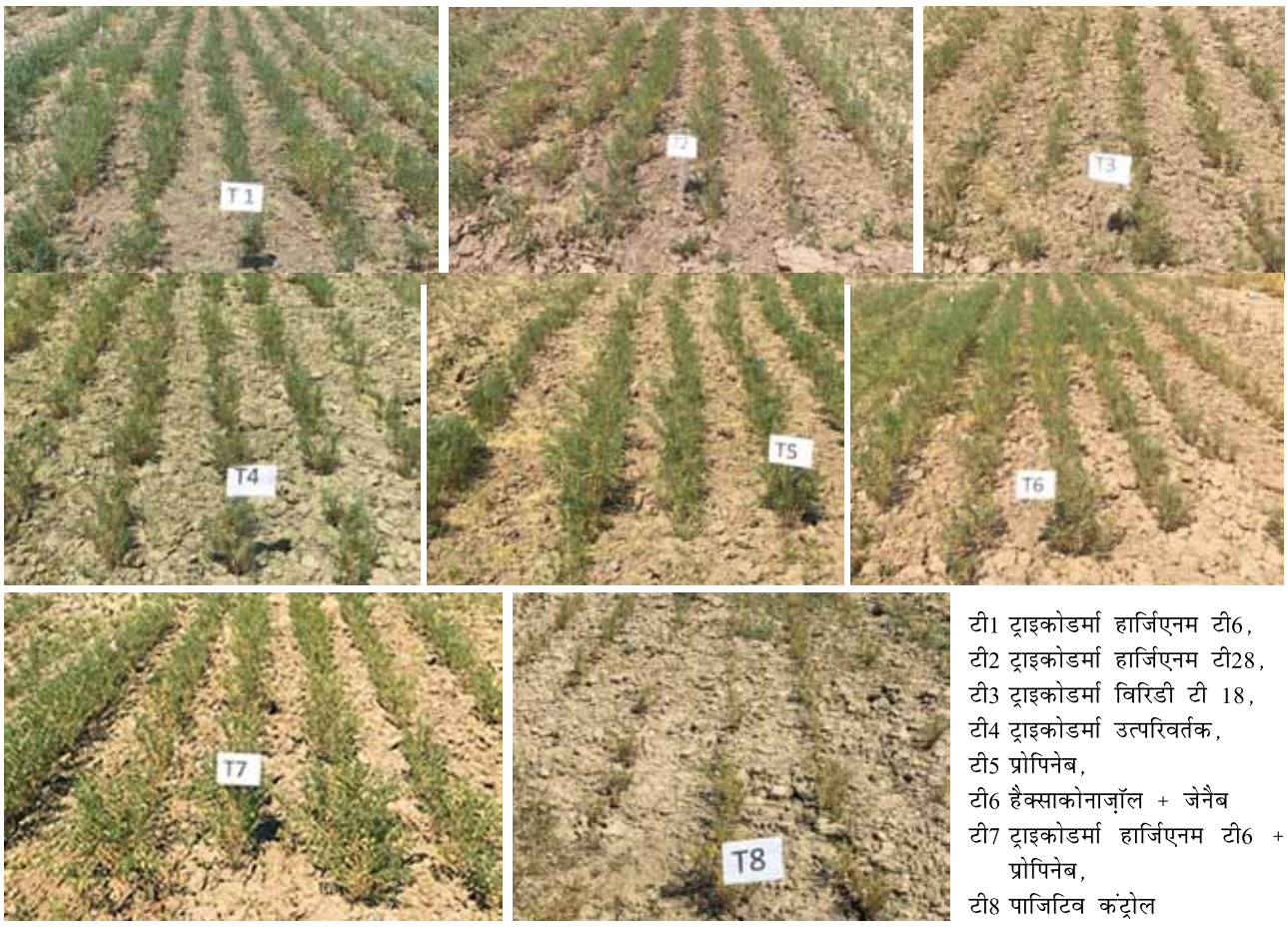

टी1 ट्राइकोडर्मा हार्जिएनम टी6,
टी2 ट्राइकोडर्मा हार्जिएनम टी28,
टी3 ट्राइकोडर्मा विरिडी टी 18,
टी4 ट्राइकोडर्मा उत्परिवर्तक,
टी5 प्रोपिनेब,
टी6 हैक्साकोनाज़ॉल + जेनैब
टी7 ट्राइकोडर्मा हार्जिएनम टी6 + प्रोपिनेब,
टी8 पाजिटिव कंट्रोल

स्कंध सड़न रोग के प्रबंधन के लिए कवकनाशियों के विभिन्न संयोगों से युक्त ट्राइकोडर्मा के नए प्रभेदों के मूल्यांकन पर किए गए प्रयोग के चित्र; टी1 से टी8 उपचार हैं

उपलब्ध कराया गया तथा एआईसीआरपी के विभिन्न केन्द्रों में मुर्झान की छंटाई में तुलनीय के रूप में इस्तेमाल किए जाने के लिए वर्ष 2018 के दौरान जेजी 62 का 100 कि.ग्रा. बीज उत्पन्न किया गया।

- चने के स्कंध सड़न रोग के प्रबंध के लिए कवकनाशियों के विभिन्न संयोगों के साथ ट्राइकोडर्मा के नए प्रभेदों के मूल्यांकन हेतु एक प्रयोग किया गया।

ट्राइकोडर्मा हार्जिएनम टी6 + प्रोपिनेब से उपचारित बीज *स्क्लेरोशियम रॉल्फसी* के विरुद्ध सर्वाधिक प्रभावी पाए गए क्योंकि इस उपचार से पौधों की संख्या और उपचारित चने की उपज में सुधार होता है, तथापि इस अध्ययन का अगले 2 से 3 फसल मौसमों में बड़े खेतों में और अधिक मूल्यांकन किए जाने की आवश्यकता है।

- **झांसी क्षेत्र में चने के उभरते हुए रोग**

क) पिछले मौसम में हुए लगभग 10 प्रतिशत प्रकोप की तुलना में चना के स्टंट विषाणु का 15 प्रतिशत तक प्रकोप रिकॉर्ड किया गया। इस संक्रमण की पुष्टि विषाणु के क्लोनीकरण और अनुक्रमण के द्वारा की गई। विषाणु से संक्रमित प्लाटों में उपज की 20 से 35 प्रतिशत तक हानि रिकॉर्ड की गई। तद्नुसार चना के स्टंट रोग के प्राइमरों को आंशिक कवच प्रोटीन क्षेत्र के लिए निर्धारित किया गया तथा विषाणु को विलगित करने व उसका लक्षण-वर्णन करने का प्रयास किया गया। पीसीआर तथा अनुक्रम से विषाणु की उपस्थिति की पुष्टि हुई। विषाणु से संक्रमित चने के सम्पूर्ण जीनोम का लक्षण-वर्णन करने के प्रयास किए जा रहे हैं।

ख) झांसी क्षेत्र में एस्कोकाइटा झुलसा के पिछले वर्ष हुए 5-7 प्रतिशत प्रकोप की तुलना में इस वर्ष 10-15 प्रतिशत तक प्रकोप रिकॉर्ड किया गया। इस कवक को विलगित किया गया है तथा इसके लक्षण-वर्णन का कार्य प्रगति पर है।

चने का स्टंट रोग

झांसी केन्द्र में एस्कोकाइटा झुलसा के लक्षण

7. विस्तार गतिविधियां

7.1 किसानों के उद्भासन भ्रमण

विश्वविद्यालय के कृषि तथा सब्जी फार्म में अपनाए जाने वाले फसल तथा सब्जी उत्पादन के विभिन्न पहलुओं, जैविक खेती के लाभों व खेती की वैज्ञानिक विधियों से अवगत कराने के लिए किसानों के अनेक प्रशिक्षण कार्यक्रम व उद्भासन भ्रमण आयोजित किए गए। ऐसे कार्यक्रमों का विवरण निम्नानुसार है:

- विश्वविद्यालय द्वारा '*जैविक खाद तैयार करने के लिए नई प्रौद्योगिकी*' पर 20 जुलाई 2017 को एक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में आस-पास के गांवों से आए लगभग 60 किसानों ने भाग लिया।
- मुख्यमंत्री खेत तीर्थ योजना (2017-18) के अंतर्गत रायसेन (मध्य प्रदेश) से आए 26 किसानों को 06.09.2017 को प्रशिक्षित किया गया।
- आत्मा कृषक प्रशिक्षण कार्यक्रम के अंतर्गत चिरगांव (झांसी) से आए 33 किसानों को 20.09.2017 को प्रशिक्षित किया गया।
- आत्मा कृषक प्रशिक्षण कार्यक्रम के अंतर्गत जालौन से आए 15 किसानों को 14.03.2018 को प्रशिक्षित किया गया।
- किसान कल्याण दिवस के अंतर्गत वर्ष 2022 तक किसानों की आय दुगुनी करने पर झांसी के बबीना ब्लॉक के कंचनपुर गांव में 17.03.2018 को एक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया

आत्मा कार्यक्रम के अंतर्गत प्रशिक्षित किसान

नई तकनीक से जैविक खाद बनाने की विधि पर प्रशिक्षण कार्यक्रम

गया। इस कार्यक्रम में विभिन्न गांवों से आए 55 किसानों ने भाग लिया।

7.2 अग्र पंक्ति प्रदर्शन

अग्र पंक्ति प्रदर्शन नवीनतम अधिसूचित/जारी की गई किस्मों पर भा.कृ.अ.प./कृषि विश्वविद्यालय प्रणाली के माध्यम से व्यवहारिक अनुसंधान का एक स्वरूप है जिसमें भाग लेने वाले तथा पड़ोसी किसानों के समक्ष प्रौद्योगिकियों की क्षमता प्रदर्शित करने की दृष्टि से उनके चुने गए खेतों में सम्पूर्ण सस्यविज्ञानी विधियों को अपनाते हुए प्रदर्शन किया जाता है, ताकि वैज्ञानिकों के फीडबैक के लिए प्रौद्योगिकियों के निष्पादन और फसलों के उत्पादन का विश्लेषण किया जा सके। विश्वविद्यालय ने बुंदेलखंड क्षेत्र में दलहनों तथा तिलहनों की नई तथा उच्च उपजशील किस्मों को किसानों की सहायता से उगाने के लिए प्रक्षेत्र प्रदर्शनों की एक श्रृंखला आयोजित करने का कार्यक्रम बनाया है क्योंकि यहां की जलवायु इन फसलों के लिए आदर्श है और इन्हें कम से कम सिंचाई की आवश्यकता होती है। इस कार्य से इस क्षेत्र में दलहनों और तिलहनों का उत्पादन बढ़ाने में सहायता मिल सकती है तथा यह क्षेत्र इन फसलों के उत्पादन के लिए एक आदर्श स्थल बन सकता है।

7.2.1 तोरिया-सरसों पर प्रक्षेत्र प्रदर्शन

विश्वविद्यालय तथा भा.कृ.अ.प.-तोरिया-सरसों अनुसंधान निदेशालय, सेवार, भरतपुर के बीच बुंदेलखंड क्षेत्र में अग्र पंक्ति प्रदर्शनों के माध्यम

तोरिया-सरसों पर अग्र पंक्ति प्रदर्शनों के घटक

प्रदर्शित प्रौद्योगिकी की तुलना में कृषकों द्वारा अपनाई जाने वाली विद्यमान विधियां	प्रदर्शित प्रौद्योगिकी के घटक
स्थानीय किस्में	उन्नत किस्में
बुवाई की छिड़काव विधि	कतार में बुवाई (45 सें.मी. की दूरी पर), 3-4 कि.ग्रा. बीज/हैक्टर का उपयोग करते हुए
दो से अधिक सिंचाइयां	अनुशंसित सिंचाइयां (दो : बुवाई के 35 दिन बाद और फली बनने की अवस्था पर)
पादप सुरक्षा का कोई उपाय नहीं अपनाया गया	आवश्यकता के आधार पर पादप सुरक्षा के उपाय अपनाए गए

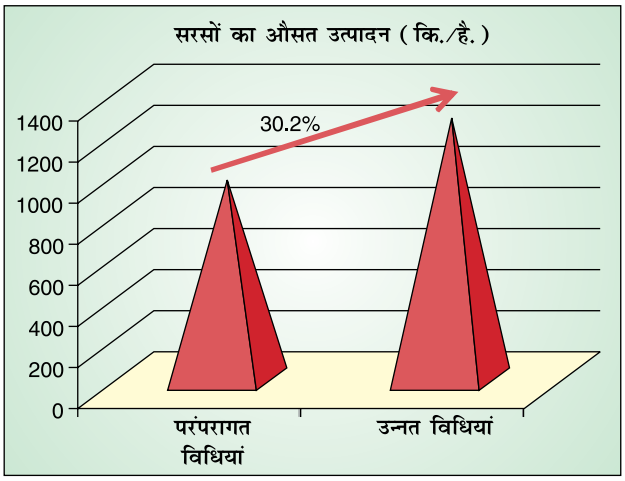

से तोरिया-सरसों की उन्नत उत्पादन प्रौद्योगिकी के मूल्यांकन व हस्तांतरण के लिए एक समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए गए हैं। सरसों की 4 उन्नत किस्मों नामत: आरएच-406, एनआरसीडीआर-2, एनआरसीएचबी-101 और डीआरएमआर-आईजे का उपयोग करके बुंदेलखंड क्षेत्र के झांसी और टीकमगढ़ जिलों के चार ब्लॉकों नामत: बादागांव, बबीना, निवारी और ओरछा के 18 गांवों में वर्ष 2017-18 के रबी मौसम के दौरान किसानों के खेतों में अग्र पंक्ति प्रदर्शन आयोजित किए गए। ये प्रदर्शन तोरिया-सरसों की खेती के लिए किसानों द्वारा अपनाई जाने वाली वर्तमान विधियों की तुलना में उन्नत प्रौद्योगिकी के घटकों के मूल्यांकन हेतु बैंचमार्क सर्वेक्षण के आधार पर आयोजित किए गए।

प्रदर्शन में भाग लेने वाले किसानों में उन्नत प्रौद्योगिकी के प्रति अत्यधिक उत्साहजनक अनुक्रिया पाई गई। पौधों की उपयुक्तम संख्या रखते हुए उन्नत किस्मों के बीज का उपयोग करने पर छिड़काव विधि की तुलना में बीज रोपक यंत्र से कतारों में बुवाई करने पर 35 प्रतिशत बीज की बचत हुई, 16-45 प्रतिशत उच्चतर उपज लाभ और आर्थिक लाभ हुआ (सकल, निवल तथा लाभ:लागत अनुपात)। किसान इस तथ्य से सहमत हुए कि समय पर बुवाई करने से सरसों की उपज में और अधिक वृद्धि हो सकती है। इसके अलावा उन्नत सस्यविज्ञानी विधियों के पैकेज में फसल को दी गई सिंचाइयां किसानों द्वारा दी जाने वाली सिंचाई की वर्तमान संख्याओं की तुलना में कम थीं। यह स्पष्ट था कि भा.कृ.अ.प.-डीआरएमआर, भरतपुर से प्राप्त सरसों की उन्नत किस्मों से स्थानीय किस्मों की तुलना में उल्लेखनीय रूप से अधिक उत्पादन और निवल लाभ होता है। सस्यविज्ञानी विधियों के उन्नत पैकेज को अपनाने से किसानों द्वारा अपनाई जा रही खेती की परंपरागत विधियों की तुलना में उपज (12.45 क्विंटल/है.) में औसतन 30.2 प्रतिशत (16.23 क्विंटल/है.) की वृद्धि हुई। तथापि, विभिन्न गांवों में प्रक्षेत्र प्रदर्शनों के अंतर्गत उगाई गई विभिन्न उन्नत किस्मों आरएच-406, डीआरएमआर-आईजे 31 (गिरिराज), एनआरसीडीआर-2 और एनआरसीएचबी-101 की क्रमश: 18.84, 17.02, 14.76 और 14.31 मध्य औसत उपज (क्विंटल/है.) रिकॉर्ड की गई।

7.2.2 तिल पर प्रक्षेत्र प्रदर्शन

इस क्षेत्र में तिल की उपज क्षमता बढ़ाने के लिए विश्वविद्यालय ने भा.कृ.अ.प.-तिल और रामतिल पर एआईसीआरपी; जेएनकेवीवी, जबलपुर और भा.कृ.अ.प.-आईआईओआर, हैदराबाद के सहयोग से तिल पर उन्नत उत्पादन प्रौद्योगिकी के मूल्यांकन तथा हस्तांतरण के लिए 50 अग्र पंक्ति प्रदर्शन आयोजित किए। किसानों द्वारा अपनाई जाने वाली विद्यमान विधियों की

तुलना में उन्नत प्रौद्योगिकी के घटकों के मूल्यांकन के लिए किए गए सर्वेक्षण के आधार पर खरीफ मौसम के दौरान बुंदेलखंड के चार ब्लॉकों नामत: झांसी जिले के बदगांव, बबीना और बामौर, ललितपुर जिले के बार और जालौन जिले के कदौरा ब्लॉक के छह गांवों में किसानों के खेतों में तिल की तीन उन्नत किस्मों नामत: टीकेजी-22, प्रगति और जीटी-10 का उपयोग किया गया।

यह देखा गया कि किसानों द्वारा उन्नत सस्यविज्ञानी विधियों के पैकेज के तीन प्राचलों को अपनाया, नामत: एमओएस (बुवाई की विधि), पोषक तत्व प्रबंधन और

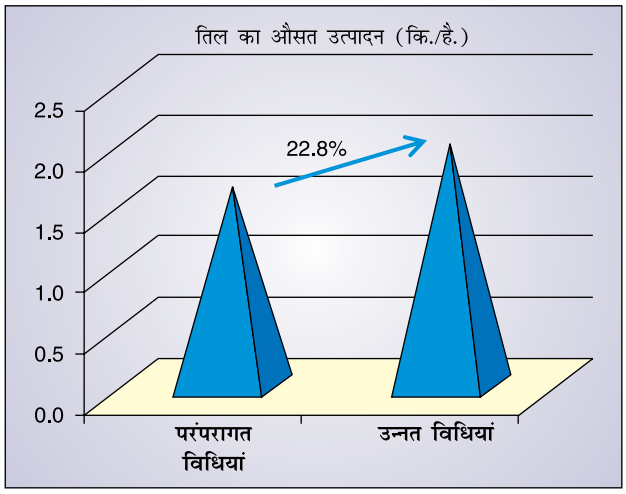

तिल पर अग्र पंक्ति प्रदर्शनों के घटक

क्र. सं.	विवरण	किसानों द्वारा अपनाई जाने वाली विधि	प्रक्षेत्र प्रदर्शन (अनुशंसित विधि)
1.	किस्म	अ-अनुशंसित/अनुशंसित लेकिन पुरानी स्थानीय किस्म	टीकेजी 22, प्रगति और जीटी-10
2.	बुवाई की तिथि	जुलाई के अंत में	जुलाई का दूसरा पखवाड़ा
3.	अंतराल	अधिकांशत: बीज छिड़ककर बुवाई की जाती है। पौधों की संख्या अनियमित रहती है	बीज को या तो बालू में या सूखी मिट्टी अथवा अच्छी तरह से छनी हुई गोबर की खाद में 1:20 के अनुपात में मिलाया जाता है। कतार से कतार की दूरी - 45 सेंमी., पौधो से पौधो की दूरी - 20 सें.मी.
4.	बीज दर (कि.ग्रा./है.)	2-3 कि.ग्रा./है.	पौधों की वांछित संख्या प्राप्त करने के लिए 5 कि.ग्रा./है. की बीज दर पर्याप्त है
5.	बीजोपचार	अधिकांशत: अनुपचारित बीज बोए जाते हैं	2.0 ग्रा./कि.ग्रा. बीज की दर से बैविस्टिन उपचारित बीज का उपयोग करें। जीवाण्विक पत्ती धब्बा रोग की समस्या के लिए बीज को रोपाई के पूर्व 30 मिनट के लिए 0.025 प्रतिशत के एग्रीमाइसिन-100 के घोल में डुबोयें
6.	खरपतवार प्रबंधन	सामान्यत: नहीं किया जाता है	निराई-गुड़ाई : बुवाई के 15-20 दिन बाद एक तथा बुवाई के 30-35 दिन बाद एक अन्य निराई-गुड़ाई की जाती है

क्र. सं.	विवरण	किसानों द्वारा अपनाई जाने वाली विधि	प्रक्षेत्र प्रदर्शन (अनुशंसित विधि)
7.	सिंचाई	अनिश्चित समय पर	दो सिंचाइयां - पहली पुष्प निकलना आरंभ होने पर और दूसरी फली बनने के समय वांछित होती हैं
8.	पोषक तत्व प्रबंधन	किसी पोषक तत्व का इस्तेमाल नहीं होता है	$N:P_2O_5:K_2O$ =20-10-0
9.	नाशकजीव और रोग नियंत्रण	कवकनाशियों का उपयोग नियमित रूप से नहीं होता है, यह सीमित है और कीटनाशियों की आवश्यकता से अधिक खुराक दी जाती है	फाइलोडी: रोगी पौधों को छांट कर निकाल देना; अंतरफसलन का उपयोग, तिल + अरहर (1:1); मिट्टी में 5 कि.ग्रा./है. की दर से फोरेट 10 जी का उपयोग

अनुशंसित किस्में (खेती की अनुशंसित विधियां) अपनाने से प्रक्षेत्र प्रदर्शनों में तुलनीय (किसानों की विधियों) की अपेक्षा उपज में औसतन 22.8 प्रतिशत की वृद्धि रिकॉर्ड की गई। उन्नत किस्मों प्रगति और टीकेजी22 के साथ उर्वरक उपयोग करने के प्राचल के अंतर्गत क्रमशः 243.6 कि.ग्रा./है. तथा 256 कि. ग्रा./है. की सर्वोच्च उपज रिकॉर्ड की गई। किसान इस तथ्य से संतुष्ट थे कि समय पर बुवाई करने से तिल की उपज में और अधिक वृद्धि हो सकती है। कुल मिलाकर भा.कृ.अ.प.-तिल और रामतिल पर एआईसीआरपी व भा.कृ.अ.प.-जेएनकेवीवी, जबलपुर और भा.कृ.अ.प.-आईआईओआर से प्राप्त तिल की किस्मों से स्थानीय किस्मों की तुलना में अधिक उत्पादन और निवल लाभ प्राप्त हुआ।

7.2.3 चना पर प्रक्षेत्र प्रदर्शन (भा.कृ.अ.प.-चना पर एआईसीआरपी)

भा.कृ.अ.प.-चना पर एआईसीआरपी तथा भा. कृ.अ.प.-आईआईपीआर, कानपुर के साथ सम्मिलित प्रयास के रूप में विश्वविद्यालय ने चने की उन्नत किस्म उज्ज्वल का उपयोग करते हुए किसानों के खेतों में चने की खेती की उन्नत उत्पादन प्रौद्योगिकी के मूल्यांकन एवं हस्तांतरण के लिए पांच अग्र पंक्ति प्रदर्शन आयोजित किए। ये प्रदर्शन चने की खेती की विद्यमान विधियों की तुलना में चना उत्पादन की उन्नत प्रौद्योगिकी के घटकों के मूल्यांकन के लिए

चना पर अग्र पंक्ति प्रदर्शन के घटक

क्र.सं.	विवरण	किसानों की विधि	प्रक्षेत्र प्रदर्शन (अनुशंसित विधि)
1.	किस्म	अ-अनुशंसित/अनुशंसित लेकिन पुरानी	उज्ज्वल
2.	बुवाई की तिथि	मध्य नवम्बर	अक्तूबर के अंतिम सप्ताह से नवम्बर का पहला सप्ताह
3.	अंतराल	कतार से कतार के बीच - 30 सें.मी., अनियमित पादप संख्या	कतार से कतार के बीच - 45 सें.मी., पौधे से पौधे के बीच - 10 सें.मी.
4.	बीज दर	80-100 कि.ग्रा./है.	पौधों की वांछित संख्या प्राप्त करने के लिए 65 कि.ग्रा./है. की बीज दर पर्याप्त

5.	बीजोपचार	अधिकांशत: अनुपचारित बीज बोए जाते हैं	बीजों को ट्राइकोडर्मा (6 ग्रा./कि.ग्रा.) और विटावैक्स (कार्बोक्सिन) (1 ग्रा./कि.ग्रा.) के साथ 4-5 घंटे तक पानी में डुबोकर रखते हुए, राइज़ोबियम के एक पैकेट के साथ उपचारित करके बोया जाता है
6.	खरपतवार प्रबंधन	यंत्र द्वारा	1-1.25 सक्रिय तत्व कि.ग्रा./है. की दर से अंकुरण के पूर्व शाकनाशी पेंडीमेथालिन का छिड़काव; हाथ से एक निराई-गुड़ाई, यदि आवश्यक हो
7.	सिंचाई	अनियमित समय पर	दो सिंचाइयां - पहली प्रथम शाखा निकलने पर (25-30 दिन बाद) और दूसरी कलिका निर्माण के दौरान
8.	पोषक तत्व प्रबंधन	60-70 कि.ग्रा./है. डीएपी, एसएसपी, जिप्सम और ZnSO4 का कोई उपयोग नहीं	88 कि.ग्रा. डीएपी ($N:P2O_0:K_2O = 20:40:20$) और 20 कि.ग्रा. S तथा 20 कि.ग्रा. Zn/है., गोबर की खाद- 5 टन/है.
9.	नाशकजीव एवं रोग नियंत्रण	कीटनाशियों का अधिक मात्रा में व अनियमित उपयोग, कवकनाशियों का सीमित उपयोग	500 मि.लि./है. की दर से इंडोक्सेकॉर्ब का छिड़काव, एक हैक्टर क्षेत्र में 5-6 फीरोमोन फंदों को लगाना

किए गए। एक सर्वेक्षण के आधार पर ये प्रदर्शन रबी मौसम के दौरान बुंदेलखंड क्षेत्र के झांसी जिले के बदगांव ब्लॉक के जौरी बुजुर्ग गांव तथा दतिया जिले के दतिया ब्लॉक के कमरारी गांव में आयोजित किए गए (सारणी)।

प्रौद्योगिकियों के उन्नत पैकेज के अनुप्रयोग से किसानों को चने की उच्च उपज लेने के लिए एक विकल्प उपलब्ध हुआ है। काबुली चने की उज्ज्वल किस्म से किसानों द्वारा उगाई जाने वाली स्थानीय देसी किस्म की तुलना में 30-35 प्रतिशत अधिक बाजार मूल्य प्राप्त होता है। इस उन्नत प्रौद्योगिकी से बीज छिड़काव की परंपरागत विधि की तुलना में लगभग 20 प्रतिशत बीज की बचत होती है, पौधों की संख्या उपयुक्तम रहती है, 16-26 प्रतिशत उच्चतर उपज लाभ व आर्थिक लाभ (सकल, निवल और लाभ:लागत अनुपात) होता है। इसके लिए बीज

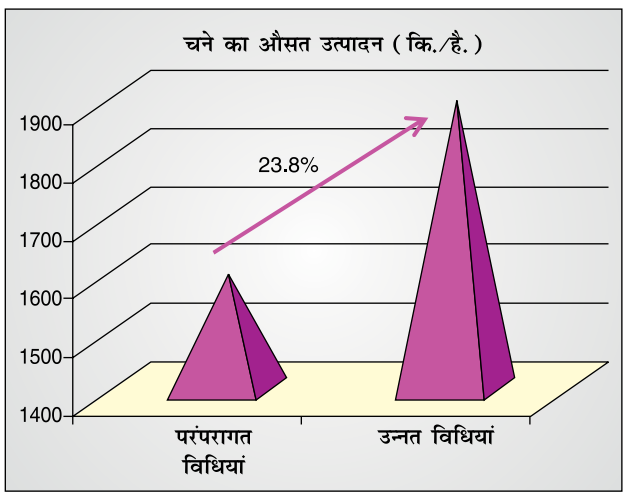

परंपरागत विधियों की तुलना में प्रक्षेत्र प्रदर्शनों में रिकॉर्ड की गई चने की उपज

प्रक्षेत्र प्रदर्शनों के दौरान बीजों का वितरण

रोपक यंत्र से कतार में बुवाई की जानी चाहिए। प्रक्षेत्र प्रदर्शनों में 19.69 क्विंटल/है. की औसत उपज रिकॉर्ड की गई जबकि उज्ज्वल किस्म से 22.2 क्विंटल/है. की सर्वोच्च उपज रिकॉर्ड की गई।

उपज निष्पादन तथा इससे संबंधित आर्थिक संकेतों से यह स्पष्ट हुआ है कि प्रक्षेत्र प्रदर्शनों में प्रदर्शन प्लाट के अंतर्गत सभी फसलों की उपज पर्याप्त रूप से उच्च होती है। यह निष्कर्ष भी निकाला गया कि तिलहनों और दलहनों की खेती की नवीनतम प्रौद्योगिकियों के उपयोग से उपज में काफी वृद्धि हो सकती है और किसानों की आमदनी में भी पर्याप्त वृद्धि हो सकती है।

8. बुनियादी ढांचे का विकास

8.1 फसल कैफेटेरिया और कृषि फार्म का विकास

विश्वविद्यालय ने फसलोत्पादन के सिद्धांत को व्यवहार में परिवर्तित करने तथा खेती के वास्तविक पर्यावरण में निर्णय लेने व छात्रों में कृषि के क्षेत्र में व्यावहारिक कौशल का संचार करने के लिए फसल कैफेटेरिया (2017-18) विकसित किया है। इस कैफेटेरिया में विभिन्न कृषि अनुसंधान संस्थाओं तथा विश्वविद्यालयों से एकत्र किए गए बीजों का उपयोग करके तथा सस्यविज्ञानी/पादप सुरक्षा की उचित विधियां अपनाकर फसलों की विभिन्न जातियों व किस्मों को उगाया गया है। वर्ष के दौरान प्रदर्शन खंडों में अनेक परंपरागत प्रक्षेत्र फसलें जैसे गेहूं, जौ, जई, तोरिया और सरसों की विभिन्न जातियां; अलसी, सूरजमुखी, कुसुम, चना, मसूर, दाल मटर, आलू, बरसीम, मूंग, उड़द, मक्का आदि उगाई गई हैं, ताकि बुंदेलखंड क्षेत्र में उपयुक्ततम उपज क्षमता प्राप्त करने के लिए खेती की उन्नत विधियों के उपयुक्त पैकेज का मानकीकरण किया जा सके।

क्र.सं.	फसलें	मौसम
1.	तोरिया	रबी
2.	सरसों	रबी
3.	गेहूं	रबी
4.	चना	रबी
5.	मटर	रबी
6.	अलसी	रबी
7.	आलू	रबी
8.	मसूर	रबी
9.	सूरजमुखी	रबी
10.	कुसुम	रबी

फसल कैफेटेरिया की झलकियां

क्र.सं.	फसलें	मौसम
11.	जौ	रबी
12.	जई	रबी
13.	बरसीम	रबी
14.	गन्ना	रबी
15.	धाान	खरीफ
16.	मक्का	खरीफ
17.	मूंग	खरीफ
18.	उड़द	खरीफ
19.	सोयाबीन	खरीफ
20.	मूंगफली	खरीफ
21.	अरहर	खरीफ
22.	कंगनी	खरीफ
23.	रागी	खरीफ
24.	सावां	खरीफ
25.	बाजरा	खरीफ
26.	तिल	खरीफ

8.2 सब्जी उत्पादन एवं प्रदर्शनी इकाई का विकास

- छात्रों तथा किसानों को बुंदेलखंड क्षेत्र के लिए उपयुक्त विभिन्न सब्जियों के उत्पादन की सम्पूर्ण प्रौद्योगिकी पैकेज के प्रदर्शन के लिए अनुदेशात्मक इकाई तथा नई प्रौद्योगिकियों के तेजी से प्रचार व प्रसार के लिए प्रभावी विधि

सब्जी कैफेटैरिया की झलकियां

क्र.सं.	सब्जी फसल	प्रदर्शित किस्मों की संख्या
1.	चौलाई (हरी और लाल)	05
2.	पेठा	01
3.	एस्पैरेगस	01
4.	बासेला	02
5.	चुकंदर	02
6.	करेला	03
7.	काला जीरा	01
8.	लौकी	04
9.	बैंगन	03
10.	बाकला	02
11.	ब्रोकोली	05
12.	गाजर	05
13.	ूलगोभी	03
14.	मिर्च	05
15.	अरबी	02
16.	धानिया	06
17.	लोबिया	02
18.	खीरा	03
19.	सौंफ	01
20.	मेथी	04

क्र.सं.	सब्जी फसल	प्रदर्शित किस्मों की संख्या
21.	अदरक	02
22.	ग्लोब आर्टीचोक	01
23.	इंडियन बीन	01
24.	आईवी गाउर्ड	01
25.	फूट	02
26.	भिण्डी	04
27.	प्याज	02
28.	पालक	05
29.	मटर	10
30.	परवल	01
31.	कद्दू	02
32.	मूली	04
33.	पालक	01
34.	तोरई	02
35.	स्वीट कॉर्न	02
36.	शकरकंद	01
37.	टमाटर	06
38.	हल्दी	12
39.	शलगम	04
40.	जिमीकंद	01

के रूप में विश्वविद्यालय फार्म में सब्जी उत्पादन एवं अनुसंधान की एक इकाई विकसित की गई है।

- इस फार्म में अनेक मसाला फसलें जैसे हल्दी, अदरक, मेथी और सौंफ; परंपरागत सब्जी फसलें जैसे बंदगोभी, फूलगोभी, मटर, बींस, प्याज, पत्तेदार सब्जियां, जड़ फसलें, टमाटर, बैंगन, मिर्च; कम उपयोग में लाई गई सब्जियां जैसे अरबी, जिमीकंद, आईवी गाउर्ड, परवल, बासेला और उपयोग में आने वाली कुछ सब्जियां जैसे बैंगनी ब्रोकोली, हरी ब्रोकोली, एस्पैरेगस, ग्लोब आर्टिचोके, स्वीट कॉर्न आदि उगाई जा रही हैं। मटर की आजाद पी-1 किस्म का बीजोत्पादन भी शरद मौसम के दौरान किया गया है। गुणवत्तापूर्ण उपज तथा उच्चतर उपज के लिए हल्दी में विविधता का पता लगाने के लिए प्रक्षेत्र में परीक्षण किए गए तथा प्याज (पूसा रेड किस्म) की वृद्धि और उपज पर विभिन्न प्रकार की पलवार सामग्री के प्रभाव पर भी परीक्षण किए गए।
- विश्वविद्यालय बुंदेलखंड क्षेत्र के लिए उन्नत किस्मों व आशाजनक सब्जियों/संकरों की उपयुक्ततम उपज प्राप्त करने के लिए खेती की आदर्श सस्यविज्ञानी विधियों के मानकीकरण के साथ-साथ उपयुक्त किस्मों के चयन पर भी कार्य कर रहा है। सब्जी फसलों की परिशुद्ध खेती की विधियों, जैविक खेती, जननद्रव्य संकलन, मूल्यवर्धन एवं सस्योत्तर प्रबंध की विधियों पर विशेष बल दिया गया है।
- छात्रों, किसानों, आगंतुकों तथा सब्जी क्षेत्र के अन्य हितधारकों के समक्ष सब्जी फसलों के उत्पादन संबंधी अनुसंधान प्रदर्शन हेतु लगभग 7000 मी.^{2} क्षेत्र में विश्वविद्यालय अनुसंधान एवं उत्पादन फार्म स्थापित किया गया है। यहां सार्वजनिक तथा निजी क्षेत्र द्वारा विकसित निम्न सब्जियों की उन्नत तथा लोकप्रिय किस्मों का प्रदर्शन खेती की वैज्ञानिक विधियों के अनुशंसित पैकेज के साथ किया जा रहा है।

8.3 फल उद्यान की स्थापना

बुंदेलखंड क्षेत्र भारत के सबसे महत्वपूर्ण क्षेत्र गंगा-यमुना के मैदान से नीचे और उत्तर में असमतल विंध्य पर्वत श्रृंखला के साथ उत्तर-पश्चिम से लेकर दक्षिण तक फैला हुआ है। यहां की मिट्टी काली तथा लाल-पीली मिट्टियों का मिश्रण है जिसमें जैविक पोषक तत्वों की कमी है तथा यहां की जलवायु

डॉ. टी. महापात्र, सचिव, डेयर और महानिदेशक, भा.कृ.अ.प. द्वारा फल उद्यान का उद्घाटन

फल उद्यान में उपलब्ध जननद्रव्य

क्र. सं.	फसलों का नाम	किस्मों का नाम	क्र. सं.	फसलों का नाम	किस्मों का नाम
1.	आंवला	चक्कया, एनए-6, एनए-7, एनए-10	17.	खिरनी	लोकल
2.	बेल	गोमा याशी, एनबी-एस-1, एस-2, एनबी-5, एनबी-7	18.	लासोडा	जबलपुर लोकल
3.	बेर	एनबी-एस-2, एनबी-एस-1, गोला, बीएयू-1	19.	नींबू	पंजाब गलगल, कागजी कलां
4.	कैरमबोला	थाईलैंड	20.	गलगल	पूसा अविनभ, पूसा उदित, एनआरसीसी-8, कागजी लाइम
5.	काजू	बीपीपी-8, मेदनाप्योर लोकल	21.	लीची	रोज़ सैंटेड, बॉम्बे-एस-1
6.	चेरी	ट्रॉपिकल चेरी	22.	महुआ	लोकल
7.	चिरौंजी	लोकल	23.	किन्नो	डब्ल्यू मरकॉट, डेज़ी, किन्नो, एनआरसीसी-4
8.	शरीफा	एनएमके-1, अन्नोना-2, बालानगर	24.	आम	मल्लिका, आम्रपाली, अरूणिका, चौंसा, दशहरी, लंगड़ा, राजापुरी, अरूणिमा, पूसा प्रतीवा, केसर
9.	खजूर	टिश्यू कल्चर	25.	फालसा	थार प्रगति
10.	अंजीर	डायना	26.	अनन्नास	मौरीशस
11.	ग्रेपफूट	मार्श सीडलैस, रेड ब्लश, फ्लेम ग्रेप फूट	27.	अनार	अर्कता, भगवा, सुपर भगवा, गणेण, जी-137, जालौर सीडलैस, रूबी, मृदुला
12.	अमरूद	धावल, स्वेता, ललित, एल-49, इलाहाबाद स्फेदा, थाइलैंड	28.	प्यूमेलो	यूएस-145
13.	होग पोंग	थाइलैंड	29.	चीकू	काली पट्टी, क्रिकेट बाल
14.	कटहल	लोकल	30.	मौसम्बी	पूसा राउंड, पूसा शरद, मोसम्बी, सतगुड़ी
15.	जामुन	गोमा प्रियंका, एनजे-6, एनजे-7, जे-42, जे-37	31.	इमली	गोमा प्रतीक
16.	करौंदा	थार कोमल	32.	बेल	लोकल

गर्म और अर्ध-आर्द्र है। इन क्षेत्रों में 700-900 मि. मी. वार्षिक वर्षा होती है तथा इस क्षेत्र की विशेषता कम तथा अनिश्चित वर्षा और अत्यंत निम्न सापेक्ष आर्द्रता के साथ-साथ तापमान में अत्यधिक विविधता (5 से 48^0 से.) है। अत: यह क्षेत्र अत्यधिक कठिन पर्यावरणीय बाधाओं वाला है जिसके कारण यहां परंपरागत फसलों की खेती लाभप्रद नहीं है। इस क्षेत्र की उपरोक्त जलवायु संबंधी दशाओं में यहां विभिन्न प्रकार के फलों की वाणिज्यिक खेती की अपार संभावना है। फल विटामिनों, खनिजों, प्रति-ऑक्सीकारकों तथा अन्य औषधीय गुणों से युक्त होते हैं। ये न केवल उत्पादकों को स्थिर आमदनी उपलब्ध कराते हैं, बल्कि मौसम की कठिन तथा प्रतिकूल दशाओं को भी सहने में सक्षम होते हैं। ऐसी स्थिति के अंतर्गत इस क्षेत्र के किसान समुदाय के सकल विकास और कल्याण के लिए फलों पर आधारित उत्पादन प्रणालियां अपनाना एक आदर्श कार्यनीति माना जा सकता है। शिक्षा के उद्देश्य से

लासौड़ा (कोर्डिया डाइकोटोमा)

अंजीर (फाइकस कैरिका)

बेल (एइग्ले मार्मेलॉस)

अनन्नास (एनानास कोमोसस)

विश्वविद्यालय फार्म में पिछले वर्ष विभिन्न प्रकार के फलों का उद्यान विकसित किया गया ताकि बुंदेलखंड क्षेत्र के लिए उपयुक्त फल फसलों की विभिन्न किस्मों का छात्रों के समक्ष प्रदर्शन करने के लिए एक प्रभावी उपाय के रूप में प्रौद्योगिकी तथा अनुदेशात्मक इकाई विकसित की जा सके और उससे प्रौद्योगिकी का तेजी से प्रचार-प्रसार करना संभव हो।

पिछले वर्ष से इस इकाई में अनेक उष्णकटिबंधी तथा उपोष्ण फल जैसे आम, आंवला, बेर, अनार, अमरूद, जामुन, नींबूवर्गीय जातियां (किन्नो, मौसम्बी, ग्रेपफूट, प्यूमेले, गलगल और नींबू), अंजीर, शरीफा, कटहल, लीची, चीकू, खिरनी, खजूर, महुआ, लासोड़ा, वुड एप्पल, बेल, काजू, हॉग पाम, उष्णकटिबंधी चेरी, चिरौंजी, इमली, महुआ, फालसा, करौंदा, कैरमबोला, अनन्नास आदि उगाए जा रहे हैं। विश्वविद्यालय बुंदेलखंड क्षेत्र के लिए फलों की आशाजनक फसलों की उन्नत किस्मों की उपयुक्त उपज प्राप्त करने के लिए विभिन्न रोपण प्रणालियों तथा निराई-गुड़ाई संबंधी अन्य कार्यों के मानकीकरण की दिशा में कार्य कर रहा है। खेती की श्रेष्ठ विधियों के विकास, जननद्रव्य संकलन और मूल्यवर्धन पर भी विशेष बल दिया गया है।

- **अमरूद के उच्च घनत्व वाले उद्यान की स्थापना**

अमरूद ऐसा फल है जो विभिन्न प्रकार की जलवायु तथा मिट्टी संबंधी स्थितियों के प्रति अपने को ढाल सकता है। तथापि, इसका सबसे अच्छा निष्पादन उपोष्ण दशाओं के अंतर्गत होता है। बुंदेलखंड क्षेत्र की जलवायु संबंधी दशाएं, मृदा का प्रकार तथा अन्य कारक अमरूद की खेती के लिए आदर्श हैं। विश्वविद्यालय ने भा.कृ.अ.प.-केन्द्रीय उपोष्ण बागवानी संस्थान, लखनऊ से अमरूद की आशाजनक किस्मों जैसे इलाहाबाद सफेदा, धावल, ललित, एल-49 (सरदार) और श्वेता की किस्में रोपण सामग्री के रूप

में एकत्र की हैं और उन्हें जुलाई 2017 के अंतिम सप्ताह में रोपा है ताकि अमरूद का उच्च घनत्व का उद्यान स्थापित किया जा सके।

- **अनार उद्यान की स्थापना**

अनार अपने को व्यापक श्रेणी की जलवायु तथा मृदा की दशाओं के अनुसार ढाल सकता है। तथापि, यह अर्ध शुष्क तथा शुष्क दशाओं के अंतर्गत सर्वश्रेष्ठ निष्पादन देता है। बुंदेलखंड क्षेत्र में जलवायु संबंधी दशाएं, मृदा के प्रकार तथा अन्य कारक अनार की खेती के लिए आदर्श हैं। रोपण सामग्री भा.कृ.अ.प. -राष्ट्रीय अनार अनुसंधान केन्द्र, सोलापुर, महाराष्ट्र से एकत्र की गई। इस सामग्री में अर्कता, भगवा, सुपर भगवा, गणेश, जी-137, जालौर सीडलैस, रूबी और मृदुला किस्में शामिल हैं। रोपाई की दूरी के अंतर्गत पौधे से पौधे के बीच 3 मी. तथा कतार से कतार के बीच 4 मी. का अंतराल रखा गया तथा रोपाई अगस्त-सितम्बर 2017 के दौरान की गई।

प्रदर्शन खंड, उच्च घनत्व उद्यान तथा अनार उद्यान विश्वविद्यालय फल अनुसंधान केन्द्र में लगभग 1.5 हैक्टर क्षेत्र में स्थापित किए गए हैं, ताकि छात्रों, किसानों, आगंतुकों तथा फल क्षेत्र के अन्य हितधारकों के समक्ष फल फसलों की विभिन्न किस्मों का प्रदर्शन किया जा सके। इस ब्लॉक में भा.कृ.अ.प. के अनुसंधान संस्थान, राज्य कृषि विश्वविद्यालयों तथा अन्य अनुसंधान संस्थानों द्वारा विकसित निम्नलिखित फलों की लोकप्रिय तथा उन्नत किस्मों का प्रदर्शन खेती की अनुशंसित वैज्ञानिक विधियों के पैकेज के साथ किया गया है।

8.4 खुम्बी उत्पादन इकाई की स्थापना

विश्वविद्यालय परिसर में खुम्बी उत्पादन इकाई स्थापित की गई जहां बुंदेलखंड क्षेत्र में खुम्बी की खेती को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न गतिविधियां जैसे कल्चर संकलन तथा इसके रखरखाव, खुम्बी बीज तैयार करने, कम्पोस्ट तथा खांचों में मृदा तैयार करने और ओइस्टर व बटन खुम्बी के उत्पादन जैसे कार्यों का परीक्षण के आधार पर मानकीकरण किया गया। प्लूरोटस की चार जातियों नामतः *प्लूरोटस सेजोर-काजू, प्लोरोटस फ्लोरिडा, प्लूरोटस ओस्ट्रीएटस, प्लोरोटस एयूस* और *एगेरिकस बाइस्पोरस* के दो प्रभेदों का अनुरक्षण किया जा रहा है। कम्पोस्ट को लम्बी विधि से तैयार किया गया जिसमें सामग्री को आठ बार पलटा गया, जिसके पश्चात् 0.75 प्रतिशत की दर से खुम्बी बीज सामग्री मिलाई गई और फिर इसे 10 कि.ग्रा. क्षमता के पॉलीइथिलीन के थैलों में भर दिया गया। इस आकृति के आरंभ होने के पांच दिन बाद पिन के शीर्ष जैसी आकृतियां उपजशील खुम्बियों में विकसित हो गई। ओयस्टर उत्पादन के लिए गेहूं के भूसे को रासायनिक रूप से निर्जर्मीकृत

तुड़ाई के लिए तैयार एगेरिकस बाइस्पोरस की फलन कायाएं

प्लूरोटस ओस्ट्रिएटस की फलन कायाए

प्लूरोटस एओअस की फलन कायाएं

किया गया तथा सुखाकर उसमें 60 प्रतिशत नमी बनाई गई। इसके पश्चात् 3.0 प्रतिशत की दर से खुम्बी बीज डालते हुए सामग्री को 5 कि.ग्रा. क्षमता के थैलों में पैकबंद किया गया। पिन के शीर्ष जैसी आकृतियों की शुरूआत खुम्बी बीज डालने के कुछ समय बाद हुई और ये उपज योग्य फल काया में परिवर्तित हो गई।

8.5 औषधीय तथा सगंधीय उद्यान की स्थापना

- विश्वविद्यालय परिसर में 0.81 है. क्षेत्र में औषधीय एवं सगंधीय उद्यान स्थापित और विकसित किया गया। इस उद्यान में साठ महत्वपूर्ण मसाले जैसे *टेरेकॉर्पस सेंटानीलस, एलेयोकॉर्पस गैनिट्रस, ऑसिमम* जातियां, *जस्टिका एधाटोडा, ब्रायोफिलम पिन्नेटम,* आदि मौजूद हैं। यह जननद्रव्य जेएनकेवीवी, जबलपुर; एनडीएयूटी, फैजाबाद; डीएमपीएआर, आनंद और डॉ. वाई.एस. परमार बागवानी एवं वानिकी विश्वविद्यालय, सोलन से एकत्र किया गया है।
- विश्वविद्यालय परिसर में विभिन्न वन वृक्ष प्रजातियों जैसे सागौन, सिरस, बहेड़ा, बबूल, सीसम और नीम की वन पौधशाला विकसित की गई है।

डॉ. टी. महापात्र, सचिव, डेयर और महानिदेशक, भा.कृ.अ.प. द्वारा औषधीय एवं संगधीय उद्यान का उद्घाटन

औषधीय एवं सगंधीय उद्यान में मौजूद औषधीय पौधों की सूची

क्र.सं.	स्थानीय नाम	वानस्पतिक नाम	कुल
1.	रामा तुलसी	ओसिमम सेंटम	लीमिएसी
2.	पामरोज़ा	किम्बोपोगान मार्टिनी	पोएसी
4.	अदुल्सा	जस्टिका एधाटोडा	एकेन्थेसी
5.	अजूबा	ब्रायोफिलम पिन्नेटम	क्रैसुलेसी
6.	शतावरी	एस्पैरेगस रेसेमोसस	लिलीएसी
7.	धृतकुमारी	एलो बार्बाडेंसिस	एस्फोडिलेसी
8.	पुदीना	मेंथा एर्वेन्सिस	लैबिएटी
9.	पीला भृंगराज	एक्लिप्टा प्रोस्ट्रेट	एस्ट्रेसी
10.	गुरमार	गायनेमा सिल्वेस्टे	एस्क्लेपीएडेसी
11.	वज्रदंती	बार्लेरिया प्रियोनिटिस	एकेंथेसी
12.	सर्पगंधा	राउवोल्फिया सर्पेन्टिना	फैबिकेसी
13.	अनंतमूल	टाइलोफोरा इंडिका	एस्क्लेपियाडेसी
14.	चित्रक	प्लमबेगो ओरिकुलेटा	प्लम्बागिनेसी
15.	हदजोद	सिसस क्वाड्रेंगुलेरिस	विटेसी
16.	लागुम बेला	जैस्मिनम साम्बैक	ओलिएसी
17.	पारिजात	निक्टेंथस आर्बोर - ट्रिस्टिस	ओलिएसी
18.	कटाकटाका	ब्रायोफिलम पिन्नेटम	क्रेसुलेसी
19.	इलायची घास	इलेटेरिया कार्डामोमम	जिंजिबरेसी
20.	गुग्गल	कैमीफोरा विघटी	बर्सेरेसी
21.	नींबू घास	सिम्बोपोगान सिट्रेटस	पोएसी
22.	केवड़ा	पेंडानस टैक्टोरियस	पेंडानेसी
23.	निरगुंडी	विटेक्स नेगुंडो	लैमीऐसी
24.	करौंदा	कैरिसा कैरेंडस	एपोसाइनेसी
25.	ब्रह्मी	बैकोपा मोनिऐरी	प्लांटागिनेसी
26.	गुग्गुल	कोमीफोरा विघटी	बर्सेरासी
27.	कालमेघ	एंड्रोग्रैफिस पैनिकुलेटा	एकेंथेसी
28.	जंगली प्याज	एर्जेनिया इंडिका	लिलीएसी

क्र.सं.	स्थानीय नाम	वानस्पतिक नाम	कुल
29.	लाजवंती	मिमोसा प्यूडिका	फैबेसी
30.	बकुची	सोराली कोरिलीफोलिया	फैबेसी
31.	कपूर तुल्सी	ओसिमम किलिमैंडोस्केइकम	लैमिएसी
32.	अपराजिता	क्लिटोरिया टर्नाटी	फैबेसी
33.	आजवायन	ट्रैकीस्पर्मम एम्नी	एपिएसी
34.	सिट्रोनेला	सिम्बोपोगान विंटेरीएनस	पोएसी
35.	कांघी	एब्यूटिलोन इंडिकम	माल्वेसी
36.	दम्बुती	टाइलोफोरा इंडिका	एस्क्लेपियाडेसी
37.	चमेली	जैस्मिनियम सैम्बेक	ओलिएसी
38.	लैवेंडर	लैवेंडुला ओफिनेलिस	लैमिनेसी
39.	लाजवंती	मिमोसा प्यूडिका	
40.	हदजोड़	साइकस क्वाड्रेंगुलेरिस	विटेसी
41.	इंडियन लॉन्ग पेपर	पाइपर लोंगम	पाइपेरेसी
42.	सदाबहार	कैंथारेंथस रोज़ियस	एपोसाइनेसी
43.	गुड़मार, गुरमार	जिम्नेमा सिल्वेस्ट्रे	एपोसाइनेसी
44.	गिलोय	टिनोस्पोरा कॉर्डिफोलिया	मेनिस्पर्मेसी
45.	स्टेविया	स्टेविकया रेबायूडियाना	एस्ट्रेसी
46.	रुद्राक्ष	एलोएकार्पस गैनिट्रस	एलियोकार्पेसी
47.	रक्त चंदन	टेरोकार्पस सेंटालिनस	फैबिएसी
48.	बहेड़ा	टर्मिनेलिया बेलिरिका	काम्ब्रेटेसी
49.	बादाम	प्रूनस डल्किस	रोजेसी
50.	बकैन	मेलिया एज़ाडेरेक	मेलिएसी
51.	हरड़	टर्मिनेललिया चुबुला	काम्ब्रेटेसी
52.	मधुकामनी	मुर्राया पैनिकुलेटा	रूटेसी
53.	नीम	एज़ाडिरेक्टा इंडिका	मेलिएसी
54.	लासोड़ा, लासौड़ा	कॉर्डिया डाइकोटामा	बोरागिन्नेसी
55.	मीठा नीम	मुराया कोइनिगी	रूटेसी
56.	सतपारणी	एल्सटोनिया स्कोलेरिस	एपोसाइनेसी

क्र.सं.	स्थानीय नाम	वानस्पतिक नाम	कुल
57.	शहतूत/व्हाइट मल्बेरी	मोरस एल्बा	मोरेसी
58.	शिकाकाई	एकेसिया कोंकिना	मिमोसेसी
59.	अर्जुन	टर्मिनेलिया अर्जुना	काम्ब्रेटेसी
60.	खेजड़ी	प्रोसोपिस सिनरेरिया	मिमोसेसी

8.6 प्रयोगशालाओं की स्थापना

विश्वविद्यालय ने बागवानी, मृदा विज्ञान एवं सस्यविज्ञान, आनुवंशिकी, जैवप्रौद्योगिकी, कार्यिकी एवं जैव रसायन विज्ञान, पादप रोगविज्ञान एवं वानिकी के क्षेत्र में विशेषज्ञता युक्त प्रयोगशालाओं को सबल बनाया है ताकि प्रयोगात्मक अभिमुख गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और तात्कालिक प्रशिक्षण प्रदान किए जा सकें। विश्वविद्यालय की पादप रोगविज्ञान प्रयोगशाला का उद्घाटन डॉ. टी. महापात्र, सचिव, डेयर और महानिदेशक, भा.कृ.अ.प. ने 31 जुलाई 2017 को किया।

डॉ. टी. महापात्र, सचिव, डेयर और महानिदेशक, भा.कृ.अ.प. द्वारा पादप रोगविज्ञान प्रयोगशाला का उद्घाटन

8.7 शैक्षणिक तथा प्रशासनिक भवनों का निर्माण

विश्वविद्यालय की निर्माण एजेंसी एनबीसीसी ने शैक्षणिक खण्ड, प्रशासनिक खण्ड, कुलपति निवास तथा बालिका छात्रावास का निर्माण कार्य जोर-शोर से आरंभ कर दिया है। शैक्षणिक खण्ड, प्रशासनिक खण्ड, कुलपति निवास तथा बालिका छात्रावास का निर्माण लगभग 15209 वर्ग मीटर क्षेत्र में किया जा रहा है। छात्रावास खण्ड में 200 छात्रों के रहने की सुविधा उपलब्ध होगी। एनबीसीसी को टाइप VI और टाइप IV निवासों के निर्माण का कार्य भी सौंप दिया गया है।

9. वित्त एवं बजट

विश्वविद्यालय को अपने क्रियाकलाप सम्पन्न करने के लिए कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा विभाग, कृषि एवं

निर्माण कार्य की झलकियां

किसान कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार से निधियां प्राप्त होती हैं। शैक्षणिक वर्ष 2017-18 के दौरान विश्वविद्यालय को मात्र 33.50 करोड़ रुपये का बजट आबंटित हुआ था। 31 मार्च 2018 को तुलन-पत्र तथा 31 मार्च 2018 को समाप्त होने वाले वर्ष के आय तथा व्यय लेखे का विवरण अनुबंध-VI और VII में दिया गया है।

10. अन्य प्रमुख गतिविधियां/कार्यक्रम

10.1 स्वतंत्रता दिवस समारोह

भारत के 71वें स्वतंत्रता दिवस पर कुलपति डॉ. अरविन्द कुमार ने विश्वविद्यालय परिसर में ध्वजारोहण किया तथा संकाय सदस्यों, स्टाफ और छात्रों को सम्बोधित किया। उन्होंने विश्वविद्यालय परिवार को अपने शुभकामनाएं दीं तथा आने वाले वर्षों में प्रगति की नई ऊंचाइयां छूने की कामना व्यक्त की। उन्होंने नई पीढ़ी का आह्वान करते हुए कहा कि उसे उन असंख्य लोगों के बलिदानों को नहीं भूलना चाहिए जिन्होंने स्वराज प्राप्त करने के लिए अपने जीवन का बलिदान कर दिया था। उन्होंने याद दिलाया कि विविधता में एकता हमारी सबसे बड़ी शक्ति है तथा हमारी सांस्कृतिक परंपरा दूसरों का आदर करने की रही है जो भारतीय सभ्यता में प्राचीन काल से चली आ रही है। उन्होंने स्वतंत्रता के बाद से अब तक कृषि में हुई प्रगति का सिंहावलोकन प्रस्तुत किया। भारतीय कृषि जिसकी स्वतंत्रता के पूर्व 50 वर्षों के दौरान मात्र एक प्रतिशत प्रतिवर्ष की दर से वृद्धि हो रही थी, वह स्वतंत्रता के बाद के युग में लगभग 2.6 प्रतिशत की दर से बढ़ी है। 50 और 60 के दशक में वृद्धि का मुख्य स्रोत खेती के क्षेत्र में होने वाला विस्तार था। उसके पश्चात् कृषि उत्पादन में भूमि क्षेत्र के योगदान में समय के साथ कमी आई तथा उत्पादकता में वृद्धि कृषि उत्पादन में वृद्धि का मुख्य स्रोत हो गई। उन्होंने आयातित खाद्यान्न पर देश की निर्भरता को समाप्त करने के लिए किसानों, भारत सरकार तथा वैज्ञानिकों के सम्मिलित प्रयासों की सराहना की। प्रति हैक्टर उपज बढ़ाने के लिए विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के प्रयोग से हरित क्रांति आई तथा टिकाऊ खाद्यान्न सुरक्षा सुनिश्चित हुई। उन्होंने किसानों को बधाई दी कि निरंतर पड़ने वाले सूखों से हतोत्साहित होने के बावजूद भी दालों के उत्पादन में 1.5 गुनी वृद्धि हुई है। हमारे वैज्ञानिकों ने कृषि निर्गम को सर्वोच्चता प्रदान करने के लिए सैकड़ों उच्च उपजशील किस्मों के बीज तैयार किए हैं। उर्वरकों की कमी जो पूर्व में एक दु:स्वप्न थी, अब समाप्त हो गई है। यह हमारी सरकार की दूरगामी नीतियों के कारण संभव हुआ है। उन्होंने स्टाफ सदस्यों तथा छात्रों को सम्बद्ध क्षेत्रों में कौशल प्राप्त करने तथा वैश्विक मानकों के स्तर तक पहुंचने का आह्वान किया। समारोह की मुख्य अतिथि श्रीमती प्रमोद कुमारी राजपूत, सदस्य, विश्वविद्यालय प्रबंधन मंडल ने भी स्वतंत्रता सेनानियों के बलिदानों को श्रद्धांजलि देते हुए छात्रों के उज्ज्वल भविष्य हेतु उन्हें आशीर्वाद दिया। इस अवसर पर छात्रों द्वारा खेल-कूद तथा सांस्कृतिक गतिविधियों का भी आयोजन किया गया।

10.2 संकल्प से सिद्धि तक

- रानी लक्ष्मी बाई केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, झांसी में भारत सरकार के निर्देशों के अनुसार स्वतंत्रता के 70 वर्ष और भारत छोड़ों आंदोलन के 75 वर्ष होने पर 9 अगस्त 2017 को शपथ ग्रहण समारोह का आयोजन किया। विश्वविद्यालय के छात्रों तथा स्टाफ सदस्यों ने इस अवसर पर 'नए भारत के संकल्प' की शपथ ग्रहण की।

10.3 सद्भावना दिवस

- विश्वविद्यालय में 20 अगस्त 2017 को **सद्भावना दिवस** मनाया गया तथा विश्वविद्यालय के सभी छात्रों और संकाय सदस्यों ने सद्भावना दिवस के अवसर पर शपथ ग्रहण की।

सद्भावना दिवस पर विश्वविद्यालय के संकाय सदस्य और स्टाफ

के दौरान अनेक गतिविधियां चलाई गईं। पूरे कार्यक्रम के दौरान विश्वविद्यालय परिसर की साफ-सफाई करते हुए सेवा दिवस मनाया गया; भोजला गांव में श्रमदान के द्वारा समग्र स्वच्छता दिवस आयोजित किया गया; झांसी में पर्यटक स्थलों की सफाई में भाग लिया गया और अंत में छात्रों तथा कर्मचारियों को स्वच्छता अभियान में भाग लेने के लिए पुरस्कृत किया गया। विश्वविद्यालय के स्टाफ तथा छात्रों ने पर्यावरण तथा स्वास्थ्य लाभ के लिए स्वच्छता की शपथ ली।

10.4 हिन्दी चेतना पखवाड़ा

भारत सरकार की राजभाषा नीति के दिशा-निर्देशों के अनुसार विश्वविद्यालय में 14 सितम्बर 2017 से 30 सितम्बर 2017 तक हिन्दी पखवाड़े का आयोजन किया गया। इस अवधि के दौरान छात्रों तथा स्टाफ सदस्यों, दोनों के लिए प्रश्न-मंच/सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता, निबंध प्रतियोगिता, काव्य-पाठ प्रतियोगिता आदि जैसे अनेक कार्यक्रमों का आयोजन हुआ। कार्यक्रम के अंत में माननीय कुलपति तथा मुख्य अतिथि डॉ. अरविन्द कुमार ने प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कृत किया।

10.5 स्वच्छ भारत अभियान

दिनांक 17 सितम्बर 2017 से 2 अक्तूबर 2017 के दौरान 'स्वच्छता ही सेवा' कार्यक्रम का आयोजन हुआ। स्वच्छ भारत अभियान को रानी लक्ष्मी बाई केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय परिसर के प्रत्येक सदस्य का अत्यधिक समर्थन प्राप्त हुआ है। परिषद द्वारा प्राप्त निर्देशों के अनुसार विश्वविद्यालय में स्वच्छता अभियान

10.6 राष्ट्रीय एकता दिवस

यह कार्यक्रम 31 अक्तूबर 2017 को आयोजित हुआ। इस अवसर पर विश्वविद्यालय परिसर में 'एकता के लिए दौड़' का आयोजन भी हुआ। छात्रों को खेल-कूद संबंधी विभिन्न गतिविधियों में प्रेरित करने के लिए विश्वविद्यालय में बैडमिंटन टूर्नामेंट का भी आयोजन हुआ।

10.7 कृषि शिक्षा दिवस

भारत के प्रथम केन्द्रीय कृषि मंत्री तथा स्वतंत्र भारत के प्रथम राष्ट्रपति भारत रत्न डॉ. राजेन्द्र प्रसाद की जयंती के उपलक्ष में 3 दिसम्बर 2017 को **कृषि शिक्षा दिवस** का आयोजन किया गया। इस दिवस का उद्देश्य विद्यालय के छात्रों को कृषि के विभिन्न पहलुओं तथा देश के विकास में इसकी प्रासंगिकता से अवगत कराकर, उन्हें कृषि की ओर आकर्षित करना था, ताकि उनकी कृषि और सम्बद्ध विषयों में रुचि विकसित हो सके और विद्यालय की शिक्षा प्राप्त करने के बाद वे अपना व्यवसाय चुनने के लिए कृषि संबंधी पाठ्यक्रमों का अध्ययन कर सकें अथवा स्वयं को कृषि तथा सम्बद्ध गतिविधियों में रत रह कर भविष्य में कृषि उद्यमी बन सकें। विश्वविद्यालय के संकाय सदस्यों ने छात्रों को स्वतंत्रता के पश्चात् कृषि शिक्षा के प्रसार के लिए कृषि क्षेत्र में हुए विकास तथा कृषि की भावी संभावनाओं के बारे में विस्तार से बताया। समारोह के मुख्य अतिथि श्री अजय सोनी, बैंक प्रबंधक, नाबार्ड, झांसी ने किसानों की आमदनी बढ़ाने के लिए नाबार्ड द्वारा शुरू की गई विभिन्न योजनाओं पर प्रकाश डाला।

10.8 मृदा स्वास्थ्य दिवस

दिनांक 5 दिसम्बर 2017 को **मृदा स्वास्थ्य दिवस** मनाया गया। इस अवसर पर 60 से अधिक किसानों को आमंत्रित किया गया तथा उन्हें मिट्टी स्वास्थ्य के महत्व तथा इसका पोषक तत्वों के उपयोग सीमा एवं फसलों के उत्पादन व उपज पर पड़ने वाले प्रभावों से भी अवगत कराया गया। वक्ताओं ने भारत को खाद्यान्न की दृष्टि से सुरक्षित बनाने और फार्म निर्गम में विश्व में दूसरा स्थान प्राप्त करने के लिए किसानों, नीति-निर्माताओं तथा वैज्ञानिकों को बधाई दी।

10.9 गणतंत्र दिवस समारोह

वर्ष 1950 में देश का संविधान अपनाए जाने की वर्षगांठ मनाते हुए विश्वविद्यालय द्वारा **69वां गणतंत्र दिवस** मनाया गया। ध्वजारोहण के पश्चात् माननीय कुलपति डॉ. अरविन्द कुमार ने उन घटनाओं की याद दिलाई जिनके परिणामस्वरूप स्वतंत्रता के पश्चात् कृषि में उल्लेखनीय प्रगति हुई है। विश्वविद्यालय प्रबंधन मंडल की सदस्य श्रीमती प्रमोद कुमारी राजपूत ने सम्माननीय अतिथि के रूप में समारोह की शोभा बढ़ाई। इस अवसर पर छात्रों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम तथा खेल-कूद संबंधी गतिविधियां भी आयोजित की गईं।

10.10 अखिल भारतीय अंतर-कृषि विश्वविद्यालय खेल-कूद प्रतियोगिता

रानी लक्ष्मी बाई केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, झांसी के छात्रों ने 30 जनवरी 2018 से 3 फरवरी 2018 तक कृषि विज्ञान विश्वविद्यालय, बंगलुरू द्वारा

मृदा स्वास्थ्य दिवस

खेलकूद प्रतियोगिता के लिए विश्वविद्यालय का दल

जीकेवीके, बंगलुरू परिसर में आयोजित कृषि-खेलकूद प्रतियोगिता 2017-18 में भाग लिया। विश्वविद्यालय ने खेलकूदों के क्षेत्र में छात्रें की अंतरनिहित क्षमता के प्रदर्शन के लिए दूसरी बार इस प्रतियोगिता में भाग लिया। डॉ. ए.एस. काले और डॉ. प्रियंका शर्मा दल प्रबंधक सहित 21 सदस्यों के एक दल ने इस प्रतियोगिता में भागेदारी की। कृषि, पशुचिकित्सा और पशुविज्ञान विश्वविद्यालयों तथा भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के देशभर में फैले विभिन्न शैक्षणिक संस्थानों की 60 टीमों ने इस आयोजन में भाग लिया।

10.11 एग्री यूनिफेस्ट

18वां अखिल भारतीय कृषि विश्वविद्यालय युवा महोत्सव, एग्री यूनिफेस्ट-2017-18 तिरुपति, आंध्र प्रदेश में 12-16 फरवरी 2018 को आयोजित किया गया। इस उत्सव से कृषि विश्वविद्यालय के छात्रों को लोकनृत्य, संगीत, साहित्यिक कार्यक्रमों जैसे प्रश्न-मंच, वक्तृता, वाद-विवाद, आशु भाषण, रंग-मंच तथा ललित कलाओं में अपनी प्रतिभा दर्शाने का अवसर प्राप्त हुआ। रानी लक्ष्मी बाई केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, झांसी के 21 छात्रों तथा दो दल प्रबंधकों ने विभिन्न कार्यक्रमों जैसे स्वांग, एकांकी नाटक, आशु भाषण, समूह गान, समूह नृत्य, वाद-विवाद, रंगोली, मिट्टी के मॉडल बनाने में भाग लिया और अच्छा प्रदर्शन किया। इस दल का नेतृत्व डॉ. शैलजा पुनेठा और डॉ. आशुतोष कुमार ने किया।

एग्री यूनिफेस्ट में भाग लेते विश्वविद्यालय के छात्र

10.12 राष्ट्रीय सेवा योजना

गणतांत्रिक जीवन तथा समाज की नि:स्वार्थ सेवा की आवश्यकता को बनाए रखने के अपने प्रयास में कृषि, बागवानी तथा वानिकी के सभी पूर्व स्नातक छात्रों ने विश्वविद्यालय द्वारा आरंभ की गई राष्ट्रीय सेवा योजना में भाग लिया। दिनांक 16 से 22 मार्च 2018 को झांसी के भोजला ग्राम में सात दिवसीय राष्ट्रीय सेवा योजना शिविर आयोजित किया गया। इसकी समन्वयन समिति में डॉ. मीनाक्षी आर्य, वैज्ञानिक; डॉ. उषा, कार्यक्रम समन्वयक और डॉ. ए.एस. काले, कार्यक्रम अधिकारी शामिल थे। इस शिविर का उद्घाटन डॉ. मुकेश श्रीवास्तव, कुलसचिव ने किया। विश्वविद्यालय के सभी छात्रों ने इस शिविर में भाग लिया। राष्ट्रीय सेवा योजना के स्वयंसेवकों ने समाज के कल्याण व विभिन्न सामाजिक बुराइयों के बारे में चेतना लाने के साथ पर्यावरण, स्वच्छता, कृषि, स्वास्थ्य और शिक्षा से संबंधित विभिन्न समस्याओं के बारे में भी जागृति लाने का प्रयत्न किया। राष्ट्रीय सेवा योजना की इकाई ने विभिन्न प्रकार के मुद्दों जैसे वन संरक्षण, प्राकृतिक संसाधनों के टिकाऊपन, मौलिक शिक्षा के महत्व, भारतीय कृषि तथा प्रौद्योगिकीय नवोन्मेषों की स्थिति, कृषि वित्त, मात्स्यकी विकास आदि पर प्रतिष्ठित विशेषज्ञों के अतिथि व्याख्यानों का आयोजन किया। माननीय कुलपति डॉ. अरविन्द

समाज की नि:स्वार्थ सेवा की ओर

कुमार ने भी शिविर का दौरा किया तथा छात्रों को मार्गदर्शन प्रदान किया।

10.13 प्रधानमंत्री द्वारा भाषण

माननीय प्रधानमंत्री द्वारा भा.कृ.अ.सं., पूसा, नई दिल्ली में 17 मार्च 2018 को आयोजित कृषि उन्नति मेले में दिए गए व्याख्यान का सजीव टीवी प्रसारण किया गया जिसमे झांसी के किसानों, रानी लक्ष्मी बाई केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय के छात्रों व स्टाफ सदस्यों और प्रबंधन मंडल के सदस्यों ने भाग लिया।

10.14 विश्व वन दिवस

दिनांक 21 मार्च 2018 को विश्व वन दिवस का आयोजन किया गया। डॉ. ए.के. मालवीय, सहायक वन संरक्षक ने मुख्य अतिथि के रूप में भाग लेकर समारोह की शोभा बढ़ाई। भोजला ग्राम तथा विश्वविद्यालय परिसर में वृक्षारोपण किया गया।

इसके अलावा छात्रों के लिए विश्वविद्यालय द्वारा एक व्याख्यान तथा चार्ट प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया।

10.15 विश्व पर्यावरण दिवस

विश्वभर में प्रत्येक वर्ष 5 जून को मनाया जाने वाला विश्व पर्यावरण दिवस पर्यावरण से संबंधित सकारात्मक कार्यों का एक सबसे बड़ा वार्षिक कार्यक्रम है। इस वर्ष का उद्देश्य 'प्लास्टिक प्रदूषण को हराना' इस तथ्य को उजागर करता है कि हमारे समय की पर्यावरण से संबंधित सबसे बड़ी चुनौती–प्लास्टिक से निपटने के लिए कार्यवाही करने हेतु हम सभी को एक साथ मिलकर आगे आना होगा। विश्वविद्यालय के छात्रों तथा संकाय सदस्यों ने बहेड़ा (टर्मिनेलिया बेलेरिका) के पौधों का रोपण अभियान चलाकर यह दिवस मनाया। छात्रों ने कम से कम एक वृक्ष को गोद लेने और उसकी नियमित देखभाल करने की शपथ ली। इस अवसर पर डॉ. मीनाक्षी आर्य, वैज्ञानिक (पादप रोगविज्ञान) ने एक व्याख्यान दिया जिसमें पर्यावरण की बढ़ती हुई चिंताओं जैसे मृदा अपरदन, पारिस्थितिकीय विविधाता के प्रबंध आदि के संदर्भ में प्लास्टिक प्रदूषण को समाप्त करने के महत्व पर प्रकाश डाला गया।

10.16 अंतरराष्ट्रीय योग दिवस का आयोजन

दिनांक 21 जून 2018 को विश्वविद्यालय परिसर में चौथा अंतरराष्ट्रीय योग दिवस मनाया गया। यह दिन उत्तरी अर्ध गोलार्ध में वर्ष का सबसे लंबा दिन

वृक्षारोपण अभियान–सामान्यजनों का प्रकृति से जुड़ाव

योग-सद्भावना तथा शांति की वैश्विक प्रेरणा

होता है और विश्व के अनेक भागों में इसका विशेष महत्व है। वर्ष 2018 में योग दिवस का मुख्य विषय था 'शांति के लिए योग'। विश्वविद्यालय के छात्रों, संकाय सदस्यों तथा स्टाफ ने योग को जीवन का अभिन्न अंग बनाने का संकल्प लेते हुए इस कार्यक्रम में भाग लिया। प्रतिभागियों को याद दिलाया गया कि योग मूलत: संस्कृत का शब्द है जिसका अर्थ 'जोड़ना' है और इसका उद्देश्य शरीर, मस्तिष्क व आत्मा को एक साथ जोड़ना है। योग को अनंत काल से सम्पूर्ण उपचार की सर्वाधिक महत्वपूर्ण विधि मानते हुए इसके महत्व पर भी प्रकाश डाला गया। लंबी अवधि के दौरान इस प्राचीन विधि में अनेक परिवर्तन हुए हैं तथा अब यह आधुनिक सभ्यता की आवश्यकताओं की दृष्टि से अनुकूल बनाई गई है। इस कार्यक्रम में इस तथ्य पर भी बल दिया कि इस आधुनिक युग में जहां प्रत्येक दिन जीवन तनावपूर्ण और उत्तेजना से भरा हुआ है, योग को अपनाने से मन की शांति तथा आनंद के द्वार खुल सकते हैं। प्रतिभागियों ने भारत सरकार के आयुष मंत्रालय द्वारा उपलब्ध कराए गए योग के प्रोटोकॉल के अनुसार विभिन्न आसन, प्राणायाम तथा विश्रामदायक व्यायाम किए।

10.17 माननीय कुलाधिपति का दौरा

रानी लक्ष्मी बाई केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, झांसी के माननीय कुलाधिपति प्रो. पंजाब सिंह ने दिनांक 11 अक्तूबर 2017 और 20 मई 2018 को दो बार, विश्वविद्यालय का दौरा किया। उन्होंने अपने दौरे की शुरूआत कुलपति तथा प्रबंधन के सदस्यों

के साथ बैठक से की जिसके पश्चात् उन्होंने विभिन्न प्रयोगशालाओं और परिसर के फार्म का भी भ्रमण किया। भा.कृ.अ.प. के संस्थानों के वैज्ञानिकों की अतिथि संकाय सदस्य के रूप में नियुक्ति की संभावना को तलाशने के लिए भा.कृ.अ.प.-आईजीएफआरआई, भा.कृ.अ.प.-सीएएफआरआई तथा विश्वविद्यालय के विभागाध्यक्षों और विश्वविद्यालय के शिक्षकों की छात्रों के साथ परिचर्चा बैठक आयोजित की गई। अपने व्यस्त कार्यक्रम में माननीय कुलाधिपति ने एनबीसीसी के अभियंताओं से भी मुलाकात की और उन्होंने परिसर के विभिन्न निर्माण स्थलों का दौरा करते हुए विश्वविद्यालय के मास्टर प्लान को अंतिम रूप दिया। इन परिचर्चाओं के दौरान उन्होंने बुनियादी ढांचे के विकास की गति पर संतोष व्यक्त किया और यह आशा व्यक्त की कि विश्वविद्यालय शिक्षा एवं अनुसंधन की गुणवत्ता, अभूतपूर्व नवीन खोजों तथा विद्वतापूर्ण कार्यों के माध्यम से निकट भविष्य में कुल मिलाकर जन-सामान्य तथा किसानों की कल्पना को साकार करेगा।

माननीय कुलाधिपति प्रो. पंजाब सिंह संकाय सदस्यों व स्टाफ के साथ परिचर्चा बैठक में

11. अतिथियों की सूची

क्र.सं.	नाम	पदनाम	तिथि
1.	डॉ. पी.एल. गौतम	कुलपति, कैरियर प्वाइंट यूनिवर्सिटी, हिमाचल प्रदेश	27 जुलाई 2017
2.	डॉ. त्रिलोचन महापात्र	सचिव, डेयर और महानिदेशक, भा.कृ.अ.प.	30 जुलाई 2017
3.	डॉ. एन.एस. राठौर	उप महानिदेशक (शिक्षा), भा.कृ.अ.प. और सदस्य ईएमसी व बीओएम, आरएलबीसीएयू	4 अगस्त 2017
4.	डॉ. ए.के. सिंह	पूर्व कुलपति, आरएसकेवीवी, ग्वालियर तथा सदस्य, बीओएम, आरएलबीसीएयू	4 अगस्त 2017 4-6 फरवरी 2018 14 जून 2018
5.	डॉ. ए.के. सिक्का	पूर्व उप महानिदेशक (एनआरएम), भा.कृ.अ.प. और सदस्य, ईएमसी, आरएलबीसीएयू	4 अगस्त 2017
6.	श्री सी. राउल	सचिव, भा.कृ.अ.प. और सदस्य, बीओएम व ईएमसी, आरएलबीसीएयू	4 अगस्त 2017

क्र.सं.	नाम	पदनाम	तिथि
7.	डॉ. जे.पी. मिश्रा	परामर्शक, नीति आयोग और सदस्य, बीओएम, आरएलबीसीएयू	4 अगस्त 2017
8.	डॉ. एस.के. मल्होत्रा	कृषि आयुक्त, कृषि सहकारिता एवं किसान कल्याण विभाग, भारत सरकार, नई दिल्ली और सदस्य, बीओएम आरएलबीसीएयू	4 अगस्त 2017
9.	डॉ. के.आर. धीमन	पूर्व कुलपति, डॉ. वाई.एस. परमार, बागवानी एवं वन विश्वविद्यालय तथा और सदस्य, बीओएम, आरएलबीसीएयू	4 अगस्त 2017 14 जून 2018
10.	डॉ. बी.वी. पाटिल	पूर्व कुलपति, यूएएस, रायचुर और सदस्य, बीओएम, आरएलबीसीएयू	4 अगस्त 2017 14 जून 2018
11.	श्री एन. कुमार	सदस्य, बीओएम, देवराहल्ली, डाकघर, लक्ष्मीनगर, ताल्लुक, जिला टुमकुर, कर्नाटक	4 अगस्त 2017 14 जून 2018
12.	श्रीमती प्रमोद कुमारी राजपूत	सदस्य, बीओएम, आरएलबीसीएयू - झांसी	4 अगस्त 2017 14 जून 2018
13.	श्री महेन्द्र प्रताप सिंह यादव	सदस्य, बीओएम, आरएलबीसीएयू - पन्ना	4 अगस्त 2017 14 जून 2018
14.	श्री गोपाल दास पालिवाल	सदस्य, बीओएम, आरएलबीसीएयू - हमीरपुर	4 अगस्त 2017 14 जून 2018
15.	डॉ. मृदुला बिल्लौर	अधिष्ठाता कृषि, आरएसकेवीवी, ग्वालियर और सदस्य, बीओएम आरएलबीसीएयू	4 अगस्त 2017 06 फरवरी 2018
16.	डॉ. पंजाब सिंह	माननीय कुलाधिपति, आरएलबीसीएयू	11 अक्तूबर 2017 20 मई 2018
17.	श्री हरी शंकर	अपर जिलाधीश (नगर), झांसी	28 नवम्बर 2017
18.	डॉ. अरविन्द शुक्ला	परियोजना निदेशक, सूक्ष्म एवं द्वितीयक पोषण, आईआईएसएस, भोपाल	19 दिसम्बर 2017
19.	डॉ. बी. गंगवार	पूर्व निदेशक, आईआईएफएसआर, मोदीपुरम	20 दिसम्बर 2017
20.	डॉ. जे.पी. यादव	अधिष्ठाता, कृषि अभियांत्रिकी, सीएईटी, इटावा	22 दिसम्बर 2017
21.	डॉ. जी.पी. श्रीवास्तव	पूर्व निदेशक (अनुसंधन), सीएसएयूए टी, कानपुर	24 दिसम्बर 2017
22.	डॉ. लल्लू	प्राध्यापक एवं अध्यक्ष, फसल कार्यिकी, सीएसएयूए टी, कानपुर	29 दिसम्बर 2017
23.	श्री सी.पी. तिवारी	नगर दंडाधिकारी, झांसी एवं कुलसचिव, बीयू, झांसी	19 जनवरी 2018
24.	श्री अमित यादव	उप निदेशक, मंडी परिषद, झांसी	23 जनवरी 2018
25.	डॉ. प्रभात कुमार	राष्ट्रीय समन्वयक, एनएईएचपी, भा.कृ.अ.प., नई दिल्ली	27 जनवरी 2018 27 जून 2018
26.	डॉ. वाई.सी. गुप्ता	प्राध्यापक एवं अध्यक्ष, भूदृश्यनिर्माण, डॉ. वाई.एस. परमार बागवानी एवं वानिकी विश्वविद्यालय, सोलन	27 जनवरी 2018
27.	डॉ. आर.के. मित्तल	पूर्व कुलपति, डॉ. आर.ए.यू, पूसा, समस्तीपुर	4-6 फरवरी 2018
28.	डॉ. शंकर लाल	पूर्व निदेशक, आईआईपीआर, कानपुर	
29.	डॉ. के.डी. उपाध्याय	पूर्व अधिष्ठाता, कृषि, सीएसयूए टी, कानपुर	

क्र.सं.	नाम	पदनाम	तिथि
30.	डॉ. जे.बी. चौधरी	पूर्व कुलपति, सीसीएसएएचयू, हिसार और जीबीपीयूए टी, पंतनगर	24 फरवरी 2018
31.	डॉ. आर.वी. कुमार	कार्यवाहक निदेशक, आईजीएफआरआई, झांसी	24 फरवरी 2018
32.	श्री आशीष गुप्ता	अपर जिलाधीश (नगर), दतिया	25 फरवरी 2018
33.	श्री पुरुषोत्तम रूपाला	माननीय केन्द्रीय कृषि एवं किसान कल्याण राज्य मंत्री	27 फरवरी 2018
34.	डॉ. ओ.पी. चतुर्वेदी	पूर्व निदेशक, सीएएफआरआई, झांसी	7 मार्च 2018
35.	श्री तेज प्रताप	पूर्व कुलपति, एसकेयूएएस टी, श्रीनगर	12 मार्च 2018
36.	कर्नल सुदीप रजौरा	कर्नल, छावनी, झांसी	13 मार्च 2018
37.	डॉ. कमल कटियार	उप निदेशक, कृषि, झांसी, उत्तर प्रदेश	16 मार्च 2018
38.	डॉ. उमेश कटियार	उप निदेशक, पादप सुरक्षा, झांसी, उत्तर प्रदेश	16 मार्च 2018
39.	डॉ. राजीव वर्मा	नींबूवर्गीय फल विशेषज्ञ, बरूआ सागर, झांसी	17 मार्च 2018
40.	डॉ. अजय सोनी	जिला विकास प्रबंधक, नाबार्ड, झांसी	20 मार्च 2018
41.	डॉ. ए.के. मालवीय	सहायक वन संरक्षक, झांसी	21 मार्च 2018
42.	डॉ. एस.बी. मिश्रा	अपर निदेशक, स्वास्थ्य विभाग, झांसी	22 मार्च 2018
43.	डॉ. ए.के. निगम	विभागाध्यक्ष, सिविल अभियांत्रिकी विभाग, बीआईटी, झांसी, विशेष आमंत्रित सदस्य	18 अप्रैल 2018
44.	डॉ. अनिल सक्सेना	अध्यक्ष, सिविल अभियांत्रिकी विभाग, एमआईटी, ग्वालियर तथा सदस्य, भवन एवं निर्माण समिति	18 अप्रैल 2018
45.	डॉ. एस.के. ध्यानी	पूर्व निदेशक, सीएएफआरआई, झांसी	28 मई 2018
46.	डॉ. अनिल गर्ग	कार्यवाहक निदेशक, सीएएफआरआई, झांसी	28 मई 2018
47.	डॉ. मसूद अली	पूर्व निदेशक, आईआईपीआर, कानपुर	12 फरवरी 2018
48.	डॉ. भूप सिंह, अध्यक्ष	एनआरडीएमएस और एनएसडीआई प्रभाग, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग, नई दिल्ली	5 मई 2018
49.	डॉ. एस.पी. सिंह	प्राध्यापक एवं अध्यक्ष, भूगर्भ विज्ञान विभाग, बीयू, झांसी	5 मई 2018
50.	डॉ. ए.के. सिंह	प्रधान वैज्ञानिक, एनआरडीएमएस और एनएसडीआई प्रभाग, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग, नई दिल्ली	5 मई 2018
51.	श्री विजय शर्मा	पूर्व सचिव, विदेश मंत्रालय तथा न्यासी मंडल के अध्यक्ष, विश्व कृषि वानिकी केन्द्र, नैरोबी	5 मई 2018
52.	श्री एलेक्जेंडर मुल्लर	न्यासी मंडल के अध्यक्ष, विश्व कृषि वानिकी केन्द्र, नैरोबी	5 मई 2018
53.	डॉ. जावेद रिज़वी	क्षेत्रीय निदेशक, दक्षिण एशिया, आईसीआरएफ, नई दिल्ली	5 मई 2018

क्र.सं.	नाम	पदनाम	तिथि
54.	डॉ. रवि प्रभु	उप महानिदेशक (अनुसंधान), आईसीआरएएफ, विश्व कृषि वानिकी केन्द्र, नैरोबी	5 मई 2018
55.	डॉ. राम भजन	प्राध्यापक पीबीजी, जीबीपीयूए टी, पंतनगर	18 जून 2018
56.	डॉ. लक्ष्मी चंद	पूर्व अध्यक्ष, जैव रसायनविज्ञान, जीबीपीयूए टी, पंतनगर	19 जून 2018
57.	डॉ. भैरम सिंह	उप निदेशक, बागवानी, झांसी	22 जून 2018
58.	डॉ. पूनम सिंह	अधिष्ठाता, कृषि, सीएसएयूए टी, कानपुर	25 जून 2018
59.	डॉ. आर.ए. त्रिपाठी	पूर्व अध्यक्ष, कीटविज्ञान, सीएसएयूए टी, कानपुर	26 जून 2018
60.	डॉ. आरिफ ब्रॉडवे	निदेशक (विस्तार), एसएचयूएटीएस, इलाहाबाद	28 जून 2018

12. संकाय सदस्यों की सम्मेलनों/प्रशिक्षणों/बैठकों में प्रतिभागिता

विश्वविद्यालय के संकाय सदस्यों ने अंतरराष्ट्रीय/राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित विभिन्न सम्मेलनों/प्रशिक्षणों और महत्वपूर्ण बैठकों में शोध-पत्र/प्रतिवेदन प्रस्तुत करने तथा विभिन्न शैक्षणिक/अनुसंधान संबंधी मुद्दों में योगदान देने के लिए भाग लिया।

सम्मेलनों/कार्यशालाओं में प्रतिभागिता

क्र.सं.	सम्मेलन का नाम	तिथि और स्थान	नाम एवं पदनाम
1.	जैवप्रौद्योगिकी एवं जैविक विज्ञानों पर अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन	अभियांत्रिकी एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, कोलकाता में 25-26 अगस्त 2017	डॉ. साधना सिंह सागर, शिक्षण एसोसिएट (सूक्ष्मजीवविज्ञान), रानी लक्ष्मी बाई केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, झांसी
2.	भा.कृ.अ.प.-चना पर एआईसीआरपी की 21वीं वार्षिक समूह बैठक	भा.कृ.अ.प.- सीआईएई, भोपाल में 28-30 अगस्त 2017	डॉ. मीनाक्षी आर्य, वैज्ञानिक (पादप रोगविज्ञान), रानी लक्ष्मी बाई केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, झांसी डॉ. अंशुमान सिंह, वैज्ञानिक (आनुवंशिकी एवं पादप प्रजनन), रानी लक्ष्मी बाई केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, झांसी
3.	टिकाऊ विकास के लिए कृषि एवं जैव विविधता संरक्षण में हुई प्रगति पर अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन	सीसीएस विश्वविद्यालय, मेरठ में 27-28 अक्तूबर 2017	डॉ. अमित कुमार सिंह, शिक्षण एसोसिएट (सस्योत्तर प्रौद्योगिकी), रानी लक्ष्मी बाई केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, झांसी
4.	इंडियन सोसायटी ऑफ प्लांट पैथोलॉजिस्ट एंड हिमालयन फाइटोपैथोलॉजिकल सोसायटी द्वारा 'पादप रोग प्रबंधन में जैव-संगत युक्तियां' विषय पर राष्ट्रीय सिम्पोज़ियम	डॉ. वाई.एस. परमार, बागवानी एवं वानिकी विश्वविद्यालय, सोलन में 27 से 28 अक्तूबर 2017	डॉ. अनिता पूयाम, शिक्षण एसोसिएट (पादप रोगविज्ञान), रानी लक्ष्मी बाई केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, झांसी

सम्मेलनों/कार्यशालाओं में प्रतिभागिता			
क्र.सं.	**सम्मेलन का नाम**	**तिथि और स्थान**	**नाम एवं पदनाम**
5.	पोषणिक सुरक्षा तथा कृषि टिकाऊपन के लिए दलहनों पर राष्ट्रीय सिम्पोज़ियम	भा.कृ.अ.प.- भारतीय दलहन अनुसंधान संस्थान, कानपुर में 2 से 4 दिसम्बर 2017	डॉ. मीनाक्षी आर्य, वैज्ञानिक (पादप रोगविज्ञान), रानी लक्ष्मी बाई केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, झांसी डॉ. अंशुमान सिंह, वैज्ञानिक (आनुवंशिकी एवं पादप प्रजनन), रानी लक्ष्मी बाई केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, झांसी
6.	किसानों की आय दुगुनी करने के लिए नवोन्मेषी प्रौद्योगिक हस्तक्षेपों पर राष्ट्रीय सम्मेलन	सोसायटी फॉर इंटिग्रेटिड डेवलपमेंट ऑफ एग्रीकल्चर, वेटरनरी एंड इकोलॉजिकल साइंसेस, एसकेयूएएसटी, जम्मू में 08 फरवरी 2018	प्रो. डॉ. कुसुमाकर शर्मा, परामर्शक, रानी लक्ष्मी बाई केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, झांसी
7.	खाद्य सुरक्षा तथा जलवायु समुत्थानशील कृषि के लिए पादप विज्ञान एवं आण्विक जीवविज्ञान में वर्तमान प्रवृत्तियां विषय पर राष्ट्रीय सम्मेलन (पीएसएमबी 2018)	राजमाता विजय राजे सिंधिया कृषि विश्वविद्यालय (आरवीएसकेवीवी), ग्वालियर में 15-16 फरवरी 2018	उपज्ञा साह, तकनीकी सहायक, एआईसीआरपी-चना, रानी लक्ष्मी बाई केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, झांसी
8.	'किसानों की आय दुगुनी करने के लिए नवीनतम आवश्यकता आधारित एवं पारिस्थितिक मित्र प्रौद्योगिकियां' विषय पर 20वीं भारतीय कृषि वैज्ञानिक एवं किसान कांग्रेस	बीआरआईएटीएस, श्रृंगवेरपुर, इलाहाबाद में 17-18 फरवरी 2018	डॉ. अमित कुमार सिंह, शिक्षण एसोसिएट, सस्योत्तर प्रौद्योगिकी, रानी लक्ष्मी बाई केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, झांसी
	कार्यपालकों एवं प्रबंधाकों के लिए प्रगत कृषि व्यापार प्रबंधन पाठ्यक्रम	बाली, इंडोनेशिया में 5-9 मार्च 2018	डॉ. मुकेश श्रीवास्तव, कुलसचिव, रानी लक्ष्मी बाई केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, झांसी
9.	'गणित, सांख्यिकी एवं सूचना प्रौद्योगिकियों में परिगणन की नवीनतम प्रवृत्तियां' विषय पर द्वितीय अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन - भारत विज्ञान परिषद	बुंदेलखंड विश्वविद्यालय, झांसी में 9-11 मार्च 2018	डॉ. अमित कुमार जैन, शिक्षण एसोसिएट, कम्प्यूटर विज्ञान, रानी लक्ष्मी बाई केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, झांसी
10.	कृषि, सम्बद्ध तथा व्यावहारिक विज्ञानों पर अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन (आईसीएएएएस 2018)	जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली में 28-29 अप्रैल 2018	उपज्ञा साह, तकनीकी सहायक, एआईसीआरपी-चना, रानी लक्ष्मी बाई केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, झांसी
11.	भा.कृ.अ.प. के नोडल अधिकारियों की बैठक	सीएआरआई, पोर्ट ब्लेयर में 4-6 मई 2018	डॉ. मुकेश श्रीवास्तव, कुलसचिव, रानी लक्ष्मी बाई केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, झांसी

13. पुरस्कार एवं सम्मान

सम्मान/पुरस्कार/अध्येतावृत्तियां

- डॉ. अरविन्द कुमार, कुलपति को भा.कृ.अप.-भारतीय तिलहन अनुसंधान संस्थान (आईआईओआर) तथा एआईसीआरपी- तिलहन (सूरजमुखी, कुसुम, अरण्ड), एआईसीआरपी-तिल और रामतिल तथा एआईसीआरपी-अल्सी के छठवें पंचवर्षीय समीक्षा दल का अध्यक्ष नामित किया गया।
- डॉ. अरविन्द कुमार, कुलपति को स्नातकोत्तर एवं पीएच.डी. कार्यक्रमों के शैक्षणिक विनियम विकसित करने, स्नातकोत्तर तथा पीएच.डी. विषयों में एकरूपता लाने के लिए नामों तथा पाठ्यक्रमों को परिभाषित करने और स्नातकोत्तर एवं पीएच.डी. उपाधि के विषयों के पाठ्यक्रमों का संशोधन करने के लिए भा.कृ.अ.प. द्वारा गठित मंडल विषय-वस्तु क्षेत्र समितियों के राष्ट्रीय कोर समूह का अध्यक्ष नामित किया गया।
- डॉ. मीनाक्षी आर्य, वैज्ञानिक (पादप रोगविज्ञान) को बोस साइंस सोसायटी, तमिल नाडु वैज्ञानिक अनुसंधान संगठन, तमिलनाडु की अध्येतावृत्ति प्रदान की गई।
- डॉ. मीनाक्षी आर्य, वैज्ञानिक (पादप रोगविज्ञान) को इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एग्रीकल्चरल, एन्वायरमेंट एंड बायोटेक्नोलॉजी के संपादन मंडल का सदस्य नामित किया गया।

14. प्रकाशन

सम्मेलन शोध-पत्र सारांश/शोध-पत्र

1. सागर एस.एस. और कायस्थ एस. 2017. स्माल कालोनी वरियंट सलेक्शन, बायोफिल्म इंडक्शन एंड इंटरस्पिसीज़ इंटरएक्शन ऑफ ओक्यूलर क्लिनिकल स्यूडोमोनास एरूगिनोसा. बायोस्पैक्ट्रम, जैवप्रौद्योगिकी और जैविक विज्ञानों पर अभियांत्रिकी एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, कालकोता द्वारा 25-26 अगस्त 2017 को आयोजित अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में।
2. आर्य मीनाक्षी और शर्मा कुसुमाकर, 2017. फार्मर-सैंट्रिक कैपेसिटी-बिल्डिंग एंड इंट्रेप्रेन्यूरियल डेवलपमेंट फॉर सस्टेनेबल एग्रीकल्चर. सीआईएफए, भुवनेश्वर में विकास युक्तियों के माध्यम से कृषि एवं जलजंतुपालन के द्वारा किसानों की आय में सुधार पर आयोजित प्रथम राष्ट्रीय सम्मेलन. 5-7 जनवरी 2018. मु.पृ.25.
3. आर्य मीनाक्षी, सिंह अंशुमान और साह उपज्ञा. 2017. फैक्टर्स इफेक्टिंग डेवलपमेंट ऑफ कॉलर रॉट डिज़िज़ आफ चिकपी इन बुंदेलखंड रीज़न। विविधीकृत खेती की स्थितियां एवं आईपीएस वार्षिक (उत्तरी अंचल) सम्मेलन के अंतर्गत शेर-ए-कश्मीर कृषि विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, जम्मू (जम्मू और कश्मीर) में पारिस्थितिक दृष्टि से टिकाऊ पादप रोग प्रबंध पर आयोजित राष्ट्रीय सिम्पोज़ियम मे, 13-14 नवम्बर 2017.
4. पाण्डे राजेश कुमार और आर्य मीनाक्षी, 2017. इंटीग्रेटिड मैनेजमेंट ऑफ डिज़िज़ काम्प्लैक्स कॉस्ड बाई इंटरएक्शन ऑफ रूट लेज़ियन नेमेटोड एंड फ्यूज़ेरियम ऑक्सीस्पोरम एफ. एसपी. साइसेरी ऑन चिकपी बाइ ड्यल सॉइल एप्लीकेशन एंड सीड प्राइमिंग टू अवॉइड द लॉस इन ग्रोथ एंड यील्ड। भा.कृ.अ.प.-भारतीय दलहन अनुसंधान संस्थान, कानपुर में पोषणिक सुरक्षा और कृषि टिकाऊपन के लिए दलहनों पर आयोजित राष्ट्रीय सिम्पोज़ियम में, 2-4 दिसम्बर, मु.पृ. 248.
5. सिंह अंशुमान, आर्य मीनाक्षी, साह उपज्ञा और प्रियदर्शिनी एस.के. 2017. जर्मप्लाज़्म इवेल्यूशन

ऑफ चिकपी (साइसर एरिटेनियम एल.) फॉर यील्ड एंड यील्ड कांट्रीब्यूटिंग ट्रेट्स। भा.कृ.अ.प. –भारतीय दलहन अनुसंधान संस्थान, कानपुर में पोषणिक सुरक्षा और कृषि टिकाऊपन के लिए दलहनों पर आयोजित राष्ट्रीय सिम्पोज़ियम में, 2–4 दिसम्बर , मु.पृ. 158.

6. आर्य मीनाक्षी और शर्मा कुसुमाकर, 2018. ट्रांसफार्मिंग एग्रीकल्चर इन बुंदेलखंड टैक्नोलॉजिकल एंड पॉलिसी इम्प्लीकेशंस। सोसायटी फॉर इंटीग्रेटिड डेवलपमेंट ऑफ एग्रीकल्चर, वैटरनरी एंड इकोलॉजिकल साइंसिस तथा जम्मू के एस.के. कृषि विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित किसानों की आय दुगुनी करने के लिए नवोन्मेषी प्रौद्योगिकी हस्तक्षेपों पर राष्ट्रीय सम्मेलन में 08–10 फरवरी– सत्र VIII मु.पृ.2–3.

7. सिंह ए.के., चौरसिया ए.के. और मित्र एस. 2017. एसेसमेंट ऑफ एंटिऑक्सीडेंट फैक्टर्स इन एलिफेंट फुट याम (एमोफोफैलस पीओनीफोलियस डेंस्ट–निकल्सन) कल्टीवर्स ड्यूरिंग स्टोरेज। सीसीएस विश्वविद्यालय, मेरठ में 'टिकाऊ विकास के लिए कृषि एवं जैवविविधता संरक्षण में प्रगति' विषय पर आयोजित अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन मेंए 27–28 अक्तूबर.

8. साह उपज्ञा, सिंह अंशुमान और आर्य मीनाक्षी. 2018. कोरिलेशन स्टडी एंड पाथ कोफिसिएंट एनालिसिस फॉर चिकपी (साइसर एरिटीनम) इन यील्ड एंड यील्ड कांट्रीब्यूटिंग ट्रेट्स। खाद्य सुरक्षा एवं जलवायु समुत्थानशील कृषि, राष्ट्रीय पर्यावरणीय विज्ञान अकादमी, नई दिल्ली द्वारा आरएसकेवीवी, ग्वालियर में 'पादप विज्ञान और आण्विक जीवविज्ञान में वर्तमान प्रवृत्तियां' विषय पर राष्ट्रीय सम्मेलन में, 15–16 फरवरी.

9. साह उपज्ञा, आर्य मीनाक्षी और सिंह अंशुमान. 2018. इवेल्यूशन ऑफ इफेक्ट ऑफ वरियस ट्रीटमेंट्स ऑन स्क्लेरोसियम रॉल्फसी इन्फेक्टिंग चिकपी इन बुंदेलखंड. जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली में बायोलॉजिक्स रिसर्च एंड इनोवेशन सैंटर द्वारा कृषि, सम्बद्ध तथा व्यावहारिक विज्ञानों पर आयोजित अंतरराष्ट्रीय सम्मेलनों में, 28–29 अप्रैल. मु.पृ. 368–369.

10. सिंह ए.के., चौरसिया ए.के. और मित्र एस. (2018). वैल्यू एडिड प्रोडक्ट्स ऑफ एलिफेंट फुट याम (एमोर्फोफैलस पीओनीफोलियस डेंस्ट–निकल्सन)। बायोवेद रिसर्च सोसायटी, इलाहाबाद द्वारा बीआरएआईटीएस, श्रृंगवेरपुर, इलाहाबाद में 'किसानों की आय दुगुनी करने के लिए नवीनतम आवश्यकता आधाारित और पारिस्थितिक मित्र प्रौद्योगिकियां' विषय पर आयोजित 20वीं भारतीय कृषि वैज्ञानिक एवं कृषक कांग्रेस में, 17–18 फरवरी.

11. जैन अमित कुमार, सक्सेना ऋषि, अग्रवाल सौरभ, नेवाज राम और रिज़वी आर.एच. 2018. एनालिसिस ऑफ कार्बन सेक्वेस्ट्रेशन पोटेंशियल ऑफ बिलासपुर डिस्ट्रिक्ट यूज़िंग डेटा मॉडलिंग एंड कम्प्यूटर बेस्ड CO2FIX मॉडल. बुंदेलखंड विश्वविद्यालय, झांसी में 'गणित, सांख्यिकी और सूचना प्रौद्योगिकियों में कम्प्यूटरीकरण की हाल की प्रवृत्तियां' विषय पर आयोजित द्वितीय अंतरराष्ट्रीय भारतीय विज्ञान परिषद सम्मेलन में, 9–11 मार्च.

12. एब्राल घन श्याम और ठाकुर के.एस. 2018. शिफ्टिंग द कल्टीवेशन ऑफ पीचेस टू नेक्टराइन एज़ ए मैटर ऑफ चेंज ऑफ इन्वायरमेंटल कंडीशंस एट लोवर हिल्स ऑफ हिमाचल प्रदेश। बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी में मानव कल्याण के लिए पर्यावरणीय, शैक्षणिक एवं जीवविज्ञानी अनुसंधान पर आयोजित अंतरराष्ट्रीय सिम्पोज़ियम में. 25–26 मार्च. मु.पृ. 29.

13. सेमवाल दीक्षा और एब्रॉल घन श्याम, 2018.

इंस्टेंट पोटेटो कस्टर्ड मिक्स. ए न्यू एवेन्यू ऑफ इंट्रेप्रेन्यूर्शिप। शूलिनी विश्वविद्यालय, सोलन, हिमाचल प्रदेश में समकालिक खाद्य प्रसंस्करण एवं परिरक्षण प्रौद्योगिकियां विषय पर आयोजित तीसरे राष्ट्रीय सम्मेलन में. 12-13 अप्रैल. मु.पृ. 64.

लोकप्रिय लेख

1. मीनाक्षी आर्य, वैभव सिंह, अनीता पुयाम, अंशुमान सिंह, उपज्ञा साह एवं शैलजा पुनेठा, मशरुम की खेती-बुन्देलखण्ड में एक अतिरिक्त आय का स्रोत, कृषि जागरण, अप्रैल 2018.
2. अमित कुमार जैन, उषा और भालेन्द्र सिंह राजपूत. यूज ऑफ कम्प्यूटर एप्लीकेशन इन एग्रीकल्चर। राष्ट्रीय कृषि. खण्ड 12(1), जून 2017.
3. अमित कुमार जैन, कृषि क्षेत्र में कम्यूटर तकनीकी के उपयोग, राष्ट्रीय कृषि. खंड 12(1 व 2), अगस्त 2017.
4. आर.एस. बाली, रविन्द्र कौर और उषा. न्यूट्रिशनल इम्पोर्टेन्स ऑफ सीबकथॉर्न. राष्ट्रीय कृषि खण्ड(12):2, मु.पृ. 4-5, दिसम्बर 2017.
5. स्वाति मौर्या, उषा और राधे श्याम. फ्लैक्स सीड: बेनिफिसियल नेचुरल प्रोडक्ट फॉर ह्यूमन हैल्थ. राष्ट्रीय कृषि. खंड (12):2, मु.पृ. 109-110, दिसम्बर 2017.
6. उषा, राधेश्याम, मधुलिका श्रीवास्तव और बी. एस. राजपूत. इन्सेक्ट पोलिनेटर्स एंड सस्टेनेबल एग्रीकल्चर राष्ट्रीय कृषि, खण्ड (12):1, मु.पृ. 11-14. जून 2017

पुस्तकें

1. घन श्याम एब्रॉल, आशुतोष सिंह और मुकेश श्रीवास्तव. 2017. एमसीक्यू ऑन एग्रीकल्चरल साइंसिस. कल्याणी पब्लिशर्स, नई दिल्ली, आईएसबीएन:978-93-272-8265-8.
2. आशुतोष सिंह, प्रशांत यादव, सुष्मा यादव और अंशुमान सिंह. 2017. गेटवे टू आईसीएआर-जेआरएफ (प्लांट साइंस). साइंटिफिक इंटरनेशनल पब्लिकेशंस, नई दिल्ली. आईएसबीएन 978-93-87465-67-1.
3. आशुतोष सिंह, उषा, अमित कुमार जैन, सुशील कुमार सिंह और अंशुमान सिंह. 2017. एग्रीकल्चरल साइंसेस एट ए ग्लांस. साइटफिक इंटरनेशनल, नई दिल्ली। आईएसबीएन-978-93-80000-00-0
4. विक्रम जीत सिंह, आशुतोष सिंह, राधे श्याम और अमित कुमार जैन. 2017. ऑब्जेक्टिव सीड साइंस एंड टैक्नोलॉजी. साइंटिफिक इंटरनेशनल, नई दिल्ली. आईएसबीएन-978-93-87465-75-6

पुस्तक अध्याय

1. पंकज लवानिया, भालेन्द्र सिंह राजपूत, उषा ठाकुर और मीनाक्षी आर्य 2017. फोरेस्ट प्रोटेक्शन एंड लेजिस्लेशन। एमसीक्यू ऑफ एग्रीकल्चरल साइंसेस में. संपादक घन श्याम एब्रॉल, आशुतोष सिंह और मुकेश श्रीवास्तव. मु. पृ. 362-376. कल्याणी पब्लिशर्स, आईएसबीएन 978-272-8265-8
2. अमित कुमार जैन, 2017. कम्प्यूटर एप्लीकेशन एंड स्टेटिस्टिक्स, एमसीक्यू ऑफ एग्रीकल्चरल साइंसेस में. संपादक घन श्याम एब्रॉल, आशुतोष सिंह और मुकेश श्रीवास्तव. मु.पृ. 362-376. कल्याणी पब्लिशर्स, आईएसबीएन 978-272-8265-8
3. आशुतोष सिंह और मनोज कुमार सिंह. 2017. सैल बायोलॉजी, एमसीक्यू ऑफ एग्रीकल्चरल साइंसेस में. संपादक घन श्याम एब्रॉल, आशुतोष सिंह और मुकेश श्रीवास्तव. मु.पृ. 362-376. कल्याणी पब्लिशर्स, आईएसबीएन

978-272-8265-8

4. आशुतोष सिंह, ममता सिंह और अंशुमान सिंह. 2017. जेनेटिक्स एंड प्लांट ब्रीडिंग, एमसीक्यू ऑफ एग्रीकल्चरल साइंसेस में. संपादक घन श्याम एब्रॉल, आशुतोष सिंह और मुकेश श्रीवास्तव. मु.पृ. 362-376. कल्याणी पब्लिशर्स, आईएसबीएन 978-272-8265-8
5. जोशी वी.के., पानेसर पीएस और एब्रॉल घनश्याम. 2017. स्टोन फ्रूट्स वाइंस, एमसीक्यू ऑफ एग्रीकल्चरल साइंसेस में. संपादक घन श्याम एब्रॉल, आशुतोष सिंह और मुकेश श्रीवास्तव. मु.पृ. 362-376. कल्याणी पब्लिशर्स, आईएसबीएन 978-272-8265-8

समीक्षा पत्र

1. एब्रॉल, घन श्याम, ठाकुर के.एस., पाल, आर. और पुनेठा, एस. 2017. रोल आफॅ कैल्सियम इन मेंटीनेंस ऑफ पोस्ट हार्वेस्ट क्वालिटी ऑफ हॉर्टीकल्चरल क्रॉप्स. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ इकोनॉमिक प्लांट्स, 04(02): 088-093.
2. आर्य, मीनाक्षी. 2018. फसल रोगों के प्रबंधन के लिए जैव प्रौद्योगिकी में पैराडाइम्स विकसित करना। कृषि, पर्यावरण और जैव प्रौद्योगिकी के अंतर्राष्ट्रीय जर्नल, 11(03): 555-564।

15. वर्ष 2018-19 के लिए भावी कार्यक्रम

- बी.एस. (ऑनर्स) कृषि, बी.एससी. (ऑनर्स) बागवानी और बी.एससी. (ऑनर्स) वानिकी कार्यक्रमों को जारी रखना।
- शैक्षणिक एवं प्रशासिनक खंड, छात्रावासों तथा संकाय निवासों के निर्माण का सिविल निर्माण कार्य जारी रखना।
- कृषि, बागवानी और वानिकी में पूर्व स्नातक शिक्षा के लिए उन्नत प्रावधन।
- चुने हुए क्षेत्रों में अनुसंधान एवं विस्तार शिक्षा की गतिविधियों के बुनियादी ढांचों का सबलीकरण
- कृषि एवं सम्बद्ध विज्ञानों में चुने हुए पाठ्यक्रमों में स्नातकोत्तर कार्यक्रमों मे प्रवेश।

अनुबंध I

विश्वविद्यालय के प्रबंध मंडल का संघठन*

(रानी लक्ष्मी बाई केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय अधिनियम, 2014 की अनुसूची के पैरा 12(1) के अनुसार)

क्र.सं.	संघटन	नाम और पदनाम	स्तर
1.	कुलपति (अनुसूची की धारा 12 (1) (i)	डॉ. अरविन्द कुमार, कुलपति, आरएलबीसीएयू, झांसी	पदेन अध्यक्ष
2.	चार सचिव, मध्य प्रदेश व उत्तर प्रदेश राज्यों के कृषि एवं पशुपालन, मात्स्यिकी एवं बागवानी विभागों के प्रभारी सचिवों में से जिन्हें विजिटर द्वारा क्रमानुसार नामित किया जाना है : बशर्ते कि एक विशेष समय में मंडल में एक राज्य के दो से अधिक सचिव नहीं होंगे। (अनुसूची की धारा 12(1)(ii) के अनुसार)	प्रधान सचिव, कृषि विभाग, उत्तर प्रदेश सरकार, लखनऊ-226001 प्रधान सचिव, पशुपालन विभाग, उत्तर प्रदेश सरकार, लखनऊ-226001 श्री राजेश रजौरा, प्रधान सचिव, कृषि विभाग, मध्य प्रदेश सरकार, भोपाल-462003 श्री प्रभांशु कमल, प्रधान सचिव, पशुपालन विभाग, मध्य प्रदेश सरकार, भोपाल-462003	सदस्य सदस्य सदस्य सदस्य
3.	विजिटर द्वारा नामित तीन प्रतिष्ठित वैज्ञानिक (अनुसूची की धारा 12 (1)(iii) के अनुसार)	डॉ. एस.सी. मुदगल, पूर्व महानिदेशक, यूपीसीएआर, लखनऊ एवं पूर्व कुलपति, जीबीपीयूएटी, पंतनगर, 6, राजदीप इन्कलेव, फेज-II, 100 फुट रोड, दयाल बाग, आगरा-282005 डॉ. के.आर. धीमन, पूर्व कुलपति, वाई.एस. परमार, बागवानी एवं वानिकी विश्वविद्यालय, सोलन, हिमाचल प्रदेश, ताशीलिंग कॉटेज, बीसीएस के नीचे, फेस-3, नया शिमला, शिमला-171009 डॉ. बी.वी. पाटिल, शिक्षा निदेशक एवं पूर्व कुलपति, कृषि विज्ञान विश्वविद्यालय, रायचुर-584104	सदस्य सदस्य सदस्य
4.	विजिटर द्वारा नामित कृषि विकास में विशेष ज्ञान से युक्त कृषि आधारित उद्योगों या विनिर्माता का प्रतिनिधित्व करने वाला एक विशिष्ट व्यक्ति (अनुसूची की धारा 12 (1)(V) के अनुसार)	श्री एन. कुमार, देवराहल्ली, डाकघर लक्ष्मीनगर, ताल्लुक सिरसा, जिला टुमकुर-572139, कर्नाटक, द्वारा सिद्देश्वरा गौड़ा, सेवानिवृत्त एस.पी. कन्ना कॉटेज, 16वां क्रॉस, एसआईटी एक्सटेंशन, नंदीश लेआउट टुमकुर-572103	सदस्य
5.	भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद का प्रतिनिधित्व करते हुए उप महानिदेशक (शिक्षा) (अनुसूची की धारा 12 (1)(V) के अनुसार)	डॉ. एन.एस. राठौड़, उप महानिदेशक (शिक्षा), भा.कृ.अ.प., कृषि अनुसंधान भवन-II, पूसा, नई दिल्ली-110012	सदस्य
6.	कुलपति द्वारा क्रम के आधार पर नामित महाविद्यालय का एक अधिष्ठाता तथा एक निदेशक (अनुसूची की धारा 12 (1)(vi) के अनुसार)	डॉ. (श्रीमती) मृदुला बिल्लौर, अधिष्ठाता, बी.एम. कृषि महाविद्यालय, खण्डवा-450001 डॉ. पी.के. घोष, निदेशक, आईजीएफआरआई, झांसी-284003	सदस्य सदस्य

क्र.सं.	संघटन	नाम और पदनाम	स्तर
7.	मध्य प्रदेश और उत्तर प्रदेश राज्यों में क्रमानुसार कुलपति द्वारा नामित बुंदेलखंड में कम से कम एक महिला कृषक का प्रतिनिधित्व करने वाली एक प्रतिनिधिसहित तीन व्यक्ति। बशर्ते कि एक समय में मंडल में राज्य एक राज्य के दो से अधिक प्रतिनिधि नहीं होंगे। (अनुसूची की धारा 12 (1)(vii) के अनुसार)	श्रीमती प्रमोद कुमारी राजपूत, गोंडु कम्पाउंड, सिविल लाइंस, झांसी-284001 श्री महेन्द्र प्रताप सिंह यादव, यादव काम्प्लैक्स, कुमकुम टॉकीज के निकट, पन्ना-411002 श्री गोपाल दास पालीवाल, कस्बा- कुरारा, वार्ड 11, पालीवाल मोहल, जनपथ हमीरपुर-210505	सदस्य सदस्य सदस्य
8.	एक परामर्शक (कृषि), योजना आयाग (अनुसूची की धारा 12 (1)(viii) के अनुसार)	डॉ. जे.पी. मिश्र, परामर्शक (कृषि), नीति आयोग, भारत सरकार, नई दिल्ली-110049	सदस्य
9.	विजिटर द्वारा नामित प्राकृतिक संसाधन या पर्यावरण प्रबंध पर एक विशिष्ट प्राधिकारी (अनुसूची की धारा 12 (1)(ix) के अनुसार)	प्रो. अनिल कुमार सिंह, पूर्व उप महानिदेशक (एनआरएम), भा.कृ.अ.प.; कुलपति, राजमाता विजय राजे सिंधिया कृषि विश्वविद्यालय, ग्वालियर-474002	सदस्य
10.	भारत सरकार के संबंधित सचिव द्वारा नामित कृषि एवं पशुपालन से संबंधित भारत सरकार के विभागों का प्रतिनिधित्व करने वाले कम से कम संयुक्त सचिव के स्तर के दो व्यक्ति (अनुसूची की धारा 12 (1)(x) के अनुसार)	श्री संजय लोहिया, संयुक्त सचिव (फसलें), कृषि एवं सहकारिता विभाग, भारत सरकार, कृषि भवन, नई दिल्ली-110001 श्रीमती रजनी सेखरी सिबल, संयुक्त सचिव (सी और डीडी), पशुपालन, डेरी और मात्स्यिकी विभाग, भारत सरकार, कृषि भवन, नई दिल्ली-110001	सदस्य सदस्य
11.	कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा विभाग, भारत सरकार का प्रतिनिधित्व करने वाले सचिव का एक नामित (अनुसूची की धारा 12 (1)(xi) के अनुसार)	अपर सचिव, डेयर एवं सचिव, भा.कृ.अ.प., कृषि भवन, नई दिल्ली-110 001	सदस्य
12.	विश्वविद्यालय का कुलसचिव - सचिव (अनुसूची की धारा 12 (1)(xii) के अनुसार)	डॉ. मुकेश श्रीवास्तव, (अप्रेल 2016 से)	सचिव

*14 जून, 2018 तक

अनुबंध II

विश्वविद्यालय की वित्त समिति का संघठन

(रानी लक्ष्मी बाई केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय अधिनियम, 2014 की अनुसूची के पैरा 17(1) के अनुसार)

क्र.सं.	संघटन	नाम और पदनाम	स्तर
1.	कुलपति (अनुसूची की धारा 17(1) (i) के अनुसार)	डॉ. अरविन्द कुमार, कुलपति, आरएलबीसीएयू, झांसी	पदेन अध्यक्ष
2.	वित्तीय सलाहकार, कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा विभाग या कम से कम उप सचिव स्तर का उसका नामिति (अनुसूची की धारा 17(1)(ii) के अनुसार)	वित्तीय सलाहकार, कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा विभाग, भारत सरकार, कृषि भवन, नई दिल्ली-110001	सदस्य
3.	मण्डल द्वारा नामित तीन व्यक्ति जिनमें से कम से कम एक मंडल का सदस्य होगा (अनुसूची की धारा 17 (1)(iii) के अनुसार)	डॉ. एन.एस. राठौड़, उप महानिदेशक (शिक्षा), भा.कृ.अ.प., केएबी-II , पूसा, नई दिल्ली-110012 डॉ. ए.के. सिंह, कुलपति, राजमाता विजय राजे सिंधिया कृषि विश्वविद्यालय, ग्वालियर-474002 (मध्य प्रदेश) डॉ. एम. प्रेमजीत सिंह, कुलपति, केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, इम्फाल-795004 (मणिपुर)	सदस्य सदस्य सदस्य
4.	विजिटर द्वारा नामित तीन व्यक्ति (अनुसूची की धारा 17 (1)(iv) के अनुसार)	डॉ. पी.एल. गौतम, पूर्व अध्यक्ष, पीपीवी एवं एफआर प्राधिकरण तथा पूर्व कुलपति, जीबीपीयूए और टी, पंतनगर; म.सं. 118, एचपी हाउसिंग बोर्ड कालोनी, बिंद्राबन, पालमपुर जिला, कांगड़ा-176061 (हिमाचल प्रदेश) प्रो. डी.पी. रे, पूर्व कुलपति, ओयूए और टी, भुवनेश्वर; एचआईजी-105, कलिंग विहार, के-5, डाकघर पात्रपाड़ा, जिला खुर्दा, भुवनेश्वर-751019, ओडिशा श्री बी.एस. रामासामी, अपर सचिव एवं वित्तीय सलाहकार (सेवानिवृत्त), इस्पात एवं खान मंत्रालय (भारत सरकार); 140, मंदाकिनी इन्कलेव, अलकनंदा, नई दिल्ली-110019	सदस्य सदस्य सदस्य
5.	विश्वविद्यालय का लेखानियंत्रक (अनुसूची की धारा 17 (1)(v) के अनुसार)	रिक्त	सदस्य सचिव

अनुबंध III

बी.एससी. (ऑनर्स) कृषि प्रथम, द्वितीय, तृतीय व चतुर्थ वर्ष के लिए शिक्षण संकाय

क्र.सं.	संकाय	पदनाम	पाठ्यक्रम शीर्षक
I. सेमिस्टर			
1.	डॉ. मधुलिका पाण्डे	शिक्षण एसोसिएट (सस्यविज्ञान), आरएलबीसीएयू, झांसी	सस्यविज्ञान के मूल तत्व मानव मूल्य एवं नीति प्रक्षेत्र फसलें-I (खरीफ)
2.	डॉ. सुशील कुमार सिंह	शिक्षण एसोसिएट (मृदा विज्ञान), आरएलबीसीएयू, झांसी	मृदा के मूल तत्व
3.	डॉ. रंजीत पाल	शिक्षण एसोसिएट (फल विज्ञान), आरएलबीसीएयू, झांसी	बागवानी के मूल तत्व
4.	डॉ. भालेन्द्र सिंह राजपूत	शिक्षण एसोसिएट (कृषिवानिकी), आरएलबीसीएयू, झांसी	वानिकी का परिचय
5.	डॉ. आशुतोष सिंह	शिक्षण एसोसिएट (जैवप्रौद्योगिकी एवं जैव-रसायनविज्ञान), आरएलबीसीएयू, झांसी	पादप जैव-रसायनविज्ञान एवं जैवप्रौद्योगिकी के मूल तत्व पादप जैवप्रौद्योगिकी के सिद्धांत
6.	डॉ. एस.के. शुक्ला	शिक्षण एसोसिएट (जैवप्रौद्योगिकी एवं जैव-रसायनविज्ञान), आरएलबीसीएयू, झांसी	पादप जैव-रसायनविज्ञान एवं जैवप्रौद्योगिकी के मूल तत्व
7.	डॉ. धीरज मिश्रा	शिक्षण एसोसिएट (कृषि प्रसार), आरएलबीसीएयू, झांसी	ग्रामीण समाजविज्ञान एवं शिक्षा मनोविज्ञान, कृषि विरासत, ग्रामीण समाजविज्ञान एवं शिक्षा मनोविज्ञान के मूल तत्व
8.	डॉ. सुषमा	अतिथि संकाय, आरएलबीसीएयू, झांसी	प्राथमिक गणित
9.	डॉ. अकला जैन	अतिथि संकाय (अंग्रेजी) आरएलबीसीएयू, झांसी	अंग्रेजी में अवधारणा तथा संचार कौशल
10.	डॉ. उषा	शिक्षण एसोसिएट (कीटविज्ञान), आरएलबीसीएयू, झांसी	फसल नाशीजीव एवं भंडारित अनाज के नाशीजीव तथा उनका प्रबंधन, एनएसएस
11.	डॉ. ए.एस. काले	शिक्षण एसोसिएट, आरएलबीसीएयू, झांसी	एनएसएस
12.	डॉ. अंशुमान सिंह	वैज्ञानिक, आनुवंशिकी एवं पादप प्रजनन,आरएलबीसीएयू, झांसी	पादप प्रजनन के मूल तत्व

क्र.सं.	संकाय	पदनाम	पाठ्यक्रम शीर्षक
13.	डॉ. शैलजा पुनेठा	शिक्षण एसोसिएट (सब्जी विज्ञान), आरएलबीसीएयू, झांसी	सब्जियों तथा मसालों की उत्पादन प्रौद्योगिकी
14.	डॉ. अभिषेक कालिया	शिक्षण एसोसिएट (कृषि अर्थशास्त्र), आरएलबीसीएयू, झांसी	कृषि वित्त एवं सहकारिता, कृषि व्यवसाय प्रबंधन के मूल तत्व
15.	डॉ. अमित तोमर	शिक्षण एसोसिएट (सस्यविज्ञान), आरएलबीसीएयू, झांसी	फसल उत्पादन प्रौद्योगिकी -१ (खरीफ फसलें)
16.	डॉ. ए.बी. मजूमदार	प्रधान वैज्ञानिक (सेवानिवृत्त), आईजीएफआरआई, झांसी	पशुधान एवं कुक्कुटपालन प्रबंधन
17.	डॉ. विनीत कुमार	एसोसिएट प्राध्यापक, बुंदेलखंड विश्वविद्यालय, झांसी	पर्यावरण अध्ययन एवं आपदा प्रबधान
18.	डॉ. अमित कुमार जैन	शिक्षण एसोसिएट (कम्प्यूटर अनुप्रयोग), आरएलबीसीएयू, झांसी	कृषि-सूचना प्रणाली
19.	डॉ. सी.डी. मिश्रा	शिक्षण एसोसिएट (कृषि अभियांत्रिकी), आरएलबीसीएयू, झांसी	फार्म संयंत्र एवं शक्ति
20.	डॉ. शैलेन्द्र कुमार	एसोसिएट प्राध्यापक, बुंदेलखंड विश्वविद्यालय, झांसी	सांख्यिकी विधियां
21.	डॉ. समरपाल सिंह	शिक्षण एसोसिएट (सस्यविज्ञान), आरएलबीसीएयू, झांसी	प्रक्षेत्र फसलें-I (खरीफ) कृषि सूचना एवं टिकाऊ कृषि
22.	डॉ. वैभव सिंह	शिक्षण एसोसिएट (पादप रोगविज्ञान), आरएलबीसीएयू, झांसी	बागवानी ॅसलों के रोग एवं उनका प्रबंधन
23.	डॉ. घनश्याम एब्रॉल	शिक्षण एसोसिएट (सस्योत्तर प्रबंधन), आरएलबीसीएयू, झांसी	फलों तथा सब्जियों का सस्योत्तर प्रबंधन एवं मूल्य वर्धन
II. सेमिस्टर			
1.	डॉ. मीनाक्षी आर्य	वैज्ञानिक, पादप रोगविज्ञान, आरएलबीसीएयू, झांसी	पादप रोगविज्ञान के मूल तत्व
2.	डॉ. अंशुमान सिंह	वैज्ञानिक, आनुवंशिकी एवं पादप प्रजनन, आरएलबीसीएयू, झांसी	आनुवंशिकी के मूल तत्व
3.	डॉ. साधना सिंह सागर	शिक्षण एसोसिएट (सूक्ष्मजीवविज्ञान), आरएलबीसीएयू, झांसी	कृषि सूक्ष्मजीवविज्ञान, पर्यावरण विज्ञान
4.	डॉ. सी.डी. मिश्रा	शिक्षण एसोसिएट (कृषि अभियांत्रिकी), आरएलबीसीएयू, झांसी	मृदा एवं जल संरक्षण अभियांत्रिकी का परिचय, पुनर्नव्य ऊर्जा एवं हरित प्रौद्योगिकी, पुनर्नव्य ऊर्जा

क्र.सं.	संकाय	पदनाम	पाठ्यक्रम शीर्षक
5.	डॉ. अभिषेक कालिया	शिक्षण एसोसिएट (कृषि अर्थशास्त्र), आरएलबीसीएयू, झांसी	कृषि अर्थशास्त्र के मूल तत्व
6.	डॉ. अनिता पूयम	शिक्षण एसोसिएट (पादप रोगविज्ञान), आरएलबीसीएयू, झांसी	पादप रोगविज्ञान के मूल तत्व
7.	डॉ. उषा	शिक्षण एसोसिएट (कीटविज्ञान), आरएलबीसीएयू, झांसी	कीटविज्ञान के मूल तत्व, एनएसएस/एनसीसी/शारीरिक शिक्षा एवं योग क्रियाएं''
8.	डॉ. धीरज मिश्रा	शिक्षण एसोसिएट (कृषि प्रसार), आरएलबीसीएयू, झांसी	कृषि विस्तार शिक्षा के मूल तत्व
9.	डॉ. अकला जैन	अतिथि संकाय (अंग्रेजी), आरएलबीसीएयू, झांसी	संचार कौशल एवं व्यक्तित्व विकास, उद्यमशीलता विकास एवं संचार कौशल, अंग्रेजी में बौद्धिक एवं संचार कौशल
10.	डॉ. ए.एस. काले	शिक्षण एसोसिएट, आरएलबीसीएयू, झांसी	एनएसएस/एनसीसी/शारीरिक शिक्षा एवं योग क्रियाएं**
11.	डॉ. अमित तोमर	शिक्षण एसोसिएट (सस्यविज्ञान), आरएलबीसीएयू, झांसी	फसल उत्पादन प्रौद्योगिकी-II (रबी फसलें), प्रक्षेत्र फसलें-II (रबी)
12.	डॉ. प्रियंका शर्मा	शिक्षण एसोसिएट (पुष्पविज्ञान एवं भूदृश्यनिर्माण), आरएलबीसीएयू, झांसी	शोभाकारी फसलों के लिए उत्पादन प्रौद्यो. गिकी, एमएपी और भूदृश्यनिर्माण
13.	डॉ. मुकेश चंद	सहायक प्राध्यापक, बीयूएटी बांदा	पुनर्नव्य ऊर्जा एवं हरित प्रौद्योगिकी
14.	डॉ. सुशील कुमार सिंह	शिक्षण एसोसिएट (मृदा विज्ञान), आरएलबीसीएयू, झांसी	जटिल मृदा एवं उनका प्रबंधन
15.	डॉ. रंजीत पाल	शिक्षण एसोसिएट (फल विज्ञान), आरएलबीसीएयू, झांसी	फल एवं रोपण फसलों की उत्पादन प्रौद्योगिकी
16.	डॉ. एम.के. सिंह	शिक्षण एसोसिएट, आरएलबीसीएयू, झांसी	बीज प्रौद्योगिकी के सिद्धांत, पुनर्नव्य ऊर्जा
17.	डॉ. समरपाल सिंह	शिक्षण एसोसिएट (सस्यविज्ञान), आरएलबीसीएयू, झांसी	फार्मिंग प्रणाली तथा टिकाऊ कृषि, परिचयात्मक कृषि-मौसमविज्ञानी एवं जलवायु परिवर्तन, प्रक्षेत्र फसलें-II (रबी), खरपतवार प्रबंधन
18.	डॉ. एस.के. शुक्ला	शिक्षण एसोसिएट, आरएलबीसीएयू, झांसी	जैवरसायनविज्ञान

क्र.सं.	संकाय	पदनाम	पाठ्यक्रम शीर्षक
19.	डॉ. आशुतोष सिंह	शिक्षण एसोसिएट, आरएलबीसीएयू, झांसी	जैवरसायनविज्ञान
20.	डॉ. समर पाल	शिक्षण एसोसिएट, आरएलबीसीएयू, झांसी	वैकल्पिक पाठ्यक्रम
21.	डॉ. ए.बी. मजूमदार	प्रधान वैज्ञानिक (सेवानिवृत्त), आईजीएफआरआई, झांसी	शैक्षिणिक भ्रमण
22.	डॉ. प्रिंस कुमार	शिक्षण एसोसिएट, आरएलबीसीएयू, झांसी	उत्पादन अर्थशास्त्र एवं फार्म प्रबंधन
23.	डॉ. आशुतोष शर्मा	शिक्षण एसोसिएट, आरएलबीसीएयू, झांसी	कृषि प्रौद्योगिकी हस्तांतरण के लिए विस्तार विधिविज्ञान

बी.एससी. (ऑनर्स) बागवानी
प्रथम एवं द्वितीय वर्ष के लिए शिक्षण संकाय

क्र.सं.	संकाय	पद	पाठ्यक्रम शीर्षक
I. सेमिस्टर			
1.	डॉ. रंजीत पाल	शिक्षण एसोसिएट (फल विज्ञान), आरएलबीसीएयू, झांसी	बागवानी के मूल तत्व, शीतोष्ण फल फसलें
2.	डॉ. अभिषेक कालिया	शिक्षण एसोसिएट (कृषि अर्थशास्त्र), आरएलबीसीएयू, झांसी	अर्थशास्त्र एवं विपणन
3.	डॉ. एस.के. शुक्ला	शिक्षण एसोसिएट (जैवरसायनविज्ञान), आरएलबीसीएयू, झांसी	प्राथमिक पादप जैवरसायनविज्ञान
4.	डॉ. शैलेन्द्र कुमार	एसोसिएट प्राध्यापक, बुंदेलखण्ड विश्वविद्यालय, झांसी	प्राथमिक सांख्यिकी एवं कम्प्यूटर अनुप्रयोग
5.	डॉ. अमित कुमार जैन	शिक्षण एसोसिएट (कम्प्यूटर), आरएलबीसीएयू, झांसी	प्राथमिक सांख्यिकी एवं कम्प्यूटर अनुप्रयोग
6.	डॉ. अंशुमान सिंह	वैज्ञानिक, आनुवंशिकी एवं पादप प्रजनन, आरएलबीसीएयू, झांसी	आनुवंशिकी एवं कोशिकानुवंशिकी के सिद्धांत
7.	डॉ. सुशील कुमार सिंह	शिक्षण एसोसिएट (पादप कार्यिकी), आरएलबीसीएयू, झांसी	मृदा विज्ञान के मूल तत्व
8.	डॉ. आशुतोष कुमार	शिक्षण एसोसिएट (पादप कार्यिकी), आरएलबीसीएयू, झांसी	परिचयात्मक फसल कार्यिकी

क्र.सं.	संकाय	पद	पाठ्यक्रम शीर्षक
9.	डॉ. प्रियंका शर्मा	शिक्षण एसोसिएट (पुष्पविज्ञान एवं भूदृश्यनिर्माण), आरएलबीसीएयू, झांसी	भूदृश्य अवसंरचना, व्यावसायिक पुष्पविज्ञान के सिद्धांत
10.	डॉ. साधना सिंह सागर	शिक्षण एसोसिएट (कृषि सूक्ष्मजीवविज्ञान), आरएलबीसीएयू, झांसी	परिचयात्मक सूक्ष्मजीवविज्ञान
11.	डॉ. अकला जैन	अतिथि संकाय (अंग्रेजी), आरएलबीसीएयू, झांसी	संचार कौशल एवं व्यक्तित्व विकास
12.	डॉ. उषा	शिक्षण एसोसिएट, आरएलबीसीएयू, झांसी	कीटविज्ञान के मूल तत्व, एनएसएस बागवानी फसलों के सूत्रकृमि नाशीजीव तथा उनके प्रबंधन
13.	डॉ. ए.एस. काले	शिक्षण एसोसिएट, आरएलबीसीएयू, झांसी	एनएसएस
14.	डॉ. शैलजा पुनेठा	शिक्षण एसोसिएट (सब्जी विज्ञान), आरएलबीसीएयू, झांसी	शीतोष्ण सब्जी फसलें
15.	डॉ. मीनाक्षी आर्य	वैज्ञानिक, पादप रोगविज्ञान, आरएलबीसीएयू, झांसी	पादप रोगविज्ञान के मूल तत्व
16.	डॉ. अनिता पूयम	शिक्षण एसोसिएट (पादप रोगविज्ञान), आरएलबीसीएयू, झांसी	नलों, रोपण, औषधीय एवं सगंधीय फसलों के रोग
17.	डॉ. आशुतोष सिंह	शिक्षण एसोसिएट (जैवप्रौद्योगिकी), आरएलबीसीएयू, झांसी	प्राथमिक पादप जैवप्रौद्योगिकी
18.	डॉ. अमित कुमार सिंह	शिक्षण एसोसिएट (बागवानी), आरएलबीसीएयू, झांसी	बागवानी फसलों में खरपतवार प्रबंधन
19.	डॉ. घनश्याम एब्रोल	शिक्षण एसोसिएट (सस्योत्तर प्रबंधन), आरएलबीसीएयू, झांसी	खाद्य प्रौद्योगिकी के मूल तत्व
II. सेमिस्टर			
1.	डॉ. रंजीत पाल	शिक्षण एसोसिएट (फल विज्ञान), आरएलबीसीएयू, झांसी	उष्ण कटिबंधी व उपोष्ण कटिबंधी फल, रापेण नसलें
2.	डॉ. शैलजा पुनेठा	शिक्षण एसोसिएट (सब्जी विज्ञान), आरएलबीसीएयू, झांसी	उष्ण कटिबंधी व उपोष्ण कटिबंधी सब्जियों, मसाले तथा मिर्च-मसाले, परिशुद्ध खेती एवं संरक्षित खेती
3.	डॉ. एम.के. सिंह	शिक्षण एसोसिएट, आरएलबीसीएयू, झांसी	पादप प्रजनन के सिद्धांत, फल तथा रोपण फसलों का प्रजनन

क्र.सं.	संकाय	पद	पाठ्यक्रम शीर्षक
4.	डॉ. प्रियदर्शनी	शिक्षण एसोसिएट, आरएलबीसीएयू, झांसी	पादप प्रजनन के सिद्धांत
5.	डॉ. सुशील कुमार सिंह	शिक्षण एसोसिएट (मृदा विज्ञान), आरएलबीसीएयू, झांसी	मृदा उर्वरता एवं पोषण प्रबंधन, मृदा, जल एवं पादप विश्लेषण
6.	डॉ. सी.डी. मिश्रा	शिक्षण एसोसिएट (कृषि अभियांत्रिकी), आरएलबीसीएयू, झांसी	बागवानी फसलों में जल प्रबंधन, फार्म शक्ति एवं यंत्र
7.	डॉ. अमित कुमार सिंह	शिक्षण एसोसिएट (बागवानी), आरएलबीसीएयू, झांसी	पादप संवर्धन एवं नर्सरी प्रबंधन शुष्क भूमि बागवानी
8.	डॉ. साधना सिंह सागर	शिक्षण एसोसिएट (कृषि सूक्ष्मजीवविज्ञान), आरएलबीसीएयू, झांसी	पर्यावरण अध्ययन एवं आपदा प्रबंधन
9.	डॉ. आशुतोष कुमार	शिक्षण एसोसिएट, आरएलबीसीएयू, झांसी	बागवानी फसलों की वृद्धि एवं विकास
10.	डॉ. आशुतोष सिंह	शिक्षण एसोसिएट, आरएलबीसीएयू, झांसी	बागवानी फसलों की वृद्धि एवं विकास
11.	डॉ. ए.एस. काले	शिक्षण एसोसिएट, आरएलबीसीएयू, झांसी	शारीरिक एवं स्वास्थ्य शिक्षा, राष्ट्रीय सेवा योजना/राष्ट्रीय कैडेट कोर
12.	डॉ. अमित कुमार जैन	शिक्षण एसोसिएट (कम्प्यूटर अनुप्रयोग), आरएलबीसीएयू, झांसी	सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी#*
13.	डॉ. उषा	शिक्षण एसोसिएट, आरएलबीसीएयू, झांसी	फल के कीट नाशीजीव, रोपण, औषधीय एवं सगंधीय फसलें राष्ट्रीय सेवा योजना/राष्ट्रीय कैडेट कॉर्प
14.	डॉ. प्रियंका शर्मा	शिक्षण एसोसिएट (पुष्पविज्ञान), आरएलबीसीएयू, झांसी	शोभाकारी बागवानी
15.	डॉ. घनश्याम एब्रॉल	शिक्षण एसोसिएट, आरएलबीसीएयू, झांसी	परिशुद्ध खेती एवं संरक्षित खेती, शुष्क भूमि बागवानी

बी.एससी. (ऑनर्स) वानिकी
प्रथम एवं द्वितीय वर्ष के लिए शिक्षण संकाय

I. सेमिस्टर

क्र.सं.	संकाय	पद	पाठ्यक्रम शीर्षक
1.	डॉ. सुशील कुमार सिंह	शिक्षण एसोसिएट (मृदा विज्ञान), आरएलबीसीएयू, झांसी	भूगर्भ विज्ञान एवं मृदाएं

क्र.सं.	संकाय	पद	पाठ्यक्रम शीर्षक
2.	डॉ. समर पाल	शिक्षण एसोसिएट, आरएलबीसीएयू, झांसी	सस्यविज्ञान एवं बागवानी का परिचय
3.	डॉ. अमित सिंह	शिक्षण एसोसिएट, आरएलबीसीएयू, झांसी	सस्यविज्ञान एवं बागवानी का परिचय
4.	डॉ. एस.के. शुक्ला	शिक्षण एसोसिएट (जैवरसायनविज्ञान), आरएलबीसीएयू, झांसी	पादप जैवरसायनविज्ञान
5.	डॉ. अविनाश शर्मा	शिक्षण एसोसिएट (वृक्ष सुधार), आरएलबीसीएयू, झांसी	डेंड्रोलॉजी, वृक्ष सुधार, वन पारिस्थितिकी एवं जैवविविधता
6.	डॉ. सुषमा	संकाय सदस्य, आरएलबीसीएयू, झांसी	मूल गणित
7.	डॉ. ए.एस. काले	शिक्षण एसोसिएट (कृषि वानिकी), आरएलबीसीएयू, झांसी	वानिकी का परिचय, एनएसएस, वन मापन
8.	डॉ. अकला जैन	संकाय सदस्य (अंग्रेजी) आरएलबीसीएयू, झांसी	संचार एवं कौशल तथा व्यक्तित्व विकास
9.	डॉ. एम.के. सिंह	शिक्षण एसोसिएट, आरएलबीसीएयू, झांसी	वन वनस्पतिविज्ञान
10.	डॉ. अमित कुमार	शिक्षण एसोसिएट (कम्प्यूटर अनुप्रयोग), आरएलबीसीएयू, झांसी	सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी
11.	डॉ. अभिषेक कालिया	शिक्षण एसोसिएट, आरएलबीसीएयू, झांसी	शारीरिक शिक्षा-I, शारीरिक शिक्षा-II
12.	डॉ. उषा	शिक्षण एसोसिएट, आरएलबीसीएयू, झांसी	एनएसएस
13.	डॉ. पंकज लवानिया	शिक्षण एसोसिएट, आरएलबीसीएयू, झांसी	वन पारिस्थितिकी एवं जैवविविधता
14.	डॉ. सी.डी. मिश्रा	शिक्षण एसोसिएट, आरएलबीसीएयू, झांसी	वन सर्वेक्षण एवं अभियांत्रिकी
15.	डॉ. विनीत कुमार	शिक्षण एसोसिएट (कृषि अभियांत्रिकी), आरएलबीसीएयू, झांसी	पर्यावरण अधययन एवं आपदा प्रबंधन
16.	डॉ. साधना सिंह सागर	शिक्षण एसोसिएट (कृषि सूक्ष्मजीवविज्ञान), आरएलबीसीएयू, झांसी	मृदा जीवविज्ञान एवं उर्वरता
17.	डॉ. भालेन्द्र सिंह राजपूत	शिक्षण एसोसिएट (वानिकी), आरएलबीसीएयू, झांसी	कृषि वानिकी के सिद्धांत
II. सेमिस्टर			
1.	डॉ. आशुतोष कुमार	शिक्षण एसोसिएट, आरएलबीसीएयू, झांसी	पादप कार्यिकी
2.	डॉ. आशुतोष सिंह	शिक्षण एसोसिएट, आरएलबीसीएयू, झांसी	पादप कार्यिकी
3.	डॉ. अंशुमान सिंह	वैज्ञानिक, आनुवंशिकी एवं पादप प्रजनन, आरएलबीसीएयू, झांसी	पादप कोशिकानुवंशिकी एवं आनुवंशिकी

क्र.सं.	संकाय	पद	पाठ्यक्रम शीर्षक
4.	डॉ. पंकज लवानिया	शिक्षण एसोसिएट, आरएलबीसीएयू, झांसी	वनवर्धन के सिद्धांत एवं क्रियाएं, भारतीय वृक्ष वनवर्धन, वन्य जीवन जीवविज्ञान, मानवविज्ञान- वनस्पतिविज्ञान, औषधीय एवं संगरोधा पादप, रेंजलैंड एवं पशुधान प्रबंधन
5.	डॉ. ए.एस. काले	शिक्षण एसोसिएट, आरएलबीसीएयू, झांसी	काष्ठ रचना, वन संरक्षण, शारीरिक शिक्षा-II, एनएसएस; वन प्रबंधन; काष्ठ उत्पाद एवं उपयोग, पक्षीविज्ञान एवं सरीसृपविज्ञान
6.	डॉ. एम.के. सिंह	शिक्षण एसोसिएट, आरएलबीसीएयू, झांसी	काष्ठ रचना, बीज प्रौद्योगिकी एवं नर्सरी प्रबंधन
7.	डॉ. उषा	शिक्षण एसोसिएट, आरएलबीसीएयू, झांसी	वन सरंक्षण, एनएसएस पक्षीविज्ञान एवं सरीसृपविज्ञान
8.	डॉ. शैलेन्द्र कुमार	सहायक प्राध्यापक, बुंदेलखंड विश्वविद्यालय, झांसी	सांख्यिकी विधियां एवं परीक्षण डिजाइन
9.	डॉ. ए.बी. मजूमदार	प्रधान वैज्ञानिक (सेवानिवृत्त), आईजीएफआरआई, झांसी	रेंजलैंड एवं पशुधन प्रबंधन
10.	श्री एन.के. साह	प्रधान वैज्ञानिक (सेवानिवृत्त), आईजीएफआरआई, झांसी	वन आदिवासीविज्ञान एवं मानवविज्ञान
11.	डॉ. शिखा थौर एवं डॉ. प्रभात तिवारी	शिक्षण एसोसिएट, आरएलबीसीएयू, झांसी	राज्य वन का अध्ययन दौरा

अनुबंध IV

विश्वविद्यालय की भवन एवं निर्माण कार्य समिति का संघठन

(संकल्प संख्या आरएलबीसीएयू/बीओएम/3/8/2016 दिनांक 3 जून 2016 के द्वारा रानी लक्ष्मी बाई केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, 2014 के विधानों की धरा 37 और पैरा 12 (4)(15) के प्रावधनों के अंतर्गत प्रबंध मंडल द्वारा गठित)

क्र.सं.	सदस्य	नाम
1.	कुलपति (अध्यक्ष)	डॉ. अरविन्द कुमार
2.	कम से कम कार्यपालक अभियंता की श्रेणी का निर्माण एजेंसी का प्रतिनिधि	श्री राजेश बहेल, मुख्य महा प्रबंधक, एनबीसीसी, नई दिल्ली
3.	कुलपति द्वारा नामित वित्तीय समिति का एक सदस्य	डॉ. पी.एल. गौतम, पूर्व अध्यक्ष, पीपीवी एवं एफआर प्राधिकरण तथा पूर्व कुलपति, जीबीपीयूए और टी, पंतनगर; मकान सं. 118, एचपी हाउसिंग बोर्ड कालोनी, बिंद्राबन, पालमपुर, जिला कांगड़ा 176 061 (हिमाचल प्रदेश)
4.	लेखानियंत्रक	लेखानियंत्रक/श्री एम.के. मुलानी, वित्त एवं लेखा अधिकारी
5.	उपयोगकर्ता विभाग का एक प्रतिनिधि	डॉ. मृदुला बिल्लौर, अधिष्ठाता, कृषि महाविद्यालय, खंडवा (मध्य प्रदेश)
6.	कुलपति द्वारा नामित विश्वविद्यालय के दो शिक्षक	डॉ. मीनाक्षी आर्य (वैज्ञानिक, पादप रोगविज्ञान) डॉ. अंशुमान सिंह (वैज्ञानिक, आनुवंशिकी एवं पादप प्रजनन)
7.	शासकीय अभियांत्रिकी महाविद्यालय से अधिष्ठाता या कम से कम प्राध्यापक की श्रेणी का उनका नामिति	प्रो. शैलेन्द्र जैन, प्राध्यापक एवं अध्यक्ष, विद्युत अभियांत्रिकी, एमएएनआईटी, भोपाल
8.	कुलपति द्वारा नामित सिविल अभियांत्रिकी/निर्माण प्रबंध में एक विशेषज्ञ	प्रो. अनिल सक्सेना, प्राध्यापक, सिविल अभियांत्रिकी विभाग, एमआईटीएस, ग्वालियर
9.	विश्वविद्यालय द्वारा नियुक्त विश्वविद्यालय अभियंता/ परामर्शक	विश्वविद्यालय अभियंता/परामर्शक
10.	कुलसचिव - सदस्य सचिव	डॉ. मुकेश श्रीवास्तव

अनुबंध V

रानी लक्ष्मी बाई केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, झांसी
वर्ष 2017-18 के लिए शैक्षणिक कैलेण्डर

बी.एससी. (ऑनर्स) कृषि प्रथम सेमिस्टर

1	पंजीकरण की तिथि	24.07.2017 (सोमवार)
2	अभिमुखन कार्यक्रम	25.07.2017 (मंगलवार)
3	कक्षाओं का शुभारंभ	26.07.2017 (बुधावार)
4	पंजीकरण की अंतिम तिथि देर से पंजीकरण शुल्क के साथ	04.08.2017 (शुक्रवार)
5	फ्रैशर्स डे/ सांस्कृतिक संध्या	16.08.2017(बुधवार)
6	मध्यावधि - सेमिस्टर परीक्षा	04.10.2017 से 16.10.2017 (बुधवार से सोमवार)
7	शिक्षकों से डीन को मध्य सेमिस्टर रिपोर्ट	28.10.2017(शनिवार)
8	अनुदेशों की समाप्ति	15.12.2017(शुक्रवार)
9	तैयारी के लिए अवकाश	16.12.2017 से 18.12.2017 (शनिवार से सोमवार)
10	अंतिम सत्र परीक्षा (सिद्धांत तथा प्रयोगात्मक)	19.12.2017 से 30.12.2017 (मंगलवार से शनिवार)
11	सेमिस्टर अवकाश	31.12.2017 से 14.01.2018 (रविवार से रविवार)

सेमिस्टर का 15.01.2018 (सोमवार) से शुभारंभ

अगला सेमिस्टर

1	पंजीकरण की तिथि	15.01.2018 (सोमवार)
2	कक्षाओं का शुभारंभ	16.01.2018 (मंगलवार)
3	पंजीकरण की अंतिम तिथि देर से पंजीकरण शुल्क के साथ	27.01.2018 (शनिवार)
4	मध्यावधि - सेमिस्टर परीक्षा	26.03.2018 से 05.04.2018 (सोमवार से गुरूवार)
5	शिक्षकों से डीन को मध्य सेमिस्टर रिपोर्ट	16.04.2018 (सोमवार)
6	अनुदेशों की समाप्ति	15.06. 2018 (शुक्रवार)
7	तैयारी के लिए अवकाश	16.06.2018 से 17.06.2018 (शनिवार से रविवार)
8	अंतिम सत्र परीक्षा (सिद्धांत तथा प्रयोगात्मक)	18.06.2018 से 30.06.2018 (सोमवार से शनिवार)
9	सेमिस्टर अवकाश	1.07.2018 से 22.07.2018 (रविवार से रविवार)

नई शैक्षणिक सत्र 2018-19 दिनांक 23.07.2018 (सोमवार) को शुरू होगा

अनुबंध VI

रानी लक्ष्मी बाई केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, झांसी
वार्षिक लेखा 2017-18

31 मार्च 2018 को लेखा परीक्षा पूर्व तुलन पत्र

(राशि रुपये में)

कॉर्पस/पूंजी निधि एवं देयताएं			
	अनुसूची	**चालू वर्ष**	**पिछले वर्ष**
कॉर्पस/पूंजीगत निधि	1	247388488.00	54158972.00
आरक्षित निधि	2	0.00	0.00
निश्चित की गई/बंदोबस्ती निधि	3	0.00	0.00
चालू देयताएं एवं प्रावधान	4	468973922.00	370736972.00
कुल		716362410.00	424895944.00
परिसम्पत्तियां			
अचल परिसम्पत्तियां	5	229025790.00	39272277.00
निवेश - निश्चित की गई/ बंदोबस्ती निधियां	6	0.00	0.00
चालू परिसम्पत्तियां, ऋण तथा पेशगियां	7	487336620.00	385623667.00
कुल		**716362410.00**	**424895944.00**
उल्लेखनीय लेखा नीतियां	23		
आकस्मिक देयताएं एवं लेखे की टिप्पणियां	24		

ह.
कुलपति

ह.
वित्त एवं लेखा अधिकारी

अनुबंध VII

रानी लक्ष्मी बाई केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, झांसी
वार्षिक लेखा 2017-18

31 मार्च 2018 को समाप्ति वर्ष के लिए आय एवं व्यय का लेखा

(राशि रुपये में)

आय	अनुसूची	चालू वर्ष	पिछले वर्ष
डेयर से प्राप्त अनुदान	8	38478917.00	25051045.00
बिक्री तथा सेवाओं से आय	9	207406.00	24442.00
शैक्षणिक प्राप्तियां	10	422965.00	368540.00
अर्जित ब्याज	13	2103491.00	13158968.00
अन्य आय	14	742141.00	78645.00
पूर्वावधि आय	15	0.00	0.00
कुल (क)		**41954920.00**	**38681640.00**
ख. व्यय			
स्थापना व्यय	16	4345144.00	4320618.00
प्रशासनिक व्यय	17	11679084.00	6914733.00
शैक्षणिक व्यय	18	16744516.00	11858863.00
अनुसंधान व्यय	19	5234301.00	1513332.00
विस्तार गतिविधियों पर व्यय	20	37720.00	42476.00
अन्य व्यय	21	438152.00	401023.00
पूर्वावधि व्यय	22	0.00	0.00
मूल्यह्रास	5	3255230.00	692903.00
कुल (ख)		**41734147.00**	**25743948.00**
शेष राशि अतिरिक्त राशि/(कमी) कॉर्पस को लाई गई/पूंजीगत निधि है		**220773.00**	**12937692.00**

ह.
कुलपति

ह.
वित्त एवं लेखा अधिकारी

अनुबंध VIII

वैधानिक आधिकारी

विश्वविद्यालय के वैधानिक आधिकारियों की सूची वर्ष 2017-18

विजिटर

श्री प्रणब मुखर्जी
(24 जुलाई, 2017 तक)

श्री रामनाथ कोविंद
(25 जुलाई, 2017 से)

कुलाधिपति

प्रो. डा. पंजाब सिंह
पूर्व सचिव, डेयर व महानिदेशक, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद तथा
पूर्व कुलपति, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय

कुलपति

डा. अरविन्द कुमार

कुलसचिव

डा. मुकेश श्रीवास्तव

विश्वविद्यालय समाचारों में

05.08.2017

25 टीचिंग एसोसिएट और छह डीन की होगी नियुक्ति

कृषि विश्वविद्यालय की बोर्ड ऑफ मैनेजमेंट ने दी मंजूरी

अमर उजाला ब्यूरो

झांसी।

रानी लक्ष्मीबाई केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय की बोर्ड ऑफ मैनेजमेंट की बैठक में मौजूद कुलपति प्रो. अरविंद कुमार व अन्य सदस्य।

24.08.2017

छात्रवृत्ति से आसान हो गई थी शिक्षा की राह

कृषि विश्वविद्यालय के रजिस्ट्रार को प्राथमिक से उच्च शिक्षा तक मिली थी छात्रवृत्ति

अमर उजाला ब्यूरो

झांसी/ललितपुर।

परिवार को वहन नहीं करना पड़ा पढ़ाई का खर्च

डा. मुकेश श्रीवास्तव

आपके पास भी है छात्रवृत्ति पाने का सुनहरा मौका

फाउंडेशन की वेबसाइट foundation.amarujala.com या फिर अमर उजाला की वेबसाइट amarujala.com पर जाकर भरा जा सकता है फार्म

अतुल माहेश्वरी छात्रवृत्ति परीक्षा-2017 में 31 अगस्त तक कर सकते हैं आवेदन

14.07.2017

उन्नत बीज बढ़ाएंगे तिल उपज

कम लागत में होगी ज्यादा पैदावार, कृषि विवि चुनेगा 50 किसान

अमर उजाला ब्यूरो

झांसी।

बुंदेलखंड में तिल उत्पादन बढ़ाने के लिए ऑल इंडिया कॉर्डिनेटेड रिसर्च प्रोजेक्ट (एआईसीआरपी) के तहत कम लागत वाली प्रजाति रानी लक्ष्मीबाई केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय को दी गई है। बुंदेलखंड के तीन समेत चार जनपदों के 50 किसानों के खेतों में प्रथम पंक्ति प्रदर्शन के जरिए किसानों के देशी बीजों के समानांतर उन्नत बीजों की बुवाई कराई जाएगी। बाद में उत्पादन का आंकलन किया जाएगा।

बुंदेलखंड में तिलहन मुख्य फसल है। कम उपजाऊ भूमि एवं मृदा में पोषक तत्व, पर्याप्त नमी की कमी होने से यहां तिलहन की उत्पादकता कम है। ऐसी स्थिति में कम लागत वाले उन्नत बीज का उपयोग करके लघु व सीमांत किसान लाभान्वित हो सकते हैं। एआईसीआरपी के तहत मिले तिल के उन्नत बीज की प्रथम पंक्ति प्रदर्शन के जरिए चार जनपदों झांसी, ललितपुर, जालौन के अलावा फतेहपुर में बुवाई करानी है। सभी जनपदों से 50 किसानों का चयन किया जाएगा। किसानों को बीज के साथ खाद भी दी जाएगी। उन्नत बीजों को किसानों द्वारा लगाए जा रहे लोकल बीजों के समानांतर खेतों में बुवाई कराई जाएगी। इसके बाद किस बीच से कितना उत्पादन हुआ, इसका आंकलन होगा। जानकारियों के लिए किसान कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक डॉ. मीनाक्षी आर्य, डॉ. अंशुमन ...

प्रथम पंक्ति प्रदर्शन से देशी बीज के साथ होगी बुवाई

खेती को मिल है सकती नई दिशा

एआईसीआरपी के तहत मिले कम लागत वाले उन्नत बीज बुंदेलखंड में तिल की खेती को नई दिशा दे सकते है। जल्द ही 50 किसानो का चयन किया जाएगा। ताकि, बुवाई भी शुरू हो सके। इसके काफी सकारात्मक परिणाम आने की संभावना है।

प्रो. अरविंद कुमार, कुलपति, कृषि विश्वविद्यालय।

बुवाई के लिए ध्यान दें किसान

कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिको ने बताया कि किसान ऐसी प्रजातियो का चयन करे जो सीजन, स्थान, बीज का रंग एवं पकने की अवधि पर निर्भर करें। बुंदेलखंड मे सफेद बीज वाली प्रजाति की मांग अधिक है। यह प्रजाति निर्यात के उद्देश्य से भी अच्छी है। उन्नत प्रजातियां देशी प्रजातियो की तुलना मे 24 से 147 फीसदी अधिक उपज देती हैं। छोटे संम्पुट वाले बीजो के अंकुरण मध्यम और बड़े संम्पुट से चयनित बीजो की तुलना मे ज्यादा होता है। बुंदेलखंड के लिए अनुमोदित प्रजातियां टी-78, शेखर, प्रगति, टी-4, एमटी-75, आरटी-46, रामा, एन-32, जेटी-7, टीकेजी-22, टीकेजी-55 हैं। खेत मे गहरी जुताई करने से हॉक मॉथ और मृदा जनित बीमारियां कम लगती है। बीज जनित बीमारियां जैसे पौध अंगमारी, तना एवं जड़ सड़न को रोकने के लिए बीज को थीरम (0.3 फीसदी) या कार्बेन्डाजीम (0.1 फीसदी) से उपचार करें। अच्छी उपज के लिए सूक्ष्मजीव वर्धन जैसे राइजोबियम, पीएसबी, राइजोबैक्टीरिया या ट्राईकोडरमा से उपचार करें। मानसून आने के तुरंत बाद उर्वरको के साथ बुआई करने पर उपज अधिक और गाल मक्खी एवं संम्पुट छेदक का प्रकोप कम हो जाता है। जहां फाइलोडी स्थानीयमारी हो, ऐसी जगह बुवाई दो सप्ताह देर से करने पर रोग कम लगता है। बुवाई हमेशा पंक्ति मे और दक्षिण व उत्तर दिशा मे करें।

12.04.2018

सरसों की उन्नत खेती की जानकारी

झांसी। रानी लक्ष्मीबाई केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद और सरसों अनुसंधान निदेशालय भरतपुर राजस्थान के विशेषज्ञों की बैठक हुई।

बैठक में भरतपुर अनुसंधान के प्रधान वैज्ञानिक डा. अशोक कुमार शर्मा, वरिष्ठ वैज्ञानिक डा. विनोद कुमार और मुख्य तकनीकी अधिकारी डा. आरसी सचान ने कृषकों को उन्नत खेती और उससे होने वाले फायदों की जानकारी दी। उन्होंने सरसों की खेती के लिए बुंदेलखंड को उपयुक्त बताया। इस मौके पर डा. अंशुमन सिंह, डा. सुशील कुमार, डा. अमित तोमर मौजूद रहे।

22.05.2018

दिसंबर में तैयार हो जाएगा भवन

कृषि विश्वविद्यालय प्रशासनिक, शैक्षिक, गर्ल्स हॉस्टल का 60 फीसदी काम पूरा

अमर उजाला ब्यूरो

झांसी।

रानी लक्ष्मीबाई केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय के भवन का निर्माण तेजी से जारी है। साठ फीसदी काम हो चुका है। दिसंबर तक निर्माण पूरा करने की तैयारी है। इस पर एक अरब रुपये से अधिक की लागत आएगी।

बढ़ जाएंगे कोर्स

बाउंड्रीवाल की जगह बायो फेंसिंग

एक अरब से अधिक आएगी लागत

प्रवेश के लिए आवेदन शुरू

निर्माण की गति संतोषजनक

विश्वविद्यालय समाचारों में

20.01.2018

बुंदेलखंड की मिट्टी बनेगी सेहतमंद, बढ़ेगा उत्पादन

भारतीय कृषि अनुसंधान ने दी कृषि विश्वविद्यालय को जिम्मेदारी, अखिल भारतीय समन्वित शोध परियोजना में वैज्ञानिक करेंगे अनुसंधान, सूक्ष्म पोषक तत्वों की खोज करेंगे

प्रशांत शर्मा

झांसी। बुंदेलखंड की मिट्टी को सूक्ष्म पोषक तत्वों की खोज करके सेहतमंद बनाया जाएगा. इसके लिए रानी लक्ष्मीबाई केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय को भारतीय कृषि अनुसंधान (आईसीएआर) से अखिल भारतीय समन्वित शोध परियोजना की मंजूरी मिल गई है। इसके तहत वैज्ञानिक खोज करके मिट्टी में पोषक तत्वों को पूरा कर तिलहन, दलहन की फसलों का उत्पादन बढ़ाएंगे।

बुंदेलखंड में अधिक उत्पादन प्राप्त करने के कारण भूमि में रासायनिक उर्वरकों विशेषकर यूरिया के लगातार इस्तेमाल से सूक्ष्म पोषक तत्वों की कमी दिनों-दिन बढ़ती जा रही है। किसानों द्वारा सूक्ष्म पोषक तत्वों का लगभग नगण्य उपयोग करने के कारण कुछ वर्षों से भूमि में इनकी कमी के लक्षण पौधों में दिखाई दे रहे हैं। इनकी कमी से फसल, फल, सब्जियों की पैदावार और गुणवत्ता घट जाती है। रानी लक्ष्मीबाई केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय ने सूक्ष्म पोषक तत्वों की खोज करने के लिए भारतीय कृषि अनुसंधान को अखिल भारतीय समन्वित शोध परियोजना का प्रस्ताव बनाकर भेजा था। अब आईसीएआर ने परियोजना को मंजूरी दे दी है। कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. अरविंद कुमार ने बताया कि परियोजना को मंजूरी मिलने से अब वैज्ञानिक बुंदेलखंड की मिट्टी पर शोध करेंगे, जिससे मिट्टी की जरूरत के मुताबिक पोषक तत्वों को पूरा करके फसलों की पैदावार बढ़ाई जा सकेगी।

17 मुख्य पोषक तत्वों की जरूरत

किसी भी पौधे को 17 मुख्य पोषक तत्वों की जरूरत होती है, इनमें से बहुल और आठ सूक्ष्म पोषक तत्व हैं। किसी भी तत्व की कमी होने से उपज पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। किसानों को समय-समय पर मृदा परीक्षण करवाकर पोषक तत्वों की जानकारी करनी चाहिए। बुंदेलखंड के किसान तिलहनी फसलों में द्वितीयक पोषक तत्व सल्फर देकर पेड़ की उपज बढ़ा सकते हैं। फसल के अवशेषों को किसी भी दशा में न जलाकर कंपोस्ट बनाना चाहिए।

-प्रो. अरविंद कुमार, कुलपति, रानी लक्ष्मीबाई केंद्रीय कृषि [...]

जिंक, बोरान कम

मौजूदा समय में बुंदेलखंड की मिट्टी में जिंक, बोरान की कमी है। जिंक एंजाइम (विशेष कार्बनिक उत्प्रेरक) का मुख्य अवयव होता है। साथ ही प्रकाश संश्लेषण और नाइट्रोजन के पाचन में सहायक होता है। जिंक की कमी से पौधों की बढ़वार रुकने, पत्तियां मुड़ने व तने की लंबाई घटने की समस्या और धान में खैरा नामक बीमारी हो जाती है। साथ ही आम, नीबू और लीची में लिटिल लीफ (छोटा रोग) और सेब, आड़ू में रोजेट की समस्या हो जाती है। वहीं, बोरान दलहनी फसलों में नाइट्रोजन स्थिरीकरण करने वाली ग्रंथियों के निर्माण में सहायक होता है। पौधों के द्वारा जल शोषण को नियंत्रित करता है। बोरान की कमी से पत्तियां मोटी [...] है। आम में आंतरिक [...] में आंतरिक गलन, [...] में स्फुलन हो जाता है।

29.01.2018

बुंदेलखंड के लिए ईजाद होगी सरसों की नई प्रजाति

कम पानी में अधिक उत्पादन मिलेगा, अप्रैल से वैज्ञानिक, तकनीकी विशेषज्ञ शुरू करेंगे शोध, कृषि विश्वविद्यालय को मिला जिम्मा

अमर उजाला ब्यूरो

झांसी। देश-विदेश की सरसों की उन्नत किस्मों की मदद से बुंदेलखंड के लिए नई प्रजाति ईजाद की जाएगी। प्रजाति की खासियत ये होगी कि वह कम पानी में अधिक उपज देगी। इसको तैयार करने का जिम्मा भारतीय कृषि अनुसंधान ने अखिल भारतीय समन्वित सरसों शोध परियोजना के तहत रानी लक्ष्मीबाई केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय को दिया है। अप्रैल से वैज्ञानिक और तकनीकी विशेषज्ञ प्रजाति की खोज के लिए शोध कार्य शुरू करेंगे।

बुंदेलखंड को सरसों का हब बनाने के लिए कृषि विश्वविद्यालय कार्य कर रहा है। भरतपुर के राष्ट्रीय सरसों अनुसंधान निदेशालय से बुंदेलखंड की भौगोलिक दृष्टि को मद्देनजर रखते हुए पिछले दो साल से उन्नत बीज मंगवाए जा रहे हैं। इसके अच्छे परिणाम भी सामने आए हैं। जिन किसानों को उन्नत बीज दिए गए हैं, उनके यहां डेढ़ गुना सरसों का उत्पादन हुआ है। किसानों को प्रति हेक्टेयर आठ हजार रुपये का मुनाफा हुआ है। अब भारतीय कृषि अनुसंधान ने केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय को अखिल भारतीय समन्वित सरसों शोध परियोजना पर काम करने के लिए मंजूरी दे दी है। इसके अंतर्गत वैज्ञानिक और तकनीकी विशेषज्ञ मिलकर बुंदेलखंड में सरसों की उपज बढ़ाने पर शोध करेंगे। परियोजना का नोडल केंद्र राष्ट्रीय सरसों अनुसंधान निदेशालय को बनाया गया है।

कुलपति प्रो. अरविंद कुमार ने बताया कि देश-विदेश (कनाडा, चाइना, ऑस्ट्रेलिया आदि) से सरसों के उन्नत बीज मंगवाकर नई प्रजाति तैयार करवाई जाएगी। ताकि बुंदेलखंड में सरसों की उपज बढ़ सके। यह इसलिए भी जरूरी है क्योंकि सरसों की फसल एक सिंचाई में भी फलफूल उठती है। बुंदेलखंड में वैसे भी पानी की काफी कमी है।

खास खबर

अप्रैल से वैज्ञानिक और तकनीकी विशेषज्ञ प्रजाति की खोज के लिए शुरू करेंगे शोध

अधिकतर दस क्विंटल प्रति हेक्टेयर पैदावार

बुंदेलखंड में सरसों की अधिकतर पैदावार दस क्विंटल प्रति हेक्टेयर है, जो कि काफी कम है। अधिकांश किसान तो सात-आठ क्विंटल प्रति हेक्टेयर ही उपज निकाल पाते हैं। कुलपति ने कहा कि उपज दोगुनी करने का प्रयास है। उत्पादकता बढ़ेगी तो तेल उद्योग स्थापित होंगे, इससे बुंदेलखंड के युवाओं को रोजगार भी मिलेगा।

उन्नत किस्म के पैदावार की ये होगी विशेषता

- कम लागत में खरीद सकेंगे
- रोग रहित व रोग प्रतिरोधकता होगी
- सूखा सहन करने की प्रजाति होगी
- अधिक गुण[...]

स्वास्थ्य के लिए भी फायदेमंद है तेल

सरसों के तेल में ओमेगा तीन और छह उचित अनुपात में होता है। यह खासकर हृदय रोगियों के लिए स्वास्थ्य के लिए फायदेमंद है। केमिकल के जरिए तेल को रिफाइंड करने से इसमें कुछ अंश रह जाते हैं, जो कि स्वास्थ्य पर दुष्प्रभाव डालते हैं।

मधुमक्खी पालन को मिलेगा बढ़ावा

मधुमक्खी पीले रंग की ओर आकर्षित होती है। ऐसे में सरसों की अधिक खेती होने से मधुमक्खी पालन को बढ़ावा मिल सकता है। सरसों का शहद बहुत उपयोगी होता है। मधुमक्खी के सरसों के पौधे से दूसरी फसल में बैठने से परागण होगा। इससे दूसरे पौधे की उपज भी बढ़ेगी।

21.05.2018

कृषि विश्वविद्यालय को मिला बहुउद्देश्यीय भवन

कुलाधिपति डा. पंजाब सिंह ने किया उद्घाटन

अमर उजाला ब्यूरो

झांसी। रविवार को केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय के कुलाधिपति डा. पंजाब सिंह ने रानी लक्ष्मीबाई केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय के भ्रमण के दौरान उन्होंने बहुउद्देश्यीय भवन का उद्घाटन किया।

कुलाधिपति के साथ आरकेडीएफ विश्वविद्यालय के कुलसचिव डा. बीएन सिंह ने विश्वविद्यालय का भ्रमण किया। इस दौरान उन्होंने विश्वविद्यालय की प्रयोगशालाएं, फार्म प्रक्षेत्र को देखा। साथ ही छात्र-छात्राओं से बातचीत कर विश्वविद्यालय की गतिविधियों के बारे में जाना। भ्रमण के दौरान कुलाधिपति ने आईजीएफआरआई और सीएएफआरआई के निर्देशकों व विभागाध्यक्षों के साथ बैठक की। उन्होंने दोनों संस्थानों के वैज्ञानिकों से विश्वविद्यालय में चल रहे अध्यापन कार्य में सहयोग करने को कहा। कहा कि वह शोध कार्यों में विश्वविद्यालय में कार्यरत टीचिंग एसोसिएट का सहयोग लें।

इससे पूर्व विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों ने सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुति की। इस मौके पर रानी लक्ष्मीबाई केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. अरविंद कुमार, कुलसचिव डा. मुकेश श्रीवास्तव मौजूद रहे। संचालन डा. आशुतोष शर्मा ने किया।

20.06.2018

कृषि विवि को मिले दो डीन, दो निदेशक

चार सालों से खाली चल रहे थे पद

अमर उजाला ब्यूरो

झांसी। रानी लक्ष्मीबाई केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय में दो डीन और दो डायरेक्टर की नियुक्ति हो गई है। पिछले चार सालों से यह पद खाली चल रहे थे। जल्द ही सभी अधिकारी ज्वाइन कर लेंगे।

वर्ष 2014 में केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय की शुरूआत हुई थी। इसके बाद से यहां कृषि और हॉर्टीकल्चर एंड फॉरेस्ट्री विभाग का डीन, शोध और शिक्षा निदेशक का पद खाली चल रहा था। कुलसचिव इनके कार्य देख रहे थे। हाल ही में हुए इन पदों पर साक्षात्कार के बाद चारों अधिकारियों की नियुक्ति कर दी गई है। कानपुर के इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ पल्स रिसर्च (आईआईपीआर) में जेनेटिक्स विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. एसके चतुर्वेदी को कृषि विभाग का डीन बनाया गया है।

इंफाल के कृषि विश्वविद्यालय के डॉ. एके पांडेय को हॉर्टीकल्चर एंड फॉरेस्ट्री विभाग का डीन नियुक्त किया गया है। नई दिल्ली के आईएआरआई के वैज्ञानिक डॉ. एनआर शर्मा को शोध निदेशक और पंत नगर विश्वविद्यालय के बायोटेक्नोलॉजी विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. अनिल कुमार को शिक्षा निदेशक बनाया गया है। अभी प्रसार निदेशक पद पर किसी की नियुक्ति नहीं हो सकी है, क्योंकि साक्षात्कार के दौरान कोई योग्य नहीं मिला। कुलसचिव मुकेश श्रीवास्तव ने कहा कि चार नए अधिकारियों के आने से विश्वविद्यालय को गति मिलेगी।

RLB CAU
ANNUAL REPORT
2017-18

July 2017 – June 2018

RANI LAKSHMI BAI CENTRAL AGRICULTURAL UNIVERSITY
JHANSI 284 003, India

Annual Report 2017 - 2018
(July, 2017 to June, 2018)

Telephone No.	:	0510-2730555, 0510-2730777
Fax	:	0510-2730555
E-mail	:	vcrlbcau@gmail.com
Website	:	http://www.rlbcau.ac.in

Published by

Dr. Mukesh Srivastava
Registrar
Rani Lakshmi Bai Central Agricultural University
Jhansi 284 003

Compiled & Edited by

Prof. Dr. Kusumakar Sharma
Consultant

Dr. Meenakshi Arya
Scientist (Plant Pathology)

Dr. Mukesh Srivastava
Registrar

Rani Lakshmi Bai Central Agricultural University
Jhansi 284 003

Acknowledgement

ICAR-Directorate of Knowledge Management in Agriculture (DKMA)
Indian Council of Agricultural Research, Krishi Anusandhan Bhavan-I,
Pusa Campus, New Delhi 110012

Lasertypeset by M/s Print-O-World, 2579, Mandir Lane, Shadipur, New Delhi 110 08 and printed at M/s Royal Offset Printers, A-89/1, Naraina Industrial Area, Phase I, New Delhi 110 028.

Foreword

I am happy to present the fourth Annual Report of Rani Lakshmi Bai Central Agricultural University (RLBCAU), Jhansi for the year 2017-18 that highlights and reviews the major developments and important events of the University from the past year.

The University made consistent growth in the field of agricultural education, research and extension to achieve the mandated objectives of its establishment as an institution of national importance. The academic activities were consolidated by providing required infrastructure for on-going three undergraduate programme for the degree of B.Sc. (Hons) Agriculture, B.Sc. (Hons) Horticulture and B.Sc (Hons.) Forestry. Also, it enrolled 80 new Students admitted through ICAR-All India Entrance Examination. The new Academic Block became functional in the pre-fabricated structures with modern amenities for quality education. The university strengthened its laboratories, class rooms and experiential learning resources for the students and faculty.

Keeping in mind the agro-ecological situation of Bundelkhand region, the research work was primarily focused towards technology driven production enhancement in pulses and oilseeds. The inclusion of chickpea, summer mungbean, sesamum, and rapeseed mustard in cropping system approach is likely to further accelerate production and productivity. The University centre of ICAR-AICRP Chickpea made significant achievements oriented towards evaluation of a large numbers of entries (rainfed, irrigated, kabuli, desi and extra-large kabuli) for their yield potential and tolerance for biotic and abiotic stress. The incidence of Chickpea stunt virus and Ascochyta blight has been recorded as emerging diseases of this region. The ICAR has opened a new center of AICRP-Rapeseed Mustard at the University w.e.f. 1st April, 2018 to give a desired boost to promote cultivation of this important oil seed crop in the Bundelkhand region.

The University arranged exposure visits of farmers to University farm to promote best farming practices. The faculty successfully organized 130 training cum frontline demonstrations of chick pea, mustard and sesamum and other extension activities benefitting hundreds of farmers. The teachers and students were also active participant of Swach Bharat Abhiyan (SBA), National Social Service (NSS), National Agri-fest and All India Inter Agricultural University Games and Sports Meet.

Significant headway was made in infrastructural development through the on-going construction of essential buildings (Academic Building for College of Agriculture, Horticulture and Forestry, Administrative building, VC residence, Hostels etc.), which is

in full swing at Jhansi. It will hasten the pace for creation of state-of the-art facilities for teaching, research and extension in near future. It is also expected that statutory posts of Deans and Directors shall be filled shortly and University is likely to get necessary approval of Ministry of Finance, Government of India for creation of various teaching and non-teaching posts.

The University had the privilege to host several dignitaries and academicians to whom we are indebted for their encouragement, guidance and valuable inputs. The members of the several committees including Board of Management, Finance Committee and Building and Works Committee guided us with their constant support. I record my deep sense of gratitude to all of them.

The University is indebted to Shri Ram Nath Kovind ji, Hon'ble Visitor of the University, Shri Radha Mohan Singh Ji, Hon'ble Union Minister for Agriculture and Farmers Welfare, Government of India and Dr. Panjab Singh, Hon'ble Chancellor for their guidance and desired support. I am delighted to express my sincere thanks to the Central and State Governments and Dr. T. Mohapatra, Secretary, Department of Agricultural Research & Education, Ministry of Agriculture and Farmers Welfare, Government of India and Director General, Indian Council of Agricultural Research. My thanks are due to Dr. Mukesh Srivastava, Registrar, Mr. Jawahar Lal Sharma, Administrative Officer, ICAR-CAFRI, Jhansi and Mr. Mahesh Mulani, Finance and Account Officer, ICAR-CIAE, Bhopal, for their required support. I acknowledge the collective support and cooperation received from my scientific and other staff who dared to dream high and have worked tirelessly to achieve the set targets despite handful in numbers. I specially compliment Prof. Dr. Kusumakar Sharma and his dedicated editorial team for timely preparation of this Annual Report.

Dated: 30th July, 2018
Place: Jhansi

(Arvind Kumar)
Vice Chancellor

Contents

Foreword *iii*

The University **1**

1. Introduction 2
2. Goals 2
3. University Authorities and Governance 2
4. Academic Activities 5
5. Faculty 6
6. AICRP-Chickpea sub-centre 15
7. Extension Activities 23
8. Infrastructural Development 28
9. Finance and Budget 37
10. Other Major Activities/Events 37
11. List of Visitors 43
12. Faculty participation in conferences/ trainings/meetings 46
13. Awards and Honours 47
14. Publications 48
15. Roadmap for the year 2018-19 50

Annexure-I 51
Annexure-II 53
Annexure-III 54
Annexure-IV 61
Annexure-V 62
Annexure-VI 63
Annexure-VII 64
Annexure-VIII 65

UNIVERSITY

1. Introduction

The Rani Lakshmi Bai Central Agricultural University is the first Agricultural University in the Country which was established as an institution of national importance by an Act of Parliament by Govt. of India in the year 2014. The headquarter of the University is at Jhansi in the State of Uttar Pradesh. However, the jurisdiction and responsibility of the University with respect to teaching, research and programmes of extension education in the field of agriculture extend to whole country with priority on the issues related to Bundelkhand region. The University Act stipulates that all colleges, research and experimental stations or other institutions to be established under the authority of the University shall come in as constituent units under the full management and control of its officers and authorities. Within the provision of Section 4 (2) of the University Act, the University has established its head quarter and constituent College of Agriculture and College of Horticulture and Forestry at Jhansi. Two colleges, namely College of Veterinary and Animal Sciences, and College of Fisheries are being established at Datia, Madhya Pradesh. The University is funded directly by the Department of Agricultural Research and Education, Ministry of Agriculture and Farmers Welfare, Government of India, New Delhi.

2. Goals

The University objectives are clearly defined in the Act as follows to:

a. impart education in different branches of agriculture and allied sciences as it may deem fit;

b. further the advancement of learning and conducting of research in agricultural and allied sciences;

c. undertake programmes of extension education in Bundelkhand in the districts of the States under its jurisdiction;

d. promote partnership and linkages with national and international educational institutions; and

e. undertake such other activities as it may, from time to time, determine.

3. University Authorities and Governance

The Vice-Chancellor is the principal executive and academic head of the University and *ex-officio* Chairman of Board of Management, Finance Committee and Academic Council. Board of Management, Finance Committee and Academic Council are the apex bodies, which take decisions on administrative, financial and academic matters. The proposed governance structure of the University is depicted.

3.1 Board of Management

The Board of Management is the principal executive body and responsible for policy making and the management of the University. The composition of BOM during the period under report is given in Annexure-I. Three meetings of BOM were convened during this period.

S. No.	Meeting	Date	No. of Board Members present
1.	5th	4th August, 2017	14
2.	6th	31st January, 2018	12
3.	7th	14th June, 2018	09

Major decisions taken in various meetings of the BOM included the following:

Fifth Meeting

- Approval of Annual Report for the Academic year 2016-17.
- Appraisal of allocations communicated under Budget Estimates for the year 2017-18 to 2019-20 and proposed EFC.
- Appraisal about the progress and status of Civil Works being undertaken by the University

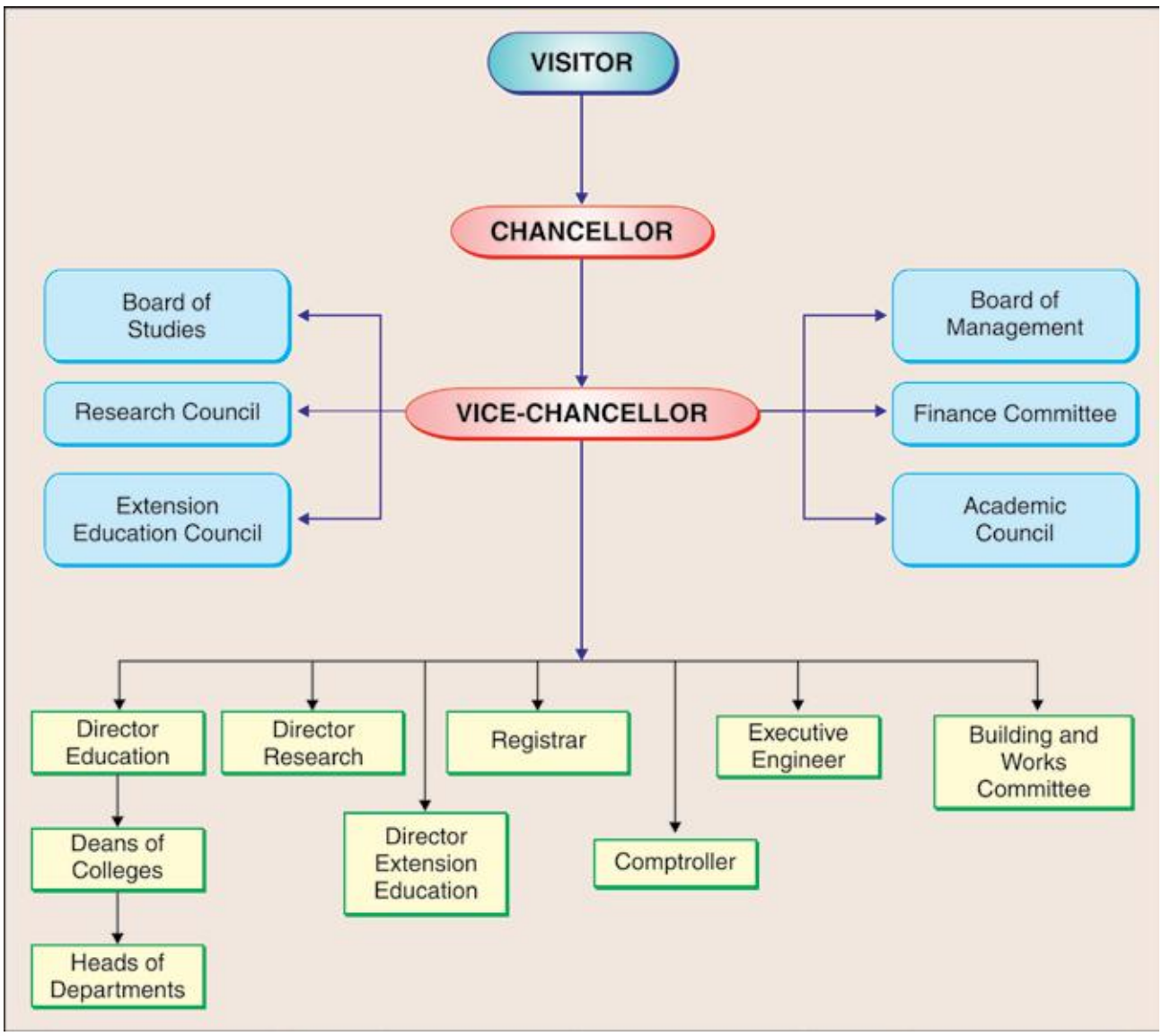

Governance Structure of the University

during 2017-18.

- Approval of Annual Accounts for the year 2016-17 for mandatory audit.
- Nomination of a panel of six eminent scientists not below the rank of Vice-chancellor or equivalent persons for nominations by Vice Chancellor as member in the selection committee to the posts of Directors/ Deans.
- Consideration of Score-card guidelines for Directors/Deans /Professor or equivalent posts.
- Consideration for revision of Honorarium/ sitting fee to the non-official members of BOM and various committees.
- Approval for engaging 25 Teaching Associates during Academic year 2017-18.
- Approval for extension of term of engagement of Dr. Kusumakar Sharma and Dr. S. K. Sharma as Consultants.

The Fifth meeting of Board of Management in session

Sixth Meeting

- Approval of Audit Report of Annual Accounts for the year 2015-16 and 2016-17 for submission to Visitor.
- Appraisal of allocations approved by EFC for the year for 2017-18 to 2019-20
- Appraisal about the progress and status of Civil Works being undertaken by the University
- Approval of number of students to be admitted in various Under-graduate programmes of the University during Academic year 2018-19.
- Approval of revision of fee structure for students to be admitted from Academic year 2018-19 and onwards

Seventh Meeting

- Approval of recommendations made by the Selection Committee for appointment to the post of Director of Education, Director of Research & Director of Extension Education and Dean College of Agriculture & Dean College of Horticulture and Forestry at RLBCAU, Jhansi.
- Approval of Annual Accounts for the year 2017-18.
- Approval of Revision of remuneration of paper setting and evaluation of Examination copies.
- Approval of Revision of Honorarium of Experts/Guest Lecturers.
- Approval for payment of interest to NPS Subscribers of the University.
- Approval for Enrolment of Dr. Arvind Kumar as subscriber of NPS.
- Approval of Extension of benefits of leave encashment and "Retirement Gratuity and Death Gratuity" to the University employees covered by National Pension Scheme.
- Approval of Reimbursement of Government accommodation charges to students on study tour.

- Approval of procurement of Farm implements and Green houses/Poly houses.
- Approval for extension of term of engagement of Dr. Kusumakar Sharma as Consultant.
- Approval of enhancement in the age of superannuation of University Comptroller.
- Approval of Annual Report for the Academic year 2017-18.

3.2. Finance Committee

The Finance Committee of the University consists of the Vice Chancellor as Chairman and Financial Advisor, Department of Agricultural Research and Education; three persons nominated by the Board, out of whom at least one shall be a member of the Board; three persons nominated by the Visitor; and the Comptroller of the University as its Member-Secretary (Annexure-II). The Finance Committee met twice during this period.

S. No.	Meeting	Date	No. of Finance Committee Members present
1.	5th	10th January, 2018	05
2.	6th	08th June, 2018	06

Agenda items discussed and major decisions taken in the meetings of the Finance Committee included the following:

Fifth Meeting

- Appraisal of Audit Report of Annual Accounts for the year 2015-16 and 2016-17.
- Appraisal of allocations approved by EFC for the year for 2017-18 to 2019-20.

Sixth Meeting

- Approval of Annual Accounts for the year 2017-18.
- Appraisal of allocations Communicated under Budget Estimates for the year 2018-19.
- Revision of remuneration of paper setting, evaluation of Examination copies, and guest lectures.
- Approval for payment of interest to NPS Subscribers of the University.
- Approval for Enrolment of Dr. Arvind Kumar as subscriber of NPS.
- Reimbursement of Government accommodation charges to students on study tour.
- Procurement of Farm implements and Green houses/Poly houses from the interest earned.
- Appraisal of Master Plan for Datia campus of the University

4. Academic Activities

The intake capacity and number of students admitted during the academic session 2017-18 through All India Entrance Examination in Agriculture and Allied Sciences (AIEEA) for UG programmes conducted by Indian Council of Agricultural Research is given below:

Students	Numbers, B.Sc (Hons)			
	Agriculture	Horticulture	Forestry	Total
Intake.	40	20	20	80
Registered	37	14	13	64

The fourth academic session of the University began from 25th July, 2017. Dr. Mukesh Srivastava, Registrar briefed newly admitted students about the University that included the back-ground, motto and expectations of the faculty along with recent achievements. The Orientation Program at the University was designed for all first year students on 11th September, 2017, which was attended by freshers and senior students, faculty and staff of the University. Dr. Arvind Kumar, Vice-Chancellor graced the occasion with his presence as the Chief Guest of the event. A brief description of the University about the recent achievements, introduction regarding the academic disciplines,

financial aid and scholarships, student welfare, code of conduct, importance of sports etc was delivered by Dr. Mukesh Srivastava, Registrar. Hon'ble Vice-Chancellor welcomed the students to the University fraternity and advised them to understand the significance of education in general and higher agricultural education in particular, in the context of doubling farmers' income. He elaborated the strong linkage between agricultural education and economic and socio-cultural development in the country, where agriculture supports livelihood of about half the population. He called upon the students to acquire and improve basic skills at the College/University level and try to remain aware of the developments in their specific area of learning and to utilize *on- campus* opportunities for development of personality, initiative and creativity. Subsequently, a cultural program was organized that was followed by dinner.

5. Faculty

The University does not have so far regular teaching/non-teaching staff. In the light of Section 6 (x, xi) of the University Act, vesting the University with power to create teaching, research, extension education, administrative, ministerial and other posts and to make appointments thereto, the Finance Committee and Board of Management of the University approved the creation of 254 teaching and 234 non-teaching posts for the headquarters and four constituent colleges (College of Agriculture; College of Horticulture & Forestry; College of Veterinary and Animal Sciences, and College of Fisheries) based on the minimum standards and norms for UG/PG education in different branches of agriculture sciences by ICAR and VCI (for veterinary sciences). However, MOF desired to get an evaluation of the University done as per GFR 2017 (IX) through Expenditure Management Committee (EMC) before considering the proposal for financial concurrence for creation of posts. The EMC in its report submitted in January, 2018 has recommended that the proposed faculty strength to the extent of 254 teaching and 234 non-teaching posts, which are according to norms and accreditation criteria, should be sanctioned on priority. The proposal has been again re-submitted to MOF by DARE for financial concurrence on 4th April, 2018. However, the process for recruitment to statutory positions as approved by DARE has been completed. Meantime, the University is constrained to continue its academic activities with the support of 34 contract/ guest faculty, scientists and teaching associates.

The following courses were offered by the University to the first, second, third and fourth year students of B.Sc. (Hons.) Agriculture and first and second year students of B.Sc. (Hons.) Horticulture and B.Sc. (Hons.) Forestry during the academic year under report:

B.Sc. (Hons.) Agriculture Ist year

I. Semester

S.N.	Course Code	Title of the Course	Credit Hours
1.	APA 101	Fundamentals of Agronomy	4 (3+1)
2.	APS 118	Fundamentals of Soil Science	3 (2+1)
3.	APH 176	Fundamentals of Horticulture	2 (1+1)
4.	APF 179	Introduction to Forestry	2 (1+1)

S.N.	Course Code	Title of the Course	Credit Hours
5.	ABB 155	Fundamentals of Plant Bio-chemistry & Biotechnology	3 (2+1)
6.	AAC 148	Rural Sociology & Educational Psychology	2 (2+0)
7.	ARC 172	Elementary Mathematics	2 (2+0)
8.	ARC 171	Introductory Biology	2 (1+1)
9.	ANC 166	Human Values & Ethics	1 (1+0)
10.	AAC 147	Comprehension & Communication Skills in English	2 (1+1)
11.	ARC 173	Agricultural Heritage	1 (1+0)
12.	ANC 167	NSS	2 (0+2)

II. Semester

S.N.	Course Code	Title of the Course	Credit Hours
1.	AGP 113	Fundamentals of Genetics	3 (2+1)
2.	ABB 156	Agricultural Microbiology	2 (1+1)
3.	AAE 132	Introductory Soil and Water Conservation Engineering	2 (1+1)
4.	ABB 157	Fundamentals of Crop Physiology	2 (1+1)
5.	AEC 127	Fundamentals of Agricultural Economics	2 (2+0)
6.	APP 138	Fundamentals of Plant Pathology	4 (3+1)
7.	APE 121	Fundamentals of Entomology	4 (3+1)
8.	AAC 149	Fundamentals of Agricultural Extension Education	3 (2+1)
9.	AAC 115	Communication Skills and Personality Development	2 (1+1)
10.	ANC 167	NSS	2 (0+2)

B.Sc. (Hons.) Agriculture II year

III. Semester

S.N.	Course Code	Title of the Course	Credit Hours
1.	AST 241	Fundamentals of Plant Breeding	3 (2+1)
2.	APH 211	Production Technology for Vegetables and Spices	2 (1+1)
3.	AEC 226	Agricultural Finance and Cooperation	3 (2+1)
4.	APA 201	Crop Production Technology – I (Kharif Crops)	2 (1+1)
5.	ALM 266	Livestock and Poultry Management	4 (3+1)
6.	APA 202	Environmental Studies and Disaster Management	3 (1+2)

S.N.	Course Code	Title of the Course	Credit Hours
7.	ABP 251	Agri- Informatics	2 (1+1)
8.	AAE 231	Farm Machinery and Power	2 (1+1)
9.	APE 221	Statistical Methods	2 (1+1)
10.	ANC 267	NSS	1 (0+1)

IV. Semester

S.N.	Course Code	Title of the Course	Credit Hours
1.	APA 205	Crop Production Technology –II *(Rabi Crops)*	2 (1+1)
2.	APH 277	Production Technology for Ornamental Crops, MAP and Landscaping	2 (1+1)
3.	AAE 235	Renewable Energy and Green Technology	2 (1+1)
4.	APS 217	Problematic Soils and their Management	2 (2+0)
5.	APH 278	Production Technology for Fruit and Plantation Crops	2 (1+1)
6.	AST 241	Principles of Seed Technology	3 (1+2)
7.	APA 206	Farming System & Sustainable Agriculture	1 (1+0)
8.	AEC 227	Agricultural Marketing Trade & Prices	3 (2+1)
9.	APA 207	Introductory Agro-meteorology & Climate Change	2 (1+1)
10.		Elective Course	3 credit
11.	ANC 266	Educational Tour	2 (0+2)
12.	ANC 267	NSS/NCC/Physical Education & Yoga Practices	2 (0+2)

Elective Courses

S.N.	Course Code	Courses	Credit Hours
1.	AES 293	Commercial Plant Breeding	3 (1+2)
2.	AES 294	Landscaping	3 (2+1)
3.	AES 296	Bio-pesticides & Bio-fertilizers	3 (2+1)
4.	AES 391	Protected Cultivation	3 (2+1)
5.	AES 392	Micro propagation Technologies	3 (1+2)
6.	AES 393	Hi-tech. Horticulture	3 (2+1)
7.	AES 394	Weed Management	3 (2+1)

B.Sc. (Hons.) Agriculture III year

V. Semester

S.N.	Course Code	Title of the Course	Credit Hours
1.	AEC 326	Fundamentals of Agri Business Management	2 (1+1)
2.	APA 301	Field Crops-I (Kharif)	3 (2+1)
3.	APP 336	Disease of Horticultural crops and their Management	3 (2+1)
4.	APE 321	Crop Pests and stored grain pests and their Management	3 (2+1)
5.	AAC 346	Fundamentals of Rural Sociology and Educational Psychology	2 (2+0)
6.	AGP 311	Principles of Plant Biotechnology	3 (2+1)
7.	APA 302	Farming Systems and Sustainable Agriculture	2 (1+1)
8.	APH 331	Post-harvest management & value addition of fruits and vegetables	2 (1+1)

VI. Semester

S.N.	Course Code	Title of the Course	Credit Hours
1.	AEC 327	Production Economics & Farm management	2 (1+1)
2.	AAC 347	Extension Methodologies for Transfer of Agricultural Technology	2 (1+1)
3.	ABB 351	Biochemistry	3 (2+1)
4.	AAC 348	Entrepreneurship Development and Communication Skills	2 (1+1)
5.	APA 303	Field crops-II (Rabi)	3 (2+1)
6.	FHL 341	Comprehension and Communication Skills in English	2 (1+1)
7.	FES 371	Environmental Science	2 (1+1)
8.	APA 304	Weed Management	2 (1+1)
9.	AAE 331	Renewable Energy	2 (1+1)

VII. SEMESTER (RAWE): 20 Credit hours

The final year students of B.Sc. (Hons.) Agriculture were offered RAWE programme of 20 credit hours during the seventh semester. As a part of the programmme, the students were attached to individual farmer families to understand the rural situations, status of Agricultural technologies adopted by farmers, prioritize the farmers' problems and to develop skills and right attitude of working with farm families for the holistic development of rural areas. They were later also exposed to the Silviculture Industry as an Industrial attachment trainee.

VIII. SEMESTER (Experiential Learning): 20 credit hours

The final year B.Sc. (Hons.) Agriculture students were exposed to experiential learning with the

Mushroom Cultivation - Harvesting Oyster

Oyster Ready for sale

primary aim to develop them as highly skilled professionals who can create their own enterprises. The emphasis was laid on execution of following enterprises:

Experiential Learning Programme in Mushroom Cultivation

Final year students were given training under Experiential learning program (ELP) so as to develop their hands-on expertise and confidence to establish mushroom based enterprise. The students were thoroughly trained in practice and processes of mushroom cultivation including media preparation, tissue culture, spawn preparation, harvesting and marketing of their produce.

Experiential Learning Programme in Postharvest Technology

Under this programme, the final year agricultural students prepared different products and sold them commercially for income generation. The different standardized and economically viable products included Instant Potato Custard, Instant Potato Halwa mix, Lemon herbal appetizer, Beetroot appetizer, Fibrous mango squash, Orange lemon squash, Pickles, Jams, Bael products etc. The Benefit: cost ratio of these products was worked out as follows:

Product Name	Benefit: Cost Ratio
Mixed fruit jam	2.5 : 1
Garlic pickle	2:1
Chilli pickle	2.6:1
Carrot pickle	3:1
Beetroot appetizer	1.4:1
Lemon appetizer	3.5:1
Orange lemon squash	3:1
Mango squash	3:1

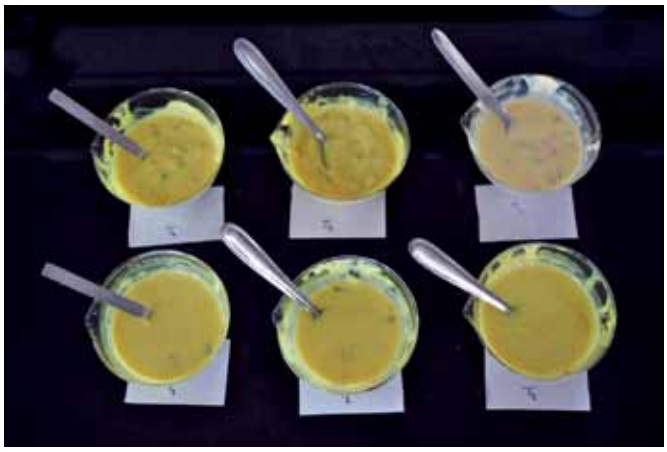

A. Instant potato custard (Different treatments)

B. Fibrous mango squash

C. Lemon herbal appetizer

D. Anthocyanin rich dried fig

E. Chilli pickle preparation (I think its Jam)

B.Sc. (Hons.) Forestry Ist year

I. Semester

S.N.	Course Code	Title of the Course	Credit Hours
1.	FNR 117	Geology & Soils	3 (2+1)
2.	FNR 116	Introduction to Agronomy and Horticulture	3 (2+1)
3.	FBS 143	Plant Biochemistry	2 (1+1)
4.	FSA 102	Dendrology	3 (2+1)
5.	FBS 145	Basic Mathematics	2 (2+0)
6.	FSA 101	Introduction to Forestry	2 (2+0)
7.	FBS 142	Communication Skills and Personality Development	2 (1+1)
8.	FBS 144	Forest Botany	2 (1+1)

S.N.	Course Code	Title of the Course	Credit Hours
9.	FBS 141	Information and Communication Technology	2 (1+1)
10.	FBS 146	Physical Education-I	1 (0+1)
11.	FBS 147	NSS	1 (0+1)

II. Semester

S.N.	Course Code	Title of the Course	Credit Hours
1.	FBT 111	Plant Physiology	3 (2+1)
2.	FBT 112	Plant Cytology and Genetics	2 (1+1)
3.	FSA 103	Theory and Practice of Silviculture	3 (2+1)
4.	FPU 126	Wood Anatomy	3 (2+1)
5.	FWM 136	Wildlife Biology	3 (2+1)
6.	FNR 118	Forest Protection	3 (2+1)
7.	FBS 148	Statistical Methods & Experimental Designs	3 (2+1)
8.	FBS 149	Physical Education-II	1 (0+1)
9.	FBS 150	NSS-II	1 (0+1)

B.Sc. (Hons.) Forestry II year

III. Semester

S.N.	Course Code	Title of the Course	Credit Hours
1.	FBT 211	Tree Improvement	3 (2+1)
2.	FNR 219	Forest Ecology & Biodiversity	3 (2+1)
3.	FNR 217	Forest Survey & Engineering	3 (2+1)
4.	FNR 216	Environmental Studies and Disaster Management	3 (2+1)
5.	FNR 218	Soil Biology & Fertility	3 (2+1)
6.	FSA 201	Principles of Agroforestry	3 (2+1)
7.	FSA 202	Forest Mensuration	3 (2+1)
8.	FBS 241	Physical Education-III	1 (0+1)
9.	FBS 247	NSS	1 (0+1)

IV. Semester

S.N.	Course Code	Title of the Course	Credit Hours
1.	FSA 203	Forest Management	3 (2+1)
2.	FSA 204	Silviculture of Indian Trees	3 (2+1)
3.	FPU 226	Wood Products & Utilization	3 (2+1)
4.	FPU 227	Ethnobotany, Medicinal and Aromatic plants	3 (2+1)
5.	FWM 236	Ornithology & Herpetology	3 (2+1)
6.	FBT 212	Seed Technology & Nursery Management	3 (2+1)
7.	FNR 220	Rangeland and Livestock Management	2 (1+1)
8.	FBS 243	Forest Tribology & Anthropology	2 (2+0)
9.	FBS 244	Study Tour of State Forest	1 (0+1)
10.	FBS 247	NSS - III	1 (0+1)

B.Sc. (Hons.) Horticulture Ist year

I. Semester

S.N.	Course Code	Title of the Course	Credit Hours
1.	HFS 101	Fundamentals of Horticulture	3 (2+1)
2.	HSS 166	Economics and Marketing	3 (2+1)
3.	ABB 159	Elementary Plant Biochemistry	2 (1+1)
4.	ABB 158	Elementary Statistics and Computer Application	3 (2+1)
5.	HFS 102	Principles of Genetics and Cytogenetics	3 (2+1)
6.	HNR 131	Fundamental of Soil Science	2 (1+1)
7.	ABB 160	Introductory Crop Physiology	2 (1+1)
8.	HFL 121	Principles of Landscape Architecture	2 (1+1)
9.	ABB 161	Introductory Microbiology	2 (1+1)
10.	FBS 142	Communication Skills and Personality Development	2 (1+1
11.	HSS 167	NSS	1 (0+1)

II. Semester

S.N.	Course Code	Title of the Course	Credit Hours
1.	HFS 104	Tropical and Subtropical Fruits	3 (2+1)
2.	HVS 101	Tropical and Subtropical Vegetables	3 (2+1)

3.	HFS 105	Principles of Plant Breeding	3 (2+1)
4.	HNR 132	Soil Fertility and Nutrient Management	2 (1+1)
5.	HNR 134	Water Management in Horticultural Crops	2 (1+1)
6.	HFS 103	Plant Propagation and Nursery Management	2 (1+1)
7.	HNR 133	Environmental Studies and Disaster Management#	3 (2+1)
8.	ABB 162	Growth and Development of Horticultural Crops	2 (1+1)
9.	HSS 170	Physical and Health Education	1 (0+1)
10.	HSS 169	Information and Communication Technology	2 (1+1)
11.	HSS 167	NSS	1 (0+1)

B.Sc. (Hons.) Horticulture II year

III. Semester

S.N.	Course Code	Title of the Course	Credit Hours
1.	HVS 201	Temperate Vegetable Crops	2 (1+1)
2.	HFS 201	Temperate Fruit Crops	2 (1+1)
3.	HPP 226	Fundamentals of Plant Pathology	3 (2+1)
4.	HPP 227	Diseases of fruit, Plantation, Medicinal and Aromatic Crops	3 (2+1)
5.	ABB 255	Elementary Plant Biotechnology	2 (1+1)
6.	HFS 202	Weed Management in Horticultural Crops	2 (1+1)
7.	HPP 228	Fundamentals of Entomology	3 (2+1)
8.	HFL 221	Commercial Floriculture	3 (2+1)
9.	HPH 216	Fundamentals of Food Technology	2 (1+1)
10.	HPP 229	Nematode pests of horticultural crops and their Management	2 (1+1)
11.	HSS 267	NSS	1 (0+1)

IV. Semester

S.N.	Course Code	Title of the Course	Credit Hours
1.	HNR 231	Soil, Water and Plant Analysis	2(1+1)
2.	HVS 202	Spices and Condiments	3(2+1)
3.	HFL 222	Ornamental Horticulture	3(2+1)
4.	HFS 203	Plantation Crops	3(2+1)

S.N.	Course Code	Title of the Course	Credit Hours
5.	HFS 204	Breeding of Fruit and Plantation Crops	3(2+1)
6.	HNR 232	Farm Power and Machinery	2(1+1)
7.	HPP 230	Insect Pests of Fruit, Plantation, Medicinal & Aromatic Crops	3(2+1)
8.	HVS 203	Precision Farming and Protected Cultivation	3(2+1)
9.	HFS 205	Dry land Horticulture	2(1+1)
10.	HSS 267	National Service Scheme/National Cadet Corp	1 (0+1)

6. AICRP-Chickpea sub-centre

The technical program of research continued for enhancing chickpea Production in Bundelkhand region with multi-pronged approach of breeding, disease resistance, seed production, intercropping and nutrient & water management under ICAR-AICRP Chickpea programme. The following coordinated trials on chickpea were conducted during Rabi season of the year 2017-18:

6.1 Plant Breeding

266 entries were evaluated for Chickpea Plant Breeding Yield Trials at University Farm during Rabi, 2017-18

S. No.	Trials	No. of entries
A	**ICAR-AICRP Chickpea**	
1.	IVT Rainfed	33
2.	AVT 1 Rainfed	04
3.	IVT(Kabuli+ELS Kabuli)	26
4.	AVT 1(Desi Irrigated timely sown)	04
5.	IVT (Desi Irrigated timely sown)	45
B	**ICAR DA Chickpea International Nurseries**	
1.	FLRP- CIEN –LS-2018 (Large Seeded)	36
2.	FLRP- CIEN –S-2018 (Spring)	36
3.	FLRP- CIDTN –S-2017 (Drought)	42
C	**ICRISAT-Chickpea**	
1.	ICVT – Kabuli	20
2.	ICVT – Desi	20

- The following on-station trials were conducted:
  a) Two station trials of Chickpea, with advance lines in F5 and F6 generation conducted in collaboration with Division of Genetics, Indian Agricultural Research Institute, New Delhi,
  b) One station trial of Chickpea, with advance lines in F7 generation conducted in collaboration with R.A.K College of Agriculture (Sehore), Rajmata Vijayeraje Scindia Krishi Vishwavidyalaya, Gwalior,
  c) One station trial of Chickpea, with advance lines conducted in collaboration with Jawaharlal Nehru Krishi Vishwa Vidyalaya, Jabalpur,
- **Crossing Programme:** Forty four (44) fresh crosses were successfully attempted to generate

the breeding material having the variability for yield, its component traits and resistance against major diseases. The details of the crosses are as follows:

S.N.	Crosses
1.	IC-44226 X BG 362
2.	IC- 223011 X BG 362
3.	IC 555039 X BG 362
4.	WCG 95-50 X PUSA 249
5.	DIGVIJAY X RSG 4
6.	BG 1003 X WCG 1
7.	BG 362 X BG 391
8.	BGD 112 X PUSA 372
9.	BG 118 X JG 11
10.	JG 11 X BG 362
11.	RSG 902 X CSG 8962
12.	BG 1053 X PBG 1
13.	UJJAWAL X BG 1053
14.	RSG 902 X CSG 8962
15.	PUSA 372 X ICCV 92844
16.	BG 118 X JG 11
17.	DIGVIJAY X RSG 4
18.	JG 130 X BGM 547
19.	BG 1003 X WCG 1
20.	PUSA 212 X GNG 1958
21.	IC 223011 X BG 362
22.	ANNIGERI X WCG 95-50
23.	BG 112 X PUSA 372
24.	IC 83386 X ST PYT 2-30
25.	ICARDA-LS 115 X UJJAWAL
26.	ICARDA DT-126 X WCG 2
27.	IC 450005 X ST PYT-2-30
28.	IC 75501 X BG 1053
29.	IC 27231 X IC 44221
30.	IC 590013 X IC 44226
31.	ICARDA LS-128 X BG 1053
32.	IC 55085 X BGD 72
33.	ICARDA DT-119 X WCG 2
34.	ICARDA S-116 X UJJAWAL
35.	IC 75501 X BG 1053
36.	IC 261136 X BG 362
37.	ICARDA LS-133 X BGD 72
38.	IC 118592 X BGD 72
39.	IC 590013 X IC 44226
40.	IC 555039 X BG 362
41.	ICARDA DT-129 X WCG 2
42.	ICARDA LS-115 X UJJAWAL
43.	IC 44226 X BG 362
44.	IC 261136 X BG 362

- **Status of breeding material:** Following breeding materials were grown in different generations for evaluation, selection and advancement to next generation:

Generation	No. of Crosses	SPS	Bulk
F1	21	21	-
F4	6	6	6
Shuttle Breeding /F7	47	41	-
Shuttle Breeding /F6	23	8	10

- **Yield trials / Station trials:** Promising entries with yield (Kg/Ha) in various Yield trials / Station trials conducted by the University are summarized below:

Trials	No. of Entries	Promising Entries with Yield (Kg/ha)
ICVT-Desi	20	ICCV171114(2357 kg/ha), ICCV171106 (2190 kg/ha)
ICVT-Kabuli	20	ICCV171314 (1429 Kg/ha), ICCV171311 (1381 Kg/ha)
ICARDA-FLRP-CIEN-LS	36	FLIP10-266C (1746 Kg/ha)
ICARDA-FLRP-CIEN-S	36	FLIP10-234C (1603 Kg/ha)
ICARDA-FLRP-CIDTN	42	FLIP10-186C (1708 Kg/ha), FLIP10-120C (1667 Kg/ha), FLIP10-19C (1639 Kg/ha), FLIP10-24C (1611Kg/ha)
ST-1	24	BGM1040 (2111kg/ha), BGM1036 (2083Kg/ha), BGM 1042(2083Kg/ha), BGM 1037 (1805Kg/ha)
ST-2	26	F-6-378 (3667 kg/ha), F-6-63 (3167 kg/ha), F-6-67(3056Kg/ha), ST-PYT-2(30)(3000Kg/ha), F-6-18(2944Kg/ha)
ST-3	6	F4-JG 2017-6 (1857 kg/ha), F4-JG2017-2(1849 kg/ha), JG 2017-3(1698Kg/ha), JG 2017-4 (1611Kg/ha)

- **Plant Genetic Resources:** A collection of around 160 Chickpea germplasm accessions obtained from NBPGR, New Delhi, were grown and maintained in the year 2015-16 and 2016-17. These accessions were evaluated in the year 2017-18, under 3 micro-environments viz. timely sown (11-11-2017), medium late sown (03-12-2017) and late sown (22-12-2017) with the recommended dose of fertilizers. The study was conducted for the assessment of effect of environmental forces to disease, insect reactions and trends of genotypic performance over three different dates of sowing.

- **New Entries submitted in AICRP Chickpea IVT trial**

  New Kabuli entries, **RLBGK-1 and RLBGK-2 and** Desi entries, **RLBG-1 and RLBG-2** were submitted in the AICRP Chickpea IVT trial Kabuli and Desi for zone wise screening for yield, and yield contributing traits during Rabi 2017-18. These entries shall also be screened for disease/ pest tolerance and susceptibility index for various diseases.

KABULI

DESI

Stress tolerant entries submitted in ICAR AICRP Chickpea IVT trial

The performance of biotic and abiotic stress tolerant and resistant Chickpea varieties were evaluated for Bundelkhand region in demonstration plots (Kabuli 28.8 m^2 and Desi 19.2 m^2) during Rabi season after treatment with recommended fungicides.

Advance breeding lines and segregating populations grown and evaluated at the University farm area

Performance of Chickpea Varieties in Demonstration Plots (un-replicated) during Rabi 2017-18

S.N.	Varieties/Genotypes	Yield (q/ha)	Maturity (Days)	Seed Size (g/100 seeds)	Remark
Kabuli Chickpea					
1.	BG 1053	25.00	122	24.90	Rainfed, irrigated, wilt tolerant, soil borne diseases resistant, NWPZ, CZ
2.	Ujjawal (IPCK 2004-29)	19.72	126	23.06	Moderate resistant to wilt and tolerant to BGM, escape terminal moisture stress and heat, CZ
3.	BG 1003	17.60	132	28.46	Wilt Tolerant, NEPZ
4.	BG 1108	20.42	120	23.33	Timely sown irrigated, excellent cooking quality, soil borne diseases resistant
5.	PUSA 2024	20.00	120	22.78	Rainfed, Irrigated, Moderately resistant against soil borne diseases and pod borer
6.	PUSA 5023 (Pusa Shaktiman)	23.61	130	31.67	Moderately resistant to resistant against Fusarium wilt, dry root rot, Excellent cooking quality
Desi Chickpea					
7.	Pusa 212	20.07	122	22.813	Wilt Resistant, CZ
8.	Digvijay	22.92	117	21.285	Rainfed, wilt resistant

S.N.	Varieties/Genotypes	Yield (q/ha)	Maturity (Days)	Seed Size (g/100 seeds)	Remark
9.	Pusa 244	22.92	129	15.273	Wilt and Stunt resistant,CZ
10.	RSG- 44	19.27	125	12.619	Tolerant to drought and frost
11.	BG-5028 (Pusa Bheema)	27.60	125	21.085	Extra Large seed, Moderately wilt resistant
12.	BGD-72	27.08	125	23.979	Resistant to wilt & root rot, bold seeded, CZ
13.	WCG-1 (Sadhbhawana)	29.17	129	19.274	Moderate resistant to Dry Root Rot, UP
14.	JAKI 9218	20.50	129	15.341	Resistant to fusarium wilt, root rot and collar rot, Rainfed
15.	BG-391	35.42	129	23.434	Moderately resistant to wilt & root rot. Bold seeded, Erect, CZ
16.	BG-362	35.06	129	24.789	Tolerant to wilt, Bold seeded, NWPZ
17.	JG 11	29.17	129	21.415	Resistant to wilt, moderately resistant to root rot. Bold seeded, SZ
18.	CSG 8962 (Karnal Chana 1)	20.63	132	12.228	Salt Tolerant, Wilt resistant
19.	RSG 902 (Aruna)	20.73	129	26.051	Mod. Res. to dry root rot, wilt, pod borer
20.	Phulle G-5(Vishwas)	21.77	122	18.554	Irrigated, CZ
21.	ICCV 92944	22.13	122	19.803	Rainfed, Heat tolerant
22.	Pusa-372	26.04	126	26	Moderately resistant to wilt, blight & root rot., Small seed, NEPZ,NWPZ,CZ
23.	BGD 112	17.19	137	16.34	Dark Green Foliage
24.	Pusa 547	24.48	121	22.86	Irrigated, Tolerant to wilt, root rot, stunt diseases and pod borer, NWPZ
25.	GNG 1958	15.63	130	27.24	Irrigated, NWPZ,
26.	PBG 1	10.94	129	15.1	Ascochyta Blight resistant, NWPZ
27.	WCG 2 (Surya)	23.96	130	13.412	Res. to rot, tol. to stunt & dry root rot, U.P.
28.	BG 1103	28.65	127	22.524	Resistance against wilt, root rot, bruchids. Late sown
29.	WCG 95-50	24.48	117	18.56	Wilt and stem rot resistant
30.	Annigeri	25.00	119	17.172	Rainfed, SZ

S.N.	Varieties/Genotypes	Yield (q/ha)	Maturity (Days)	Seed Size (g/100 seeds)	Remark
31.	JG 315	31.25	124	14.859	Wilt resistant, CZ
32.	PDG 4	20.31	127	17.372	Post-emergence herbicide tolerant
33.	RSG 888 (Anubhav)	25.00	120	21.729	Rainfed, Moderately resistant to wilt, root rot, NWPZ
34.	JG 130	20.83	127	12.471	Wilt Resistant, M.P.
35.	PUSA 547	24.68	118	26.955	Late sown, Irrigated,Tolerant to wilt, root rot, stunt diseases and pod borer, NWPZ
36.	C-235	20.31	129	12.301	Stem rot and blight tolerant, Punjab and Haryana

NWPZ: North Western Plain Zone; CZ: Central Zone; SZ: South Zone; NWPZ: North Eastern Plain Zone

6. 2 Plant Pathology

- Evaluation of 214 IVT, AVT 1 and AVT 2 (desi, kabuli, rainfed, late Sown, MH, DTIL etc.) entries against collar rot disease of chickpea was taken up in the Pot conditions.

Pot screening of Collar Rot

Collar rot disease

- In order to increase the wilt sickness in sick plots, the sowing of JG 62 cultivar in pre-rabi season (September) was done and wilted plants were mixed in the soil after a month. The inoculum after multiplying on chickpea straw and sorghum grains was also added.
- The set of differential, viz. C 104, JG 74, CPS 1, BG 212, WR 315, KWR 108, Chaffa, Annegiri, L550, Delta and K 850 received from Sehore centre and ICRISAT were multiplied.
- The Jhansi Centre provided 42 Kg JG-62 to different centres during the year 2017-18 and has produced 100 Kg JG 62 during the year 2018 for its utilization as a check in wilt screening at different AICRP centres.
- An Experiment for Evaluation of new strains of Trichoderma along with combination of fungicides for the management of collar rot of chickpea was undertaken.

Sick wilt plot sowing wilt incidence

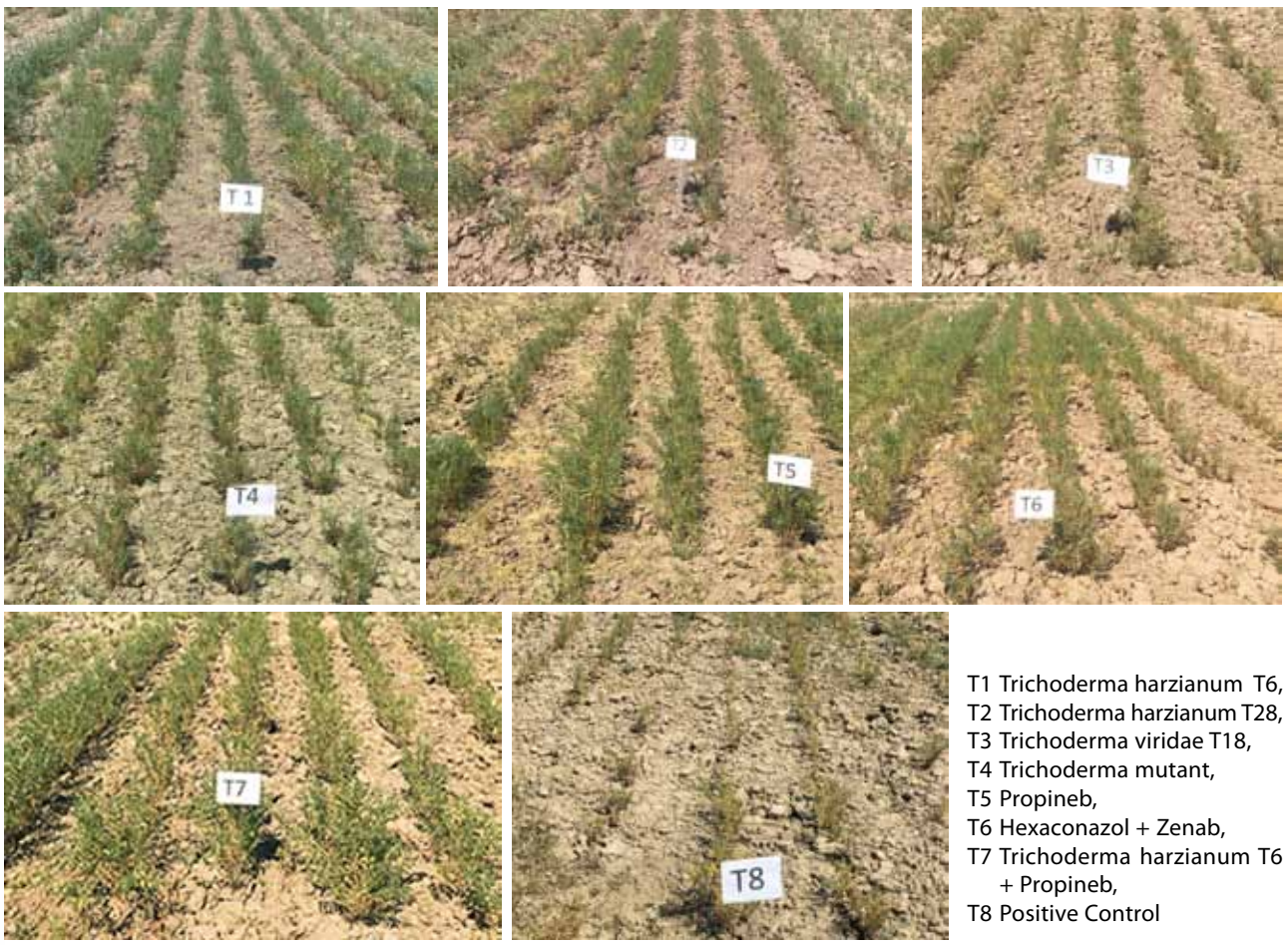

T1 Trichoderma harzianum T6,
T2 Trichoderma harzianum T28,
T3 Trichoderma viridae T18,
T4 Trichoderma mutant,
T5 Propineb,
T6 Hexaconazol + Zenab,
T7 Trichoderma harzianum T6 + Propineb,
T8 Positive Control

Pictures of Experiment on Evaluation of new strains of Trichoderma with combination of fungicides for management of Collar Rot; T1 to T8 are the treatments

The seeds treated with *Trichoderma harzianum T6* + Propineb were found to be most effective against the *Sclerotium rolfsii* by improving plant population and yield of treated chickpeas. However, the study needs to be further evaluated on large fields and for another two to three crop seasons.

- **Emerging Disease of Chickpea in Jhansi region**

a) The incidence of Chickpea stunt virus was recorded upto 15% as compared to nearly 10% during the preceding season. The infection was confirmed by cloning and sequencing of virus. The yield loss in the virus infected plots was recorded upto 20 to 35%. Accordingly, the primers for chickpea stunt disease were designed for partial coat protein region and an attempt was made to isolate and characterize the virus. The PCR and the sequence has confirmed the presence of virus. The efforts are under way to characterize the whole genome of the virus infecting chickpea.

Chickpea Stunt disease

b) The incidence of *Ascochyta* Blight was recorded to the tune of upto 10-15% in Jhansi region as compared to 5-7% during the preceding year. The fungus was isolated and the characterization is under process.

Symptoms of Ascochyta Blight at Jhansi centre

7. Extension Activities

7.1 Exposure visits of Farmers

Several training programmes and exposure visits of farmers were organized to apprise them about different aspects of crop and vegetable production, benefits of organic farming and scientific agricultural practices being followed at University agricultural and vegetable farm. The details of such programmes are as follows:

- A training programme for the Farmers organized on *"New Technology for Preparation of Organic Manure"* on 20thJuly, 2017. The programme attracted about 60 farmers from nearby villages.
- 26 Farmers from Raisen (M.P.) were trained under Mukhyamantri Khet Teerth Yojna (2017-18) on 06.09.2017.
- 33 Farmers from Chirgaon (Jhansi) were trained under ATMA Farmer Training Program on 20.09.2017.
- 15 farmers from Jalaun were trained under ATMA Program Farmer training on 14.03.2018.
- A training programme on *Doubling farmers income by 2022* organized under Kissan Kalyan Diwas on 17.03.2018 at Kanchanpur village of Babina block of Jhansi district. In this programme, 55 farmers participated from various villages.

Farmers Trained under ATMA Programme

Training programme on New Technology for Preparation of Organic Manure

7.2 Front line demonstrations

Frontline Demonstration is a form of applied research through ICAR/AUs system on latest notified/released varieties along with full package of practices on selected farmers' fields with a view to demonstrate the potentiality of the technologies to participating and neighboring farmers to analyze the production and performance of the technologies for scientific feedback. The University has chalked out a series of FLDs to help farmers grow new and high yielding varieties of pulses and oil seeds in the Bundelkhand region as its climate is ideal for such crops requiring minimum irrigation. The move may help the region to increase the production of pulses and oilseeds and become an ideal hub for production of these crops.

7.2.1 FLD on Rapeseed-Mustard

The University and ICAR-Directorate of Rapeseed-Mustard Research, Sewar, Bharatpur entered into a Memorandum of Understanding (MoU) for the assessment and transfer of improved production technology of Rapeseed-Mustard through Front-Line Demonstrations in the region. Seventy-Five FLDs were conducted using four improved varieties of Mustard i.e. RH-406, NRCDR-2, NRCHB-101 and DRMR-IJ 31(Giriraj) on farmers' fields covering eighteen villages of four blocks viz. Badagaon, Babina, Nivari, Orchha of Jhansi and Tikamgarh districts of Bundelkhand region during Rabi season of 2017-18, on the basis of a benchmark survey for assessment of prevailing farmers practices *vis-à-vis* components of improved technology for rapeseed-mustard cultivation.

The participating farmers reported very encouraging response to improved technology. There were optimum plant population with 35% seed saving, 16-45% higher yield advantage and economic

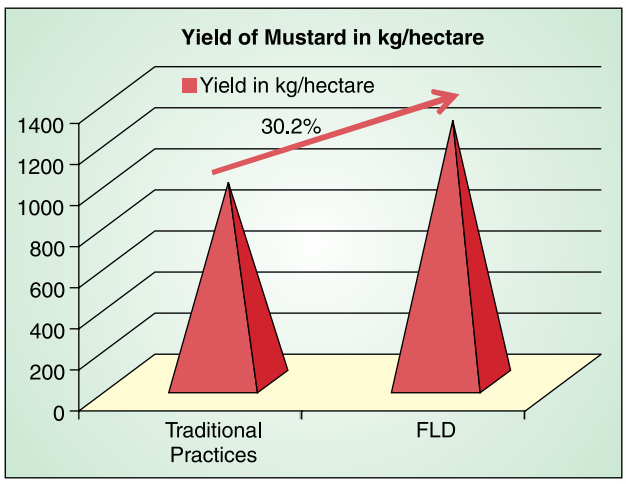

Components of Front-Line Demonstrations on Rapeseed-Mustard

Prevailing farmers practices against demonstrated technology	Components of demonstrated technology
Local varieties	Improved varieties
Broadcasting method of sowing	Line sowing (at 45 cm) using 3-4 Kg seeds/ha
More than two irrigations	Recommended irrigation (Two: at 35DAS and at pod formation stage)
No plant protection measure	Need Based plant protection measures

return (Gross, Net and B:C ratio) in line sowing with seed drill as compared to broadcasting using seeds of improved varieties. Farmers' were convinced that timely sowing can further lead to yield enhancement in mustard. Further, the number of irrigations given under improved package of practices was less as compared to prevailing practices being followed by farmers. It was evident that improved varieties of Mustard received from ICAR-DRMR, Bharatpur recorded significantly more production and net return as compared to local varieties. Adoption of improved package of practices resulted in average 30.2 % increase in yield (16.23 q/ha) over traditional cultivation practices (12.45 q/ha) followed by the farmers. However, mean average yield (q/ha) of various improved varieties cultivated under FLDs in different villages was recorded as 18.84, 17.02, 14.76 and 14.31 for RH-406, DRMR-IJ 31/Giriraj, NRCDR-2 and NRCHB-101, respectively.

7.2.2 FLD on Sesame

In order to increase potential yield of Sesame in the region, the University in collaboration with ICAR-AICRP on Sesame and Niger, JNKVV, Jabalpur and ICAR-IIOR, Hyderabad organized fifty Front-Line Demonstrations in the region for the assessment and transfer of improved production technology of Sesame. Three improved varieties of Sesame *viz.* TKG-22, Pragati and GT-10 were used for cultivation on farmers' field covering six villages of four blocks viz. Badagaon, Babina, Bamor of Jhansi district, Bar of Lalitpur district and Kadaura of Jalaun district of Bundelkhand during Kharif season on the basis of a survey for assessment of prevailing cultivation practices *vis-à-vis* components of improved technology.

It was observed that farmers adopted three parameters from package of improved practices viz.

Components of Front-Line Demonstrations on Sesame

S.N.	Particulars	Farmer's practice	FLDs (recommended practice)
1.	Variety	Un-recommended/ recommended but old local variety	TKG 22 , Pragati and GT-10
2.	Date of sowing	End of July	Second fortnight of July
3.	Spacing	Mostly broadcasting is done. Irregular plant population	Seed is mixed with either sand or dry soil or well sieved farm yard manure in 1:20 ratio Row to row—45 cm, plant to plant distance -20cm
4.	Seed Rate (kg/ha)	2.-3 Kg/ha	A seed rate of 5 kg/ha is adequate to achieve the required plant population
5.	Seed Treatment	Seeds mostly untreated are sown	Use seed treated with Bavistin 2.0 g/kg seed. For bacterial leaf spot disease is a problem, soak the seed for 30 minutes in 0.025% solution of Agrimycin-100 prior to seeding
6.	Weed management	Usually not done	Weeding : one after 15-20 days of sowing and other at 30-35 days after sowing
7.	Irrigation	Irregular timing	Two irrigations-First at flower initiation and second at capsule formation are essentially required
8.	Nutrient management	No fertilizer used	N:P_2O_5:K_2O =20-10-0

S.N.	Particulars	Farmer's practice	FLDs (recommended practice)
9.	Pest and disease control	Use of fungicides is irregular and limited and over dose of insecticides	Phyllody:Rogue out diseased plants. Use intercropping, sesame + pigeonpea (1:1). Soil application of Phorate 10 G @ 5 kg/ha

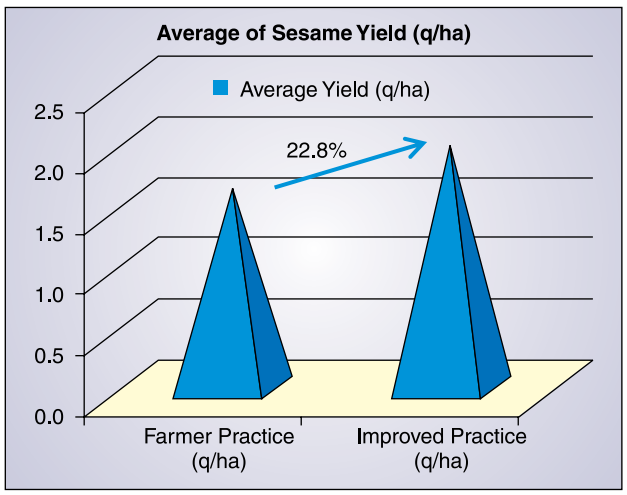

MOS (Method of Sowing), nutrient management, and recommended varieties. Average yield increase of 22.8% was recorded in FLDs conducted with recommended practices of cultivation as compared to yield averages recorded under the control (farmers' practices). The maximum yield of 243.6 kg/ha and 256 kg/ha was observed under the parameter of fertilizer input with the improved variety Pragati and TKG22, respectively. Farmers were convinced that timely sowing can further lead to yield enhancement in sesame. Overall, the varieties of Sesame received from ICAR-AICRP on Sesame and Niger, ICAR-JNKVV, Jabalpur and ICAR-IIOR, Hyderabad gave more production and net returns as compared to local varieties.

7.2.3 FLD on Chickpea (ICAR-AICRP on Chickpea)

In an collaborative effort, the ICAR-AICRP on Chickpea, ICAR-IIPR, Kanpur and the University conducted five Front-Line Demonstrations for the assessment and transfer of improved production technology of Chickpea cultivation using an improved Chickpea variety *Ujjawal* on farmers' field. The FLDs were organized in village Jauri Buzurg of Block Badagaon in Jhansi district and village Kamrari of Block Datia in District Datia of Bundelkhand region during Rabi season on the basis of a survey for assessment of prevailing cultivation practices vis-à-vis components of improved technology for Chickpea production.

The application of improved technology package provided an alternative to farmers for getting higher

Components of Front-Line Demonstrations on Chickpea

S.N.	Particulars	Farmer's practice	FLDs (recommended practice)
1.	Variety	Un-recommended/ recommended but old	Ujjawal
2.	Date of sowing	Mid November	Last week of October to first week of November
3.	Spacing	Row to row – 30 cm, Irregular plant population	Row to row—45 cm, plant to plant distance -10 cm
4.	Seed Rate	80-100 Kg/ha	A seed rate of 65 kg/ha is adequate to achieve the required plant population

S.N.	Particulars	Farmer's practice	FLDs (recommended practice)
5.	Seed Treatment	Seeds mostly untreated are sown	Seed to be soaked in water 4-5 hours Treatment with Trichoderma (6gm/kg) and Vitavax (carboxin)(1g/kg), Treatment with one packet of Rhizobium (20g/kg)
6.	Weed management	Mechanically	Spray of Pre-emergence herbicide Pendimethalin 1-1.25 a.i. kg/ha. One hand weeding, if required.
7.	Irrigation	Irregular timing	Two irrigations- First during initiation of first branch (after 25-30 days and second during bud formation
8.	Nutrient management	60-70kg DAP /ha. No use of SSP, Gypsum and ZnSO4.	88 Kg DAP (N:P_2O_5:K_2O = 20:40:20) and 20 kg S and 20 kg Zn/ha, cow dung manure-5 tonne/ha
9.	Pest and disease control	High and irregular usage of insecticides. Use of fungicides is limited	Spray of Indoxacarb @500ml /ha Installation of 5-6 pheromone traps in 1 ha area

yield of chickpea. The Kabuli chickpea variety Ujjawal provides 30-35 %, greater market price in comparison to the local Desi variety grown by the farmers. A 20% seed saving, optimum plant population, 16-26% higher yield advantage and economic return (Gross, Net and B:C ratio) were recorded in line sowing with seed drill as compared to broadcasting method. Mean average yield of 19.69 q/ha was recorded in FLDs for variety Ujjawal with a maximum of 22.2 q/ha.

The yield performance and its related economic indicators revealed that, yield of all the crops was found to be substantially higher in FLDs. It is also concluded that use of latest technologies of oilseed and pulse cultivation may substantially reduce the potential yield gap and increase farmers' income.

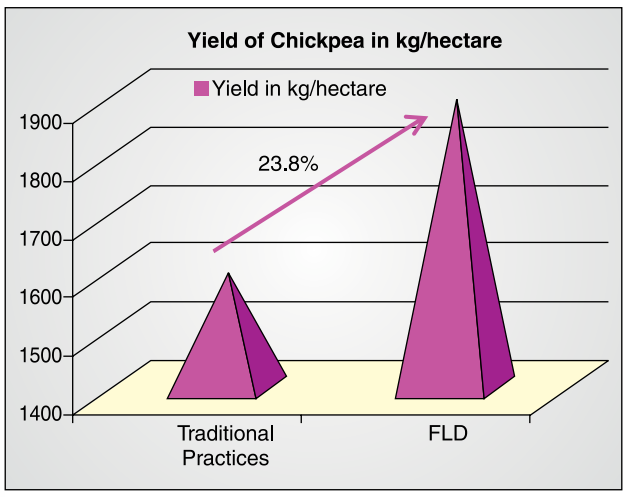

Chick pea crop in FLD

Seed Distribution during FLDs

8. Infrastructural Development

8.1 Development of Crop Cafeteria & Agricultural Farm

The University developed Crop Cafeteria (2017-18) for students to translate theory of crop production into practice and imbibe agricultural practical skills for decision making in real field environment. The different species and varieties of crops were grown in cafeteria by using seed material collected from various agricultural research institutions and universities and adopting appropriate agronomic/plant protection practices. A number of traditional field crops like wheat, barley, oats, various species of rapeseed and mustard, linseed, sunflower, safflower, chickpea, lentil, field pea, potato, berseem mung bean, urd bean, maize *etc.* were grown in demonstration blocks during the year to standardize suitable package of practices for realizing potential optimum yield in Bundelkhand region.

S. No.	Crops	Season
1.	Rapeseed	Rabi
2.	Mustard	Rabi
3.	Wheat	Rabi
4.	Chickpea	Rabi
5.	Pea	Rabi
6.	Linseed	Rabi
7.	Potato	Rabi
8.	Lentil	Rabi
9.	Sunflower	Rabi
10.	Safflower	Rabi
11.	Barley	Rabi
12.	Oat	Rabi
13.	Berseem	Rabi
14.	Sugarcane	Rabi
15.	Crop	Kharif
16.	Paddy	Kharif
17.	Maize	Kharif
18.	Green Gram	Kharif
19.	Black Gram	Kharif
20.	Soybean	Kharif
21.	Ground nut	Kharif
22.	Pigeon pea	Kharif
23.	Foxtail Millet	Kharif
24.	Finger Millet	Kharif

Glimpses of Crop Cafeteria

S. No.	Crops	Season
25.	Barnyard Millet	Kharif
26.	Pearl Millet	Kharif
27.	Seasme	Kharif

8.2 Development of Vegetable Production and Demonstration Unit

- A unit of vegetable production and research was developed at the University farm as an effective method for rapid dissemination of new technology and nerve as an instructional unit for students and farmers for demonstrating complete technology package of production of various vegetables suitable for Bundelkhand region.
- A number of spice crops like turmeric, ginger fenugreek and fennel, traditional vegetable crops like cabbage, cauliflower, pea, beans, onion, leafy vegetables, root crops, tomato, brinjal, chilli, under exploited vegetables like colocasia, yam, ivy gourd, pointed gourd, basella, and some newly introduced vegetables like purple broccoli, green broccoli, asparagus, globe artichoke, sweet corn etc. are being grown in the farm. Seed production of pea variety Azad pea-1 was also undertaken during winter. Research trials were conducted on farm to find out the diversity in turmeric cultivars for quality produce and higher yield and effect of different mulch material on growth and yield of Onion (Pusa red).
- The University is working on selection of

Glimpses of Vegetable Cafeteria

suitable varieties, standardization of suitable package of practices for realizing optimum yield of improved varieties/ hybrids of promising vegetables for Bundelkhand region. Emphasis has been also given on development of precision farming practices, organic cultivation, germplasm collection, value addition and post-harvest practices of vegetable crops.

- A demonstration block has been established at the University Research and Production Farm in an area of approximately 7000 m^2 for demonstration of vegetable crop production technology to the students, farmers, visitors and other stakeholders of vegetable sector. Improved as well as popular varieties of following vegetables developed by the public and private sector were demonstrated in this block with recommended scientific package of practices.

S. No.	Vegetable crop	No. of varieties demonstrated	S. No.	Vegetable crop	No. of varieties demonstrated
1.	Amaranthus (Green & Red)	05	21.	Ginger	02
2.	Ash gourd	01	22.	Globe artichoke	01
3.	Asparagus	01	23.	Indian bean	01
4.	Basella	02	24.	Ivy gourd	01
5.	Beet root	02	25.	Long melon	02
6.	Bitter gourd	03	26.	Okra	04
7.	Black cumin	01	27.	Onion	02
8.	Bottle gourd	04	28.	Palak	05
9.	Brinjal	03	29.	Pea	10
10.	Broad bean	02	30.	Pointed gourd	01
11.	Broccoli	05	31.	Pumpkin	02
12.	Carrot	05	32.	Radish	04
13.	Cauliflower	03	33.	Spinach	01
14.	Chilli	05	34.	Sponge gourd	02

S. No.	Vegetable crop	No. of varieties demonstrated	S. No.	Vegetable crop	No. of varieties demonstrated
15.	Cococasia	02	35.	Sweet corn	02
16.	Coriander	06	36.	Sweet potato	01
17.	Cow pea	02	37.	Tomato	06
18.	Cucumber	03	38.	Turmeric	12
19.	Fennel	01	39.	Turnip	04
20.	Fenugreek	04	40.	Yam	01

8.3 Establishment of Fruits Orchard

Inaugration of the Fruit Orchard by Dr. T. Mohapatra, Secretary, DARE & DG, ICAR

The Bundelkhand region lies at the heart of India located below the Indo-Gangetic plain to the north with the undulating Vindhyan mountain range spread across the northwest to the south. The soil in this region is a mixture of black and red-yellow soils which are poor in organic nutrients. These areas experience hot and semi-humid climate with an annual rainfall 700 to 900 mm. The region is characterized by low and erratic rainfall, extremes of temperature (5 to 48 °C) and very low relative humidity. Therefore, the region is marked by extreme environmental constraints due to which the cultivation of traditional crops is not economical. The climatic condition of this region has vast scope of different types of fruit crops for commercial cultivation. The fruits are rich in vitamins, minerals, anti-oxidants and with other medicinal properties. They provide not only stable income to the people but can also withstand under stressed and adverse conditions. Under such a situation, fruits based production systems are considered an ideal strategy for the overall development and wellbeing of the farming community of the region. Different types of fruit orchards were developed during the year as an effective instrument for rapid dissemination of technology and instructional unit for student demonstration of various fruit crops suitable for Bundelkhand region.

A number of tropical and subtropical fruit crops like Mango, Anola, Ber, Pomegranate, Guava, Jamun, Citrus spp. (Mandarin, Sweet Orange, Grapefruit, Pummelo, Lime and Lemon), Fig, Custard Apple, Jack fruit, Litchi, Sapota, Khirni, Date fruit, Mahua, Lasorda, Wood apple, Bael, Cashew Nut, Hog Palm, Tropical Cherry, Chironji, Tamarind, Mahua, Phalsa, Karonda, Carambola, Pineapple, etc. are being grown in this unit. The university is working on standardization of different planting system and

Germplasm available in Fruits Orchard

S. .No	Name of the crops	Name of the Varieties	S. No	Name of the crops	Name of the Varieties
1.	Anola	Chakkya, NA-6, NA-7, NA-10	17.	Khirni	Local
2.	Bael	Goma Yashi, NB-S-1, S-2, NB-5, NB-7	18.	Lasorda	Jabalpur Local
3.	Ber	NB-S-2, NB-S-1, Gola, BAU-1	19.	Lemon	Punjab Galgal, Kagzi Kalan
4.	Carambola	Thailand	20.	Lime	Pusa Avinab, Pusa Udit, NRCC-8, Kagzi lime
5.	Cashew Nut	BPP-8, Mednapure local	21.	Litchi	Rose scented, Bomby-S-1
6.	Cherry	Tropical Cherry	22.	Mahua	Local
7.	Chironji	Local	23.	Mandarin	W. Murcott, Daisy, Kinnow, NRCC-4
8.	Custard Apple	NMK-1, Annona-2, Balanagar	24.	Mango	Mallika, Amrapali, Arunika, Chausa, Dasheri, Langra, Rajapuri, Arunima, Pusa Parativa, Kesar
9.	Date fruit	Tissue Culture	25.	Phalsa	Thar Pragati
10.	Fig	Diana	26.	Pineapple	Mauritius
11.	Grapefruit	Marsh Seedless, Red Blush, Flame Grapefruit	27.	Pomegranate	Arakta, Bhagwa, Super Bhagwa, Ganesh, G-137, Jalore Seedless, Ruby, Mridula
12.	Guava	Dhabal, Sweta, Lalit, L-49, Allahabad Safeda, Thailand	28.	Pummelo	US-145
13.	Hog Palm	Thailand	29.	Sapota	Kalipatti, Cricket Ball
14.	Jackfruit	Local	30.	Sweet Orange	Pusa Round, Pusa Sharad, Mosambi, Sathgudi
15.	Jamun	Goma Pryanka, NJ-6, NJ-7, J-42, J-37.	31.	Tamarind	Goma Prateek
16.	Karonda	Thar Komal	32.	Wood apple	Local

other intercultural operations for realizing optimum yield of improved varieties of promising fruit crops for Bundelkhand region. Emphasis has been also given on development of good agricultural practices, germplasm collection and value addition.

- **Establishment of High Density Guava Orchard**

  Guava can adapt itself to a wide range of climate and soil conditions. However, it performs best under subtropical conditions. The climatic conditions, soil type and other factors are ideal in Bundelkhand region for Guava cultivation. The University collected planting material of promising varieties like Allahabad Safeda, Dhabal, Lalit, L-49 (Sardar) and Sweta from ICAR- Central Institute

Lasora *(Cordia dichotoma)*

Fig *(Ficus carica)*

Bael *(Aegl marmetos)*

Pineapple *(Ananas Comosus)*

for Subtropical Horticulture, Lucknow and planted them in the last week of July, 2017 for the establishment of a high density guava orchard.

- **Establishment of Pomegranate Orchard**

Pomegranate can adapt itself to a wide range of climate and soil conditions. It however, performs best under semi-arid and arid conditions. In Bundelkhand region, climatic conditions, soil type and other factors are ideal for pomegranate cultivation. The planting material was collected from ICAR-National Research Center on Pomegranate, Solapur, Maharashtra. The varieties are Arakta, Bhagwa, Super Bhagwa, Ganesh, G-137, Jalore Seedless, Ruby and Mridula. Planting distance plant to plant 3 m and row to row 4 m were maintained and planting was done during August-September, 2017.

The demonstration block, high density orchard and pomegranate orchard were established at University Fruit Research Station in an area of approximately 1.5 ha. for exhibition of different types of fruit crops to the students, farmers, visitors and other stakeholders of fruit sector. Improved as well as popular varieties of various fruits developed by ICAR research Institute and SAUs and others research Institute were demonstrated in this block with recommended scientific package of practices.

8.4 Establishment of Mushroom Production Unit

The Mushroom Production Unit was established in the University campus, wherein various activities like culture collection and its maintenance, spawn preparation, compost and casing soil preparation and production of oyster as well as button mushroom on trial basis was standardized to promote its cultivation in the region. Four species of Pleurotus *viz. Pleurotus*

Fruiting bodies of Agaricus bisporus ready for harvest

Fruiting bodies of *Pleurotus ostreatus*

Fruiting bodies of *Pleurotus eous*

sajor-caju, *Pleurotus florida*, *Pleurotus ostreatus*, *Pleurotus eous* and two strains of *Agaricus bisporus* are being maintained at the unit. Compost was prepared with long method with eight turnings, followed by mixed spawning @ 0.75 per cent and filling in polyethylene bags of 10 Kg capacity. The pinheads develop into harvestable mushrooms after five days of pin head initiation. For oyster production, wheat straw was chemically sterilized and dried to 60 per cent moisture. Thereafter, the spawning was done @ 3.0 per cent and packed in 5 Kg bags. The pin head initiation started after spawn run that developed into harvestable fruiting body.

8.5 Establishment of Medicinal and Aromatic Garden

A Medicinal and Aromatic Garden was established and developed at university campus in an area of 0.81 ha. The garden has 60 important species like *Ptercarpus santalinus*, *Eleocarpus ganitrus*, *Ocimum* spp., *Justicia adhatoda*, *Bryophyllum pinnatum* etc. The germplasm was collected from JNKVV, Jabalpur, NDAUT, Faizabad, DMPAR, Anandand Dr Y.S Parmar university of Horticulture & Forestry, Solan.

Forest Nursery has been developed at the university campus with different forest tree species

Inaugration of Medicinal and Aromatic Garden by Dr. T. Mohapatra, Secretary, DARE & DG, ICAR

List of medicinal plants in the Medicinal and Aromatic Garden

No.	Local Name	Botanical Name	Family
1.	Rama Tulsi	*Ocimum sanctum*	Lamiaceae
2.	Palmarosa	*Cymbopogon martinii*	Poaceae
4.	Adulsa	*Justicia adhatoda*	Acanthaceae
5.	Ajuba	*Bryophyllum pinnatum*	Crassulaceae
6.	Shatavari	*Asparagus recemosus*	Liliaceae
7.	Ghritkumari	*Aloe barbadensis*	Asphodelaceae
8.	Mint	*Mentha arvensis*	Labiatae
9.	Peela Bhringraj	*Eclipta prostrate*	Astraceae
10.	Gurmar	*Gymnema sylvestre*	Asclepiadaceae
11.	Vajradanti	*Barleria prionitis*	Acanthaceae
12.	Sarpagandha	*Rauwoulfia serpentina*	Fabaceae
13.	Anantmool	*Tylophora indica*	Asclepiadaceae
14.	Chitrak	*Plumbago auriculata*	Plumbaginaceae
15.	Hadjod	*Cissus quadrangularis*	Vitaceae
16.	Lagum Bela	*Jasminum sambac*	Oleaceae
17.	Parijat	*Nyctanthes arbor-tristis*	Oleaceae
18.	Katakataka	*Bryophyllum pinnatum*	Crassulaceae
19.	Elaichi grass	*Elettaria cardamomum*	Zingiberaceae
20.	Guggal	*Commiphora wightii*	Burseraceae
21.	Lemon grass	*Cymbopogon Citratus*	Poaceae
22.	Kewra	*Pandanus tectorius*	Pandanaceae
23.	Nirgundi	*Vitex negundo*	Lamiaceae

viz. Teak, Albizia, Behra, Acacia, Sissoo and Neem.

8.6 Establishment of Laboratories

The University has strengthened specialized laboratories in the field of Horticulture, Soil Science & Agronomy, Genetics, Biotechnology, Physiology & Biochemistry, Plant Pathology, and Forestry for imparting practical oriented quality education and hands-on-training. The Plant Pathology

No.	Local Name	Botanical Name	Family
24.	Karonda	*Carissa carandas*	Apocynaceae
25.	Brahmi	*Bacopa monnieri*	Plantaginaceae
26.	Guggul	*Commiphora wightii*	Burseraceae
27.	Kalmegh	*Andrographis paniculata*	Acanthaceae
28.	Jangli Pyaj	*Urgenia indica*	Liliaceae
29.	Lajwanti	*Mimosa pudica*	Fabaceae
30.	Bakuchi	*Psoralea corylifolia*	Fabaceae
31.	Kapoor Tulsi	*Ocimem kilimandschaicum*	Lamiaceae
32.	Aparajeeta	*Clitoria ternatea*	Fabaceae
33.	Ajwain	*Trachyspermum ammi,*	Apiaceae
34.	Citronella	*Cymbopogon winterianus,*	Poaceae
35.	Kanghi	*Abutilon indicum,*	Malvaceae
36.	Dambuti	*Tylophora indica,*	Asclepiadaceae
37.	Chameli	*Jasminum sambac*	Oleaceae
38.	Levender	*Lavandula offinalis*	Lamiaceae
39.	Lajwanti	*Mimosa pudica*	
40.	Hadjod	*Cissus quadrangularis*	Vitaceae
41.	Indian Long Pepper	*Piper longum,*	Piperaceae
42.	Sadabahar	*Catharanthus roseus*	Apocynaceae.
43.	Gudmar,Gurmar	*Gymnema sylvestre*	Apocynaceae.
44.	Giloy	*Tinospora cordifolia*	Menispermaceae
45.	Stevia	*Stevia rebaudiana*	Asteraceae
46.	Rudraksha	*Eleocarpus ganitrus*	Elaeocarpaceae
47.	Rakta Chandan	*Pterocarpus santalinus*	Fabaceae
48.	Bahera	*Terminalia bellirica*	Combretaceae
49.	Badam/Almond	*Prunus dulcis*	Rosaceae
50.	Bakain/Chinaberry	*Melia azedarach*	Meliaceae,
51.	Harar	*Terminalia chebula*	Combretaceae
52.	Madhukamani	*Murraya paniculata*	Rutaceae
53.	Neem	*Azadirachta indica*	Meliaceae
54.	Lasoda, Lasura	*Cordia dichotoma*	Boraginaceae
55.	Meetha neem	*Murraya koenigii*	Rutaceae
56.	Saptaparni	*Alstonia scholaris*	Apocynaceae
57.	Shahtoot/White mulberry	*Morus alba*	Moraceae
58.	Shikakai	*Acacia concinna*	Mimosaceae
59.	Arjun	*Terminalia arjuna*	Combretaceae
60.	Khaijadi	*Prosopis cineraria*	Mimosaceae

Inaguration of the Plant Pathology Laboratory by Dr. T. Mohapatra, Secretary, DARE & DG, ICAR

Laboratory of the University was inaugurated by Dr. T. Mohapatra, secretary, DARE & DG, ICAR on 31st July, 2017.

8.7 Construction of Academic and Administrative Buildings

The University construction agency NBCC has started the construction work of Academic Block, Administrative Block, VC Residence and Girls Hostel, which is in full swing. The hostel will provide accommodation to 200 students. The NBCC has also awarded work for the construction of type VI and Type IV Residences.

9. Finance and Budget

The University gets funds from Department of Agricultural Research and Education, Ministry of Agriculture and Farmers Welfare Govt. of India for carrying out its activities. During the academic year 2017-18, the University was allotted a budget of Rs. 33.50 crores only. The Balance Sheet as on 31st March, 2018 and Income and Expenditure Account for the year ending 31st March, 2018 are given in **Annexure- VI and VII**.

10. Other Major Activities/Events

10.1 Independence Day Celebration

On India's 71st Independence Day, Vice Chancellor Dr. Arvind Kumar hoisted the National Flag at University campus and addressed the faculty, staff and students. He conveyed his greetings to University family and wished them to scale newer heights of progress in the years to come. He called upon the young generation not to forget sacrifices of countless people who sacrificed their lives so that we attained Swarajya. He recalled that unity in diversity has been our greatest strength and our cultural tradition of respect for others has persisted Indian civilization. He presented an overview of growth in agriculture since independence. Indian agriculture, which grew at the rate of about one percent per annum during the fifty years before Independence, has grown at the rate of about 2.6 percent per annum in the post-Independence era. Expansion of area was the main source of

Glimpses of construction work

growth in the period of fifties and sixties after that the contribution of increased land area under agricultural production has declined overtime and increase in productivity became the main source of growth in agricultural production. He complimented the combined efforts of farmers, Indian government and scientists in eradicating country's dependence on imported food grains. The application of science and technology for increasing yield per hectare ushered Green Revolution and ensured sustained food security. He congratulated the farmers for expanding area under pulses to the tune of 1.5 times, despite the discouragement of successive droughts. Our scientists have created hundreds of high yielding variety seeds to maximize the agricultural output. The shortage of fertiliser is like something out of a bad dream of the past thanks to the pragmatic policies of the government. He exhorted the staff and students to remain relevant in their skill set and come up to global standards. Mrs. Promod Kumari Rajput, Member, University Board of Management as chief guest of the function also paid tributes to the sacrifice of our freedom fighters and blessed the students for their bright future. The day was marked by sports and cultural activities by students.

University Students and Staff taking Sadhbhavna Day pledge

10.2 Sankalp se siddhi Tak

RLBCAU, Jhansi in pursuance with Government of India's Directives organized a Pledge Taking Ceremony on 9th August, 2017 to observe the 70 years of Freedom and 75 years of Quit India Movement. The University students and staff members took a pledge on "Naye Bharat ka Sankalp" on this occasion.

10.3 Sadbhavana Diwas

The University also observed 20th August, 2017 as the **Sadbhavana Diwas** and all the students and faculty members of the University took a Sadhbhavna Day pledge.

10.4 Hindi Chetina Week

Hindi Pakhwara was observed, incompliance of official language policy of Central Government, from 14th September, 2017 to 30th September, 2017. Several competitions such as Quiz/GK competition, Essay competition, Poetry Competition, etc. were organized both for students and faculty members during this period. Dr. Arvind Kumar, Hon'ble Vice Chancellor as Chief Guest of the event awarded the winners.

10.5 Swachh Bharat Abhiyan

A program "**Swachhta Hi Sewa**" was organized during 17th September, 2017 to 2nd October, 2017. Clean India Campaign has received a great response from each and every member of the RLBCAU campus. As per the directions received from the council the University has carried out several activities during the sanitation campaign. During the entire programme the University celebrated the Sewa Diwas by cleaning and sweeping the University campus; celebrated Samagra Swachhta Diwas by performing Sharmdan at Bhojla village; participated in cleaning the tourist spots at Jhansi and finally the students and employees were awarded for participation in Swachhta Abhiyan. The University staff and students took the pledge for cleanliness for the benefit of environment and health.

10.6 Rashtriya Ekta Diwas

Rashtriya Ekta Diwas was celebrated on 31st October, 2017. During this event **"A Run for Unity"** was organized at the University campus. A Badminton Tournament was also organized at the University level to motivate the students towards various sports activities.

10.7 Agriculture Education Day

The **Agricultural Education Day** was celebrated on 3rd December, 2017 to celebrate the birthday of the first Indian Union Agriculture Minister and the first President of Independent India, Bharat Ratna, Dr. Rajendra Prasad. The objective of this day is to expose students including schools to various facets of agriculture and its relevance to country's development, inspire them and attract them towards agriculture, so that they develop interest in agriculture and allied subjects, choose professional career after schooling in some of these courses, engage themselves in agriculture and related activities or become agri-entrepreneur in future. The University faculty explained about the developments in agriculture sector since independence particularly related to spread of agricultural education and its future prospects.Mr. Ajay Soni, Bank Manager, NABARD, Jhansi, the Chief Guest for the function, highlighted the various schemes launched by NABARD to push farmers' income.

10.8 Soil Health Day

The **Soil Health Day** was celebrated on 5th December, 2017. On this occasion, more than 60 farmers were invited and made aware about the importance of soil health and its impact on the extent of nutrient application, production and yield of crops.The speakers complimented farmers, policy makers and scientists for making India food secure and second world-wide in farm output.

Soil Health Day

10.9 Republic Day Celebration

The University celebrated **69th Republic day**, marking the anniversary of the day the country's Constitution was adopted in 1950. After flag hoisting, Dr. Arvind Kumar, Hon'ble Vice-chancellor, recalled the events that led to phenomenal growth in agriculture since independence. Mrs. Pramod Kumari Rajput, Member, Board of Management, graced the function as Guest of Honour. The Cultural programs and sports activities were also organized by the students on this occasion.

10.10 All India Inter Agricultural University Games and Sports

The Students of RLBCAU Jhansi participated in the Agri-Sports, 2017-18 organized at GKVK, Bangalore campus by University of Agricultural Science, Bangalore, from 30th January 2018 to 3rd February, 2018. University participated in the event for the second time to showcase the latent potential of the University students in the field of games and sports with a contingent of twenty one including two team managers. Dr. A. S. Kale and Dr. Priyanka Sharma were the Team Leaders. Over 60 teams of agricultural, veterinary and animal science universities and educational institutions of Indian Council of Agricultural Research from across the country participated in the event.

University Contingent for Agri-sports Meet

10.11 Agri Uni-fest

The 18th All India Agricultural University Youth Festival, AGRI UNIFEST-2017-18 was held on 12th -16thFebruary, 2018 at Tirupati, Andhra Pradesh. It offers opportunities to the students of Agriculture Universities to show their talent in folk dance, music, literary events like quiz, elocution, debate, extempore, theatre and fine arts. A group of 21 students and two team managers of RLBCAU, Jhansi participated in different events like mime, one act play, extempore, group song, group dance, debate, rangoli, clay modeling etc. and performed well. The team was led by Dr. Shailaja Punetha and Dr. Ashutosh Kumar.

University students at Agri-unifest

10.12 National Service Scheme

The University initiated National Service Scheme for all the undergraduate students of Agriculture, Horticulture and Forestry in its efforts to inculcate essence of democratic living and to uphold the need for self-less service to the Society. A seven day long NSS Camp was organized from March 16th to 22nd, 2018 at gram Bhojla, Jhansi. The coordination committee constituted of Dr. Meenakshi Arya, Scientist, Dr. Usha, Programme Coordinator and Dr A S Kale, Programme Officer.The camp was inaugurated by Dr. Mukesh Srivastava, Registrar. All the University students participated in this camp. The NSS volunteers strived for the well-being of the society and to bring awareness about various social evils and community related problems associated with environment, sanitation, agriculture, health and education during the period. The NSS Unit organised guest lectures from eminent experts on a wide ranging issues like forest conservation,

Towards selfless service to the society

sustainability of natural resources, importance of basic education, state of Indian agriculture and technological innovations, agriculture finance, fisheries development etc. Dr. Arvind Kumar, Hon'ble Vice Chancellor also visited the camp and guided the students.

10.13 Speech of Hon'ble PM

The Live telecast of Speech of Hon'ble PM from Krishi Mela organized at IARI, Pusa New Delhi on 17thMarch, 2018 to the farmers of the Jhansi, students & staff of RLBCAU and Member, BOM.

10.14 World Forestry Day

World Forestry Day was celebrated on 21st March, 2018. Dr. A. K. Malviya, Assistant Conservator of Forest, graced the function as the Chief Guest. The tree plantation was done at Bhojala Gram and the University campus. Further, the speech and chart competition was also organized by the university for the students.

10.15 World Environment Day

World Environment Day – which is observed on 5th-June every year across the globe – is the largest annual event for positive environmental action. This year's theme 'Beat Plastic Pollution', takes forward the call to action by all by coming together to combat one of the greatest environmental challenges of our time. The University students and faculty organized the day with a plantation drive with focus on Baheda (*Terminalia bellerica*) plants. The students pledged to adopt atleast one plant for its regular care. A lecture delivered by Dr Meenakshi Arya, Scientist (Plant Pathology) highlighted the importance of beating plastic pollution in the context of growing environmental concerns such as the depletion of

Plantation drive- connecting people to nature.

the soil erosion, management of ecological diversity, etc.

10.16 International Day of Yoga Celebrated

4th International Day of Yoga was celebrated at the University Campus on 21st June, 2018, which is the longest day of the year in the Northern Hemisphere and has special significance in many parts of the world. The theme for the 2018 celebration, was 'Yoga for Peace.' The University students, faculty and staff participated with a resolve to make yoga an integral part of life. The participants were reminded that Yoga in Sanskrit originally means "to join" and aims to join the body and mind with the soul. The significance of yoga was also highlighted as one of the most effective method of holistic healing since time immemorial. Over a period of time, this ancient practice has undergone many changes, to become adaptable with the needs of the modern civilization. Further, it was emphasized that in the postmodern era, where everyday life has become too stressful and burdened with anxiety, practicing yoga can open the doors of inner peace and happiness. The participants performed various Asanas, Pranayam and relaxation exercises as per yoga protocol provided by Ministry of AYUSH, Government of India.

10.17 Visits of Hon'ble Chancellor

Prof Panjab Singh, Hon'ble Chancellor of the Rani Lakhsmi Bai Central Agricultural University, Jhansi visited the University twice during the year on 11th October, 2017 and 20th May, 2018. He began with a meeting with the Vice chancellor

Yoga- A symbol of the Universal inspiration for harmony & peace.

and the management and then visited various laboratories and farm around the campus. An interaction with HODs of ICAR-IGFRI, ICAR-CAFRI and University teaching staff with students was organized with Prof Singh to explore the deployment of Scientists of ICAR Institutes as Visiting faculty. Hon'ble Chancellor also met with NBCC Engineers during a packed programme that saw him visit different construction sites of the campus as well as finalization of University Master Plan. During the interactions, he expressed his satisfaction over the pace of infrastructural development and hoped that quality of education and research at University campus will also capture the imagination of the public and farmers at large in near future through ground-breaking innovations and scholarly work communicated in an accessible manner.

Interactive meeting of faculty and staff with Prof. Panjab Singh, Hon'ble Chancellor

11. List of Visitors

S. No.	Name	Designation	Date
1.	Dr. P. L.Gautam	VC, Career Point University, HP	27th July, 2017
2.	Dr. Trilochan Mahopatra	Secretary DARE &DG ICAR	30th July, 2017
3.	Dr. N. S.Rathore	DDG (Education), ICAR & Member EMC and BOM, RLBCAU	4th August, 2017
4.	Dr A K Singh	Former VC, RSKVV Gwalior and Member BOM, RLBCAU	4th August, 2017 4-6 February, 2018 14th June, 2018
5.	Dr. A.K. Sikka	Former DDG (NRM), ICAR & Member EMC, RLBCAU	4th August, 2017
6.	Sh. C.Roul,	Secretary, ICAR & Member, BOM & EMC, RLBCAU	4th August, 2017
7.	Dr. J. P. Mishra	Advisor, Niti Ayog & Member, BOM, RLBCAU	4th August, 2017
8.	Dr. S. K. Malhotra	Agriculture Commissioner, DAC & Farmers Welfares, GOI, New Delhi & Member BOM, RLBCAU	4th August, 2017

S. No.	Name	Designation	Date
9.	Dr. K. R. Dhiman	Former VC, Dr. Y. S. Parmar Univ. of Horticulture and Forestry & Member BOM, RLBCAU	4th August, 2017 14th June, 2018
10.	Dr. B. V. Patil	Former VC, UAS, Raichur& Member BOM, RLBCAU	4th August, 2017 14th June, 2018
11.	Sri N. Kumar	Member, BOM, Devarahally, Post, Lakshmisagar, Taluk, Dist. Tumkur, Karnataka	4th August, 2017 14th June, 2018
12.	Mrs. Pramod Kumari Rajput	Member, BOM, RLBCAU from Jhansi	4th August, 2017 14th June, 2018
13.	Sri Mahendra Pratap Singh Yadav	Member, BOM, RLBCAU from Panna	4th August, 2017 14th June, 2018
14.	Sri Gopal Das Paliwal	Member, BOM, RLBCAU from Hamirpur	4th August, 2017 14th June, 2018
15.	Dr. Mridula Billore	Dean Agriculture, RSKVV, Gwalior and BOM, RLBCAU	4th August, 2017 6th February, 2018
16.	Dr Panjab Singh	Hon'ble Chancellor, RLBCAU	11th October, 2017 20th May, 2018
17.	Shri Hari Shankar	ADM (City), Jhansi	28th November, 2017
18.	Dr. Arvind Shukla	Project Director, AICRP on Micro & Secondary Nutrients, IISS, Bhopal	19th December, 2017
19.	Dr. B. Gangwar	Former Director, IIFSR, Modipurum	20th December, 2017
20.	Dr. J. P. Yadav	Dean, Agri. Engg., CAET, Etawah	22nd December, 2017
21.	Dr. G. P. Srivastava	Ex- Director (Res.), CSAUA&T, Kanpur	24th December, 2017
22.	Dr. Lallu	Prof. & Head, Crop Physiology, CSAUA&T, Kanpur	29th December, 2017
23.	Shri C. P. Tiwari	City Magistrate, Jhansi & Registrar, BU, Jhansi	19th January, 2018
24.	Shri Amit Yadav	Deputy Director, MandiPrasihad, Jhansi	23rd January, 2018
25.	Dr. Prabhat Kumar	National Coordinator, NAEHP, ICAR, New Delhi	27th January, 2018 27th June, 2018
26.	Dr. Y. C. Gupta	Prof. & Head, Landscaping, Dr. Y. S. Parmar Univ. of Hort. & Forestry, Solan	27th January, 2018
27.	Dr. R K Mittal	Former VC, Dr. RAU, Pusa, Samastipur	4-6 February, 2018
28.	Dr. Shanker Lal	Former Director, IIPR, Kanpur	
29.	Dr. K D Upadhaya	Former, Dean (Agriculture), CSUA&T, Kanpur	

S. No.	Name	Designation	Date
30.	Dr J B Choudhary	Former VC, CCSHAU, Hisar and GBPUA&T, Pantnagar	24th February, 2018
31.	Dr. R. V. Kumar	Acting Director, IGFRI, Jhansi	24th February, 2018
32.	Shri Ashish Gupta	ADM (City), Datia	25th February, 2018
33.	Sh. Purshotum Roopala	Hon'ble MoS, MoA&FW	27th February, 2018
34.	Dr. O. P. Chaturvedi,	Former Director, CAFRI, Jhansi	7th March, 2018
35.	Dr. Tej Pratap	Former VC, SKUAS&T, Srinagar	12th March, 2018
36.	Col. Sudeep Rajora	Colonel, Cantonment Jhansi	13th March, 2018
37.	Dr. Kamal Katiyar	Deputy Director, Agriculture, Jhansi, UP	16th March, 2018
38.	Dr. Umesh Katiyar	Deputy Director, Plant Protection, Jhansi,UP	16th March, 2018
39.	Dr. Rajeev Verma	Citrus Specialist, Barua Sagar, Jhansi	17th March, 2018
40.	Dr Ajay Soni	District Development Manager, NABARD, Jhansi	20th March, 2018
41.	Mr. A. K. Malviya	Assistant Conservator of Forest, Jhansi	21st March, 2018
42.	Dr. S. B. Mishra	Additional Director, Department of Health, Jhansi	22ndMarch, 2018
43.	Dr. A K Nigam	HOD, Civil Engg. Deptt., BIT, Jhansi as Spl. Invitee	18th April, 2018
44.	Dr. Anil Saxena	Head, Civil Engg. Department, MIT, Gwalior & Member, Building & Works Committee	18th April, 2018
45.	Dr. S. K. Dhyani	Former Director, CAFRI, Jhansi	28th May, 2018
46.	Dr. Anil Garg	Acting Director, CAFRI, Jhansi	28th May, 2018
47.	Dr. Masood Ali	Former Director, IIPR, Kanpur	12th February, 2018
48.	Dr. Bhoop Singh, Head	NRDMS & NSDI Division, Department of Science and Technology, New Delhi	5th May, 2018
49.	Dr. S. P. Singh	Prof. & Head, Geology Department, BU, Jhansi	5th May, 2018
50.	Dr. A. K. Singh	Principal Scientist, NRDMS & NSDI Division, Department of Science and Technology, New Delhi	5th May, 2018
51.	Mr. Vijay Sharma	Former Secretary MoEF& Member of Board of Trustee, World Agroforestry Centre, Nairobi	5th May, 2018
52.	Mr. Alexander Muller	Member of Board of Trustee, World Agroforestry Centre, Nairobi	5th May, 2018
53.	Dr. Javed Rizvi	Regional Director, South Asia, ICRAF, New Delhi	5th May, 2018
54.	Dr. Ravi Prabhu	DDG (Res.). ICRAF, World Agroforestry Centre, Nairobi	5th May, 2018

S. No.	Name	Designation	Date
55.	Dr. Ram Bhajan	Prof. PBG, GBPUA&T, Pantnagar	18th June, 2018
56.	Dr. Lakshmi Chand	Former Head, Biochemistry, GBPUA&T, Pantnagar	19th June, 2018
57.	Dr. Bhairam Singh	Deputy Director, Horticulture, Jhansi	22nd June, 2018
58.	Dr. Poonam Singh	Dean (Agriculture), CSAUA&T, Kanpur	25th June, 2018
59.	Dr. R. A. Tripathi	Former Head, Entomology, CSAUA&T, Kanpur	26th June, 2018
60.	Dr. Arif Broadway	Director (Extension), SHUATS, Allahabad	28th June, 2018

12. Faculty participation in conferences/ trainings/meetings

The University faculty participated in various conferences/trainings and important meetings organized at international/national level to present papers/ reports and contribute to various academic/research issues.

Conferences and Workshops Attended:			
S No.	**Name of the Conference**	**Date and Venue**	**Name and Designation**
1.	International Conference Biotechnology and Biological Sciences	25-26th August 2017 at University of Engg. and Technology, Kolkata	Dr. Sadhana Singh Sagar, Teaching Associate (Microbiology), Rani Lakshmi Bai Central Agricultural University, Jhansi
2.	21st Annual Group Meet of ICAR-AICRP on Chickpea	28th -30th August, 2017 at ICAR-CIAE, Bhopal.	Dr. Meenakshi Arya, Scientist (Plant Pathology), Rani Lakshmi Bai Central Agricultural University, Jhansi Dr. Anshuman Singh, Scientist (Genetics & Plant Breeding), Rani Lakshmi Bai Central Agricultural University, Jhansi
3.	International Conference on Advance in Agricultural and Biodiversity Conservation for Sustainable Development.	27-28th October, 2017 at CCS University, Meerut	Dr. Amit Kumar Singh, Teaching Associate (Post Harvest Technology), Rani Lakshmi Bai Central Agricultural University, Jhansi
4.	National Symposium "Bio-rational Approaches in Plant Disease Management" organized by Indian Society of Plant Pathologists and Himalayan Phytopathological Society	27th to 28th October, 2017 at Dr. Y. S. Parmar, University of Horticulture and Forestry, Solan.	Dr. Anita Puyam, Teaching Associate (Plant Pathology), Rani Lakshmi Bai Central Agricultural University, Jhansi
5.	National Symposium on Pulses for Nutritional Security and Agricultural Sustainability.	2nd to 4th December, 2017 at ICAR-Indian Institute of Pulse Research, Kanpur.	Dr. Meenakshi Arya, Scientist (Plant Pathology), Rani Lakshmi Bai Central Agricultural University, Jhansi Dr. Anshuman Singh, Scientist (Genetics & Plant Breeding), Rani Lakshmi Bai Central Agricultural University, Jhansi

Conferences and Workshops Attended:			
S No.	**Name of the Conference**	**Date and Venue**	**Name and Designation**
6.	National Conference on Innovative Technological Interventions for Doubling Farmers Income.	08th February, 2018. Society for Integrated Development of Agriculture, Veterinary & Ecological Sciences & SKUAST, Jammu.	Prof. Dr. Kusumakar Sharma, Consultant, Rani Lakshmi Bai Central Agricultural University, Jhansi
7.	National Conference on Current Trends in Plant Science and Molecular Biology for Food Security and Climate Resilient Agriculture (PSMB2018)	15th-16th February, 2018 at Rajmata Vijayraje Scindia Krishi Vishwa Vidalaya (RVSKVV), Gwalior.	Upagya Sah, Technical Assistant, AICRP-Chickpea, Rani Lakshmi Bai Central Agricultural University, Jhansi
8.	20th Indian Agricultural Scientists and Farmers' Congress On "Recent Need based and Eco-Friendly Technologies for Doubling Farmers' Income"	17th-18th February, 2018 at BRIATS, Sringverpur, Allahabad	Dr. Amit Kumar Singh, Teaching Associate, Post Harvest Technology, Rani Lakshmi Bai Central Agricultural University, Jhansi
	Advanced Agri Business Management course for Executive and Managers	5th-9th March, 2018 at Bali, Indonesia	Dr. Mukesh Srivasta, Registrar, Rani Lakshmi Bai Central Agricultural University, Jhansi
9.	2nd International Conference Vijnana Parishad of India "Recent Trends of Computing in Mathematics, Statistics and Information Technologies"	9th-11th March, 2018 at Bundelkhand University, Jhansi	Dr. Amit Kumar Jain, Teaching Associate (Computer Science), Rani Lakshmi Bai Central Agricultural University, Jhansi
10.	International Conference on Agriculture, Allied and Applied Sciences (ICAAAS 2018)	28th-29th April, 2018 at Jawaharlal Nehru University, New Delhi	Upagya Sah, Technical Assistant AICRP-Chickpea, Rani Lakshmi Bai Central Agricultural University, Jhansi
11.	Meeting of ICAR Nodal Officers	4th-6th May, 2018 ICAR-CARI, Port Blair	Dr. Mukesh Srivasta, Registrar, Rani Lakshmi Bai Central Agricultural University, Jhansi

13. Awards and Honours

Recognisation/Awards/Fellowships

- Dr. Arvind Kumar, Vice-Chancellor was nominated as Chairman of 6th Quinquennial Review Team of ICAR- Indian Institute of Oilseeds Research (IIOR) and AICRP-Oilseeds (Sunflower, Safflower, Castor) AICRP-Sesame & NIGER and AICRP-Linseed.
- Dr. Arvind Kumar, Vice-Chancellor was nominated as Chairman, National Core Group of Broad Subject Matter Area Committees constituted by ICAR for development of Academic Regulations for Masters and Ph.D

programmes, defining names and curricula of Masters' and Ph.D. disciplines for uniformity and revision of syllabi for courses of Masters' and Ph.D. degree disciplines.

- Dr. Meenakshi Arya, Scientist (Plant Pathology) was conferred Fellowship of Bose Science Society, Tamil Nadu Scientific Research Organization, Tamil Nadu.
- Dr. Meenakshi Arya, Scientist (Plant Pathology) was nominated as Member, Editorial Board of International Journal of Agriculture, Environment and Biotechnology.

14. Publications

Conference Abstracts/Papers

1. Sagar, S. S. and Kaistha, S. 2017. Small Colony Variant Selection, Biofilm Induction and Interspecies Interactions of Ocular Clinical *Pseudomonas aeruginosa*. In *Biospectrum,* International Conference Biotechnology and Biological Sciences, University of Engineering and Technology, Kolkata, August, 25-26.
2. Arya Meenakshi and Sharma Kusumakar. 2017. Farmer-centric Capacity-building and Entrepreneurial Development for Sustainable Agriculture. 1st National Conference on Improving Income of Farmers through Agriculture & Aquaculture through Development Interventions, CIFA, Bhubaneswar. January, 5-7, 2018. pp. 25.
3. Arya Meenakshi, Singh Anshuman and Sah Upagya. 2017. Factors affecting development of collar rot disease of chickpea in Bundelkhand region. National Symposium on Ecologically Sustainable Plant Diseases Management under Diversified Farming Situation & IPS Annual (North Zone) Meet, Sher-e-Kashmir University of Agricultural Sciences and Technology of Jammu (J&K).November, 13-14.
4. Pandey Rajesh Kumar and Arya Meenakshi. 2017. Integrated management of disease complex caused by interaction of root lesion nematode and *Fusarium oxysporum f. sp. ciceri* on chickpea by dual soil application and seed priming to avoid the loss in growth and yield. National Symposium on Pulses for Nutritional Security and Agricultural Sustainability, ICAR-Indian Institute of Pulse Research, Kanpur. December, 2-4, pp 248.
5. Singh Anshuman, Arya Meenakshi, Sah Upagya and Priyadarshini S K. 2017. Germplasm evaluation of chickpea (*Cicer arietinum* L.) for yield and yield contributing traits National Symposium on Pulses for Nutritional Security and Agricultural Sustainability, ICAR-Indian Institute of Pulse Research, Kanpur. December, 2-4. pp 158.
6. Arya Meenakshi and Sharma Kusumakar. 2018. Transforming Agriculture in Bundelkhand: Technological and Policy Implications. National Conference on Innovative Technological Interventions for Doubling Farmers Income, Society for Integrated Development of Agriculture, Veterinary and Ecological Sciences & SK University of Agricultural Sciences and Technology of Jammu. February, 08-10. Session VIII pp 2-3.
7. Singh A. K., Chaurasiya A. K. and Mitra S. 2017. Assessment of Antioxidant factors in elephant foot yam (*Amorphophallus paeoniifolius* Dennst- Nicolson) cultivars during storage. In International Conference on "Advance in Agricultural and Biodiversity Conservation for Sustainable Development" at CCS University, Meerut. October, 27-28.
8. Sah Upagya, Singh Anshuman and Arya Meenakshi. 2018. Correlation study and path coefficient analysis for chickpea (*Cicer arietinum*) in yield and yield contributing traits. In National Conference on Current Trends in Plant Science and Molecular Biology for Food Security and Climate Resilient

Agriculture, National Environmental Science Academy, New Delhi at RSKVV, Gwalior. February, 15-16.

9. Sah Upagya, Arya Meenakshi and Singh Anshuman. 2018. Evaluation of effect of various treatments on *Sclerotium rolfsii* infecting chickpea in Bundelkhand. In International Conference on Agriculture, Allied and Applied Sciences. Organized by Biologix Research and Innovation Centre at JNU, New Delhi. April, 28-29.Pp 368-369.
10. Singh A. K., Chaurasiya A. K. and Mitra S. (2018). Value added products of elephant foot yam (*Amorphophallus paeoniifolius* Dennst-Nicolson). Organized by Bioved Research Society Allahabad in 20th Indian Agricultural Scientists and Farmers' Congress On "Recent Need based and Eco-Friendly Technologies for Doubling Farmers' Income" at BRIATS, Sringverpur, Allahabad. February, 17-18.
11. Jain Amit Kumar, Saxena Rishi, Agarwal Saurabh, Newaj Ram and Rizvi R.H. 2018. Analysis of Carbon sequestration potential of Bilaspur district using data modelling and Computer based CO2FIX Model. 2nd International Conference Vijnana Parishad of India "Recent Trends of Computing in Mathematics, Statistics and Information Technologies" held at Bundelkhand university Jhansi. March, 9-11.
12. Abrol Ghan Shyam and Thakur K. S. 2018. Shifting the cultivation of peaches to nectarine as a matter of change of environmental conditions at lowers hills of Himachal Pradesh. International symposium on Environmental, Educational & Biological Research for Human Welfare at Banaras Hindu University, Varanasi. March, 25-26. pp 29.
13. Semwal Deeksha and Abrol Ghan Shyam. 2018. Instant potato custard mix: a new avenue of entrepreneurship. Third National Conference on Contemporary Food Processing and Preservation Technologies at Shoolini University, Solan HP. April, 12-13. pp. 64.

Popular Articles

1. मीनाक्षी आर्य, वैभव सिंह, अनीता पुयाम, अंशुमान सिंह, उपज्ञा साह एवं शैलजा पुनेठा–मशरुम की खेती–बुन्देलखण्ड में एक अतिरिक्त आय का स्रोत। कृषि जागरण अप्रैल 2018
2. Amit Kumar Jain, Usha, and Bhalendra Singh Rajput. Use of Computer application in Agriculture. Rashtriya Krishi. Vol. 12 (1), June, 2017.
3. Amit Kumar Jain. कृषि क्षेत्र में कम्प्यूटर तकनिकी के उपयोग। Rashtriya Krishi. Vol. 12 (1 & 2). August, 2017.
4. R.S. Bali, Ravinder Kour and Usha.Nutritional Importance of Seabuckthorn. *Rastriya Krishi.* Vol (12): 2, 4-5 pp.Dec., 2017.
5. Swati maurya, Usha and Radhey Shyam. Flax Seed: Beneficial natural product for Human health, *Rastriya Krishi.* Vol (12): 2, 109-110 pp. Dec. 2017
6. Usha, Radhey Shyam, Madhulika Srivastava and B. S. Rajput. Insect Pollinators And Sustainable Agriculture. *Rastriya Krishi.* Vol (12):1, 11-14 pp. June, 2017.

Books

1. Ghan Shyam Abrol, Ashutosh Singh and Mukesh Srivastava. 2017. MCQs on Agricultural Sciences. Kalyani Publishers, New Delhi, ISBN: 978-93-272-8265-8.
2. Ashutosh Singh, Prashant Yadav, Sushma Yadav and Anshuman Singh. 2017. Gateway to ICAR–JRF (Plant Science). Scientific International Publication, New Delhi. ISBN 978-93-87465-67-1.
3. Ashutosh Singh, Usha, Amit Kumar Jain, Susheel Kumar Singh and Anshuman Singh. 2017. Agricultural Sciences at a Glance. Scientific International, New Delhi. ISBN-

978-93-80000-00-0.

4. Vikram Jeet Singh, Ashutosh Singh, Radhey Shyam and Amit Kumar Jain. 2017. Objective Seed Science and Technology. Scientific International, New Delhi. ISBN-978-93-87465-75-6.

Book Chapters

1. Pankaj Lavania, Bhalendra Singh Rajput, Usha Thakur and Meenakshi Arya. 2017. Forest Protection and Legislation. In: MCQs on Agricultural Sciences.Eds. Ghan Shyam Abrol, Ashutosh Singh and Mukesh Srivastava. pp 362-376.Kalyani Publishers, ISBN 978-272-8265-8
2. Amit Kumar Jain. 2017. Computer Application and Statistics. In: MCQs on agricultural Sciences, In: MCQs on Agricultural Sciences. Eds. Ghan Shyam Abrol, Ashutosh Singh and Mukesh Srivastava. pp 362-376. Kalyani Publishers, ISBN 978-272-8265-8
3. Ashutosh Singh and Manoj Kumar Singh. 2017. Cell Biology. In: MCQs on Agricultural Sciences. Eds. Ghan Shyam Abrol, Ashutosh Singh and Mukesh Srivastava. pp 362-376. Kalyani Publishers, ISBN 978-272-8265-8
4. Ashutosh Singh, Mamta Singh and Anshuman Singh. 2017. Genetics and Plant Breeding. In: MCQs on Agricultural Sciences. Eds. Ghan Shyam Abrol, Ashutosh Singh and Mukesh Srivastava. pp 362-376.Kalyani Publishers, ISBN 978-272-8265-8
5. Joshi VK, Panesar PS and Abrol Ghan Shyam. 2017. Stone fruit wines. In: MCQs on Agricultural Sciences. Eds. Ghan Shyam Abrol, Ashutosh Singh and Mukesh Srivastava. pp 362-376. Kalyani Publishers, ISBN 978-272-8265-8

Review Papers

1. Abrol, Ghan Shyam, Thakur K. S., Pal, R. and Punetha, S. 2017. Role of Calcium in Maintenance of Postharvest Quality of Horticultural Crops. *International Journal of Economic Plants*, 04(02): 088-093.
2. Arya, Meenakshi. 2018. Evolving Paradigms in Biotechnology for Management of Crop Diseases. *International Journal of Agriculture, Environment and Biotechnology,* 11(3): 553-564.

15. Roadmap for the year 2018-19

- Continuation of B.Sc. (Hons.) Agriculture, B.Sc. (Hons.) Horticulture and B.Sc. (Hons.) Forestry Programme.
- Continuation of civil work for construction of Academic & Administrative block, Hostels and faculty residences.
- Improved provisions for UG education in agriculture, horticulture & forestry.
- Consolidation of infrastructure Research and extension education activities in select areas.
- Admission to PG programme in select courses in agriculture & allied sciences.

Annexure-I

Composition of Board of Management of the University

(In accordance with the para 12 (1) of the Schedule of Rani Lakhsmi Bai Central Agricultural University, Act 2014)

S. No.	Composition	Name & Designation	Status
1.	Vice Chancellor [Section 12 (1) (i) of the Schedule]	Dr. Arvind Kumar, Vice Chancellor, RLBCAU, Jhansi	Chairman
2.	Four Secretaries, from amongst the Secretaries in charge of the Departments of Agriculture and Animal Husbandry, Fishery and Horticulture of the States of Madhya Pradesh and Uttar Pradesh to be nominated by the Visitor by rotation: Provided that there shall not be more than two Secretaries from a State in the Board at a particular time; [Section 12(1) (ii) of the Schedule]	Principal Secretary, Department of Agriculture, Govt. of Uttar Pradesh, Lucknow-226001 Principal Secretary, Department of Animal Husbandry, Govt. of Uttar Pradesh, Lucknow – 226001 Mr Rajesh Rajora, Principal Secretary, Department of Agriculture, Govt. of Madhya Pradesh, Bhopal – 462003 Mr. Prabhanshu Kamal, Principal Secretary, Department of Animal Husbandry, Govt. of Madhya Pradesh Bhopal – 462003	Member Member Member Member
3.	Three eminent scientists to be nominated by the Visitor [Section 12(1) (iii) of the Schedule]	Dr. S.C. Modgal, Ex-Director General, UPCAR, Lucknow and Ex-Vice-Chancellor, GBPUAT, Pantnagar, 6, Rajdeep Enclave, Ph.II, 100 ft Road, Dayal Bagh, Agra – 282005. Dr. K.R. Dhiman, Ex Vice-Chancellor, YS Parmar University of Horticulture & Forestry, Solan, Himachal Pradesh,. Tashiling Cottage, below BCS, Phase-3, New Shimla, Shimla – 171009. Dr. B.V. Patil, Director of Edn. & Ex-Vice Chancellor, University of Agricultural Sciences, Raichur - 584104	Member Member Member
4.	One distinguished person representing Agro-based industries or a manufacturer having a special knowledge in agricultural development to be nominated by the Visitor; [Section 12(1) (iv) of the Schedule]	Sri N. Kumar, Devarahally, Post: Lakshmisagar, Taluk: Sirsa, Distt- Tumkur - 572139, Karnataka, C/o Siddeswara Gowda, Retd. SP. Canna Cottage,16th Cross, SIT Extension, Nandeesh Layout Tumkur – 572103	Member
5.	The Deputy Director-General (Education) representing the Indian Council of Agricultural Research; [Section 12(1) (v) of the Schedule]	Dr. N. S. Rathore, DDG (Education) ICAR, KAB-II, Pusa, New Delhi - 110012	Member
6.	One Dean of college and one Director to be nominated by the Vice-Chancellor on rotational basis; [Section 12(1) (vi) of the Schedule]	Dr.(Mrs.) Mridula Billore, Dean, B.M. College of Agriculture, Khandwa- 450001. Dr. P.K. Ghosh, Director, IGFRI, Jhansi – 284003.	Member Member

S. No.	Composition	Name & Designation	Status
7.	Three persons including at least a woman representing farmers in Bundelkhand to be nominated by the Vice-Chancellor by rotation in the States of Madhya Pradesh and Uttar Pradesh: Provided that there shall not be more than two representatives from a State in the Board at a particular time; [Section 12(1) (vii) of the Schedule]	Mrs. Pramod Kumari Rajput, Gondu Compound, Civil Lines, Jhansi – 284001. Sri Mahendra Pratap Singh Yadav, Yadav Complex, near Kumkum Talkies, Panna – 411002. Sri Gopal Das Paliwal, Town-Kurara, Ward 11, Paliwal Muhal, Janpath Hamirpur – 210505.	Member Member Member
8.	An Advisor (Agriculture), Planning Commission; [Section 12(1) (viii) of the Schedule]	Dr. J.P. Misra, Advisor (Agriculture), Niti Aayog, Govt of India, New Delhi – 110049.	Member
9.	A distinguished authority on natural resource or environment management to be nominated by the Visitor; [Section 12(1) (ix) of the Schedule]	Prof. Anil Kumar Singh, Ex-DDG (NRM) ICAR, Vice-Chancellor, Rajmata Vijayaraje Scindia Krishi Vishwavidyalaya, Gwalior – 474002.	Member
10.	Two persons not below the rank of Joint Secretary representing respectively the Departments of Government of India dealing with the Agriculture and Animal Husbandry to be nominated by the concerned Secretary to the Government of India; [Section 12(1) (x) of the Schedule]	Dr. S.K. Malhotra, Agriculture Commissioner, Room No. 231 Dept. of Agricultural and Co-operation & Farmers Welfares, Govt. of India, Krishi Bhawa New Delhi – 110001 Dr. O.P. Chaudhary, Joint Secretary (C & DD), Dept. of Animal Husbandry, Dairy and Fisheries Govt. of India, Krishi Bhawan, New Delhi - 110001	Member Member
11.	Nominee of the Secretary representing the Department of Agricultural Research and Education, Government of India; [Section 12(1) (xi) of the Schedule]	Addl. Secretary, DARE and Secretary, ICAR, Krishi Bhawan, New Delhi - 110001	Member
12.	The Registrar of the University–Secretary. [Section 12(1) (xii) of the Schedule]	Dr. Mukesh Srivastava	Secretary

**(till 14th June, 2018)*

Annexure-II

Composition of Finance Committee of the University

(In accordance with the para 17 (1) of the Schedule of Rani Lakhsmi Bai Central Agricultural University, Act 2014)

S. No.	Composition	Name & Designation	Status
1.	Vice Chancellor [Section 17 (1) (i) of the Schedule]	Dr. Arvind Kumar, Vice Chancellor, RLBCAU, Jhansi	Chairman
2.	Financial Advisor, Department of Agricultural Research and Education or his nominee not below the rank of Deputy Secretary; [Section 17(1) (ii) of the Schedule]	Financial Advisor, Department of Agricultural Research & Education, Government of India, Krishi Bhawan, New Delhi–110001.	Member
3.	Three persons to be nominated by the Board, out of whom at least one shall be a member of the Board; [Section 17(1) (iii) of the Schedule]	Dr. N.S. Rathore, Deputy Director General (Education), I.C.A.R., KAB-II, Pusa, New Delhi – 110012 Dr. A.K. Singh, Vice-Chancellor, Rajmata Vijayaraje Scindia Krishi Viswa Vidyalaya, Gwalior – 474002 (M.P.) Dr. M. Premjit Singh, Vice-Chancellor, Central Agricultural University, Imphal - 795004 (Manipur)	Member Member Member
4.	Three persons to be nominated by the Visitor; and [Section 17(1) (iv) of the Schedule]	Dr. P.L. Gautam, Ex-Chairman, PPV & FR Authority, & Ex- Vice-Chancellor, GBPUA & T, Pantnagar, H. No. 118, HP Housing Board Colony, Bindraban, Palampur Distt. Kangra – 176061 (H.P.) Prof. D.P. Ray, Ex- Vice-Chancellor, OUA & T, Bhubaneswar HIG-105, Kalinga Vihar, K-5, PO: Patrapada,Distt. Khurda, Bhubaneswar – 751019, Orissa Shri B.S. Ramaswamy, Additional Secretary & Financial Advisor (Retd.), Ministry of Steel & Mines, (GOI), 140, Mandakini Enclave, Alaknanda, New Delhi – 110019	Member Member Member
5.	The Comptroller of the University [Section 17(1) (v) of the Schedule]	Vacant	Member Secretary

Annexure-III

Teaching Faculty Engaged for B. Sc. (Hons.) Agriculture First, Second, Third and Fourth year

S.No.	Faculty	Designation	Course Title
I. Semester			
1.	Dr. Madhulika Pandey	Teaching Associate (Agronomy), RLBCAU, Jhansi	Fundamentals of Agronomy Human Values & Ethics* Field Crops-I (Kharif)
2.	Dr. Susheel Kumar Singh	Teaching Associate (Soil Science), RLBCAU, Jhansi	Fundamentals of Soil
3.	Dr. Ranjit Pal	Teaching Associate (Fruit Pomology), RLBCAU, Jhansi	Fundamentals of Horticulture
4.	Dr. Bhalendra Singh Rajput	Teaching Associate (Agroforestry), RLBCAU, Jhansi	Introduction to Forestry
5.	Dr. Ashutosh Singh	Teaching Associate (Biotechnolgy & Bio Chemistry), RLBCAU, Jhansi	Fundamentals of Plant Bio-chemistry & Biotechnology, Principles of Plant Biotechnology
6.	Dr. S.K Shukla	Teaching Associate (Biotechnolgy & Bio Chemistry), RLBCAU, Jhansi	Fundamentals of Plant Bio-chemistry & Biotechnology
7.	Dr. Dheeraj Mishra	Teaching Associate (Agricultural Extention), RLBCAU, Jhansi	Rural Sociology & Educational Psychology, Agricultural Heritage, Fundamentals of Rural Sociology and Educational Psychology
8.	Dr. Shushma	Guest Faculty, RLBCAU, Jhansi	Elementary Mathematics
9.	Dr. Akla Jain	Guest Faculty (English), RLBCAU, Jhansi	Comprehension & Communication Skills in English
10.	Dr. Usha	Teaching Associate (Entomology), RLBCAU, Jhansi	Crop Pests and stored grain pests and their Management, NSS
11.	Dr. AS Kale	Teaching Associate, RLBCAU, Jhansi	NSS
12.	Dr. Anshuman Singh	Scientist, Genetics & Plant Breeding, RLBCAU, Jhansi	Fundamentals of Plant Breeding
13.	Dr. Shailja Punetha	Teaching Associate (Vegetable Science) RLBCAU, Jhansi	Production Technology for Vegetables and Spices
14.	Dr. Abhishek Kalia	Teaching Associate (Agricultural Economics), RLBCAU, Jhansi	Agricultural Finance and Cooperation, Fundamentals of Agri Business Management
15.	Dr. Amit Tomar	Teaching Associate (Agronomy), RLBCAU, Jhansi	Crop Production Technology – I (Kharif Crops)

S.No.	Faculty	Designation	Course Title
16.	Dr. AB Mazoomdar	Pricipal Scientist (Retd.), IGFRI, Jhansi	Livestock and Poultry Management
17.	Dr. Vineet Kumar	Assistant Professor, Bundelkhand University, Jhansi	Environmental Studies and Disaster Management
18.	Dr. Amit Kumar Jain	Teaching Associate (Computer Application), RLBCAU, Jhansi	Agri- Informatics
19.	Dr. C.D. Mishra	Teaching Associate (Agricultural Engineering), RLBCAU, Jhansi	Farm Machinery and Power
20.	Dr. Shailendra Kumar	Assistant Professor, Bundelkhand University, Jhansi	Statistical Methods
21.	Dr. Samarpal Singh	Teaching Associate (Agronomy), RLBCAU, Jhansi	Field Crops-I (Kharif), Farming Systems and Sustainable Agriculture
22.	Dr. Vaibhav Singh	Teaching Associate (Plant Pathology), RLBCAU, Jhansi	Disease of Horticultural crops and their Management
23.	Dr. Ghanshyam Abrol	Teaching Associate (Post Harvest Management), RLBCAU, Jhansi	Post-harvest management & value addition of fruits and vegetables
II. semester			
1.	Dr. Meenakshi Arya	Scientist, Plant Pathology, RLBCAU, Jhansi	Fundamentals of Plant Pathology
2.	Dr. Anshuman Singh	Scientist, Genetics & Plant Breeding, RLBCAU, Jhansi	Fundamentals of Genetics
3.	Dr. Sadhana Singh Sagar	Teaching Associate (Micro Biology), RLBCAU, Jhansi	Agricultural Microbiology, Environmental Science
4.	Dr. C.D. Mishra	Teaching Associate (Agricultural Engineering), RLBCAU, Jhansi	Introductory Soil and Water Conservation Engineering, Renewable Energy and Green Technology, Renewable Energy
5.	Dr. Abhishek Kalia	Teaching Associate (Agricultural Economics), RLBCAU, Jhansi	Fundamentals of Agricultural Economics
6.	Dr. Anita Puyam	Teaching Associate (Plant Pathology), RLBCAU, Jhansi	Fundamentals of Plant Pathology
7.	Dr. Usha	Teaching Associate (Entomology), RLBCAU, Jhansi	Fundamentals of Entomology, NSS /NCC/Physical Education & Yoga Practices**
8.	Dr. Dheeraj Mishra	Teaching Associate (Agricultural Extention), RLBCAU, Jhansi	Fundamentals of Agricultural Extension Education

S.No.	Faculty	Designation	Course Title
9.	Dr. Akla Jain	Guest Faculty (English), RLBCAU, Jhansi	Communication Skills and Personality Development, Entrepreneurship Development and Communication Skills, Comprehension and Communication Skills in English
10.	Dr. AS Kale	Teaching Associate, RLBCAU, Jhansi	NSS/ NCC/Physical Education & Yoga Practices**
11.	Dr. Amit Tomar	Teaching Associate (Agronomy), RLBCAU, Jhansi	Crop Production Technology –II (Rabi Crops) , Field crops-II (Rabi)
12.	Dr. Priyanka Sharma	Teaching Associate (Floriculture and Landscaping), RLBCAU, Jhansi	Production Technology for Ornamental Crops, MAP and Landscaping
13.	Dr. Mukesh Chand	Associate Professor ,BUAT Banda	Renewable Energy and Green Technology
14.	Dr. Susheel Kumar Singh	Teaching Associate (Soil Science), RLBCAU, Jhansi	Problematic Soils and their Management
15.	Dr. Ranjit Pal	Teaching Associate (Fruit Pomology), RLBCAU, Jhansi	Production Technology for Fruit and Plantation Crops
16.	Dr. M.K. Singh	Teaching Associate, RLBCAU, Jhansi	Principles of Seed Technology, Renewable Energy
17.	Dr. Samarpal Singh	Teaching Associate (Agronomy), RLBCAU, Jhansi	Farming System & Sustainable Agriculture , Introductory Agro-meteorology & Climate Change, Field crops-II (Rabi), Weed Management
18.	Dr. S.K. Shukla	Teaching Associate, RLBCAU, Jhansi	Biochemistry
19.	Dr. Ashutosh Singh	Teaching Associate, RLBCAU, Jhansi	Biochemistry
20.	Dr. Samar Pal	Teaching Associate, RLBCAU, Jhansi	Elective Course
21.	Dr. A.B. Majumdar	Principal Scientist (Retd), IGFRI, Jhansi	Educational Tour
22.	Dr. Prince Kumar	Teaching Associate, RLBCAU, Jhansi	Production Economics & Farm management
23.	Dr. Ashutosh Sharma	Teaching Associate, RLBCAU, Jhansi	Extension Methodologies for Transfer of Agricultural Technology

Teaching Faculty Engaged for B. Sc. (Hons.) Horticulture first and second year

S.No.	Faculty	Designation	Course Title
		I Semester	
1.	Dr. Ranjit Pal	Teaching Associate (Fruit Pomology), RLBCAU, Jhansi	Fundamentals of Horticulture, Temperate Fruit Crops
2.	Dr. Abhishek Kalia	Teaching Associate (Agricultural Economics), RLBCAU, Jhansi	Economics and Marketing
3.	Dr. S.K. Shukla	Teaching Associate(Biochemistry), RLBCAU, Jhansi	Elementary Plant Biochemistry
4.	Dr. Shailendra Kumar	Assistant Professor, Bundelkhand University, Jhansi	Elementary Statistics and Computer Application
5.	Dr. Amit Kumar Jain	Teaching Associate(Computer), RLBCAU, Jhansi	Elementary Statistics and Computer Application
6.	Dr. Anshuman Singh	Scientist, Genetics & Plant Breeding, RLBCAU, Jhansi	Principles of Genetics and Cytogenetics
7.	Dr. Susheel Kumar Singh	Teaching Associate (Soil Science), RLBCAU, Jhansi	Fundamental of Soil Science
8.	Dr. Ashutosh Kumar	Teaching Associate (Plant Physiology), RLBCAU, Jhansi	Introductory Crop Physiology
9.	Dr. Priyanka Sharma	Teaching Associate (Floriculture and Landscaping), RLBCAU, Jhansi	Principles of Landscape Architecture, Commercial Floriculture
10.	Dr. Sadhana Singh Sagar	Teaching Associate (Agricultural Microbiology), RLBCAU, Jhansi	Introductory Microbiology
11.	Dr. Akla Jain	Guest Faculty (English), RLBCAU, Jhansi	Communication Skills and Personality Development
12.	Dr. Usha	Teaching Associate, RLBCAU, Jhansi	Fundamentals of Entomology , NSS, Nematode Pests of Horticultural Crops and their Management
13.	Dr. AS Kale	Teaching Associate, RLBCAU, Jhansi	NSS
14.	Dr. Shailja Punetha	Teaching Associate (Vegetable Science), RLBCAU, Jhansi	Temperate Vegetable Crops
15.	Dr. Meenakshi Arya	Scientist, Plant Pathology RLBCAU, Jhansi	Fundamentals of Plant Pathology
16.	Dr. Anita Puyam	Teaching Associate (Plant Pathology), RLBCAU, Jhansi	Diseases of Fruit, Plantation, Medicinal and Aromatic Crops

S.No.	Faculty	Designation	Course Title
17.	Dr. Ashutosh Singh	Teaching Associate (Biotechnology), RLBCAU, Jhansi	Elementary Plant Biotechnology
18.	Dr. Amit Kumar Singh	Teaching Associate (Horticulture), RLBCAU, Jhansi	Weed Management in Horticultural Crops
19.	Dr. Ghanshyam Abrol	Teaching Associate (Post Harvest Management), RLBCAU, Jhansi	Fundamentals of Food Technology
		II semester	
1.	Dr. Ranjit Pal	Teaching Associate (Fruit Pomology), RLBCAU, Jhansi	Tropical and Subtropical Fruits, Plantation Crops
2.	Dr. Shailja Punetha	Teaching Associate (Vegetable Science), RLBCAU, Jhansi	Tropical and Subtropical Vegetables, Spices and Condiments, Precision Farming and Protected Cultivation
3.	Dr. MK Singh	Teaching Associate, RLBCAU, Jhansi	Principles of Plant Breeding, Breeding of Fruit and Plantation Crops
4.	Dr. Priyadarshani	Teaching Associate, RLBCAU, Jhansi	Principles of Plant Breeding
5.	Dr. Susheel Kumar Singh	Teaching Associate (Soil Science), RLBCAU, Jhansi	Soil Fertility and Nutrient Management, Soil, Water and Plant Analysis
6.	Dr. C.D. Mishra	Teaching Associate (Agricultural Engineering), RLBCAU, Jhansi	Water Management in Horticultural Crops, Farm Power and Machinery
7.	Dr. Amit Kumar Singh	Teaching Associate (Horticulture), RLBCAU, Jhansi	Plant Propagation and Nursery Management, Dry land Horticulture
8.	Dr. Sadhana Singh Sagar	Teaching Associate (Agricultural Microbiology), RLBCAU, Jhansi	Environmental Studies and Disaster Management#
9.	Dr. Ashutosh Kumar	Teaching Associate, RLBCAU, Jhansi	Growth and Development of Horticultural Crops
10.	Dr. Ashutosh Singh	Teaching Associate, RLBCAU, Jhansi	Growth and Development of Horticultural Crops
11.	Dr. AS Kale	Teaching Associate, RLBCAU, Jhansi	Physical and Health Education, National Service Scheme/National Cadet Corp
12.	Dr. Amit Kumar Jain	Teaching Associate (Computer Application), RLBCAU, Jhansi	Information and Communication Technology#*
13.	Dr. Usha	Teaching Associate, RLBCAU, Jhansi	Insect Pests of Fruit, Plantation, Medicinal & Aromatic Crops , National Service Scheme/National Cadet Corp
14.	Dr. Priyanka Sharma	Teaching Associate (Floriculture and Landscaping), RLBCAU, Jhansi	Ornamental Horticulture

S.No.	Faculty	Designation	Course Title
15.	Dr. Ghanshyam Abrol	Teaching Associate, RLBCAU, Jhansi	Precision Farming and Protected Cultivation, Dry land Horticulture

Teaching Faculty Engaged for B. Sc. (Hons.) Forestry first and second year

I Semester

S.No.	Faculty	Designation	Course Title
1.	Dr. Susheel Kumar Singh	Teaching Associate (Soil Science), RLBCAU, Jhansi	Geology & Soils
2.	Dr. Samar Pal	Teaching Associate, RLBCAU, Jhansi	Introduction to Agronomy and Horticulture
3.	Dr. Amit Singh	Teaching Associate, RLBCAU, Jhansi	Introduction to Agronomy and Horticulture
4.	Dr. S. K. Shukla	Teaching Associate (Biochemistry), RLBCAU, Jhansi	Plant Biochemistry
5.	Dr. Avinash Sharma	Teaching Associate (Tree Improvement), RLBCAU, Jhansi	Dendrology, Tree Improvement, Forest Ecology & Biodiversity
6.	Dr. Shushma	Guest Faculty, RLBCAU, Jhansi	Basic Mathematics
7.	Dr. A. S. Kale	Teaching Associate (Agroforestry), RLBCAU, Jhansi	Introduction to Forestry, NSS, Forest Mensuration
8.	Dr. Akla Jain	Guest Faculty (English), RLBCAU, Jhansi	Communication Skills and Personality Development
9.	Dr. M.K. Singh	Teaching Associate, RLBCAU, Jhansi	Forest Botany
10.	Dr. Amit Kumar Jain	Teaching Associate, (Computer Application), RLBCAU, Jhansi	Information and Communication Technology
11.	Dr. Abhishek Kalia	Teaching Associate, RLBCAU, Jhansi	Physical Education-I, Physical Education-III
12.	Dr. Usha	Teaching Associate, RLBCAU, Jhansi	NSS
13.	Dr Pankaj Lawania	Teaching Associate, RLBCAU, Jhansi	Forest Ecology & Biodiversity
14.	Dr. C.D. Mishra	Teaching Associate (Agricultural Engineering), RLBCAU, Jhansi	Forest Survey & Engineering

S.No.	Faculty	Designation	Course Title
15.	Dr. Vineet Kumar	Assistant Professor, Bundelkhand University, Jhansi	Environmental Studies and Disaster Management
16.	Dr. Sadhana Singh Sagar	Teaching Associate (Agricultural Microbiology), RLBCAU, Jhansi	Soil Biology & Fertility
17.	Dr. Bhalendra Singh Rajput	Teaching Associate (Agroforestry), RLBCAU, Jhansi	Principles of Agroforestry
II semester.			
1.	Dr. Ashutosh Kumar	Teaching Associate, RLBCAU, Jhansi	Plant Physiology
2.	Dr. Ashutosh Singh	Teaching Associate, RLBCAU, Jhansi	Plant Physiology
3.	Dr. Anshuman Singh	Scientist, Genetics and Plant Breeding, RLBCAU,Jhansi	Plant Cytology and Genetics
4.	Dr. Pankaj Lawania	Teaching Associate, RLBCAU, Jhansi	Theory and Practice of Silviculture, Silviculture of Indian Trees, Wildlife Biology, Ethnobotany, Medicinal and Aromatic plants, Rangeland and Livestock Management
5.	Dr. AS Kale	Teaching Associate, RLBCAU, Jhansi	Wood Anatomy, Forest Protection, Physical Education-II, NSS; Forest Management; Wood Products & Utilization, Ornithology & Herpetology
6.	Dr. MK Singh	Teaching Associate, RLBCAU, Jhansi	Wood Anatomy, Seed Technology & Nursery Management
7.	Dr. Usha	Teaching Associate, RLBCAU, Jhansi	Forest Protection, NSS, Ornithology & Herpetology
8.	Dr. Shailendra Kumar	Assistant Professor, Bundelkhand University, Jhansi	Statistical Methods & Experimental Designs
9.	Dr. AB Mazoomdar	Principal Scientist (Retd.), IGFRI, Jhansi	Rangeland and Livestock Management
10.	Dr. NK Sah	Principal Scientist(Retd.), IGFRI, Jhansi	Forest Tribology & Anthropology
11.	Dr. ShikhaThaur & Dr. Prabhat Tiwari	Teaching Associate, RLBCAU, Jhansi	Study Tour of State Forest

Annexure-IV

Composition of University Building & Works Committee

(Constituted by BOM under provisions of section 37 and para 12(4)(xv) of the Statutes of the Rani Lakshmi Bai Central University Act-2014 vide resolution No. RLBCAU/BOM/3/8/2016 dated 3rd June, 2016)

Sl. No	Members	Name
1.	The Vice Chancellor (Chairperson)	Dr. Arvind Kumar
2.	A Representative of the Construction Agency not below the rank of Executive Engineer.	Sri. Rajesh Bahal, C.G.M., NBCC, New Delhi
3.	A member of Finance Committee nominated by Vice Chancellor	Dr. P. L. Gautam, Ex-Chairman, PPV & FR Authority, & Ex- Vice-Chancellor, GBPUA & T, Pantnagar, H. No. 118, HP Housing Board Colony, Bindraban, Palampur Distt. Kangra – 176061 (H.P.)
4.	The Comptroller	Comptroller/ Sri. M. K. Mulani, F&AO.
5.	A Representative of User Department	Dr. Mridulla Billore, Dean College of Agril., Khandwa (M.P.)
6.	Two teachers of the University nominated by the Vice Chancellor	Dr. Meenakshi Arya, Scientist, Pl. Pathology Dr. Anshuman Singh Scientist, Genetics & Pl. Breeding
7.	Dean or his nominee not below the rank of Professor from Government Engineering College	Prof. Shailendra Jain, Prof. & Head Electrical Engineering, MANIT, Bhopal
8.	An expert in Civil Engineering/ Construction Management nominated by the Vice Chancellor	Prof. Anil Saxena, Prof. Dept. of Civil Engineering, MITS, Gwalior
9.	The University Engineer/Consultant engaged by the University	University Engineer/Consultant
10.	The Registrar- Member Secretary	Dr. Mukesh Srivastava

Annexure-V

Rani Lakshmi Bai Central Agricultural University, Jhansi
Academic Calender of Year 2017-18

All Undergraduate Programme

1.	Date Of Registration	24.07.2017 (Monday)
2.	Orientation Programme	25.07.2017 (Tuesday)
3.	Commencement of classes	26.07.2017 (Wednesday)
4.	Last date of registration with late registration fee	04.08.2017 (Friday)
5.	Fresher's day/Cultural eve	16.08.2017(Wednesday)
6.	Midterm semester examination	04.10.2017 to 16.10.2017 (Wednesday to Monday)
7.	Mid semester Report to Dean from Teacher	28.10.2017(Saturday)
8.	Instruction Ends	15.12.2017(Friday)
9.	Preparation Break	16.12.2017 to 18.12.2017 (Saturday to Monday)
10.	End term examination (Theory and Practical)	19.12.2017 to 30.12.2017 (Tuesday to Saturday)
11.	Semester Break	31.12.2017 to 14.01.2018 (Sunday to Sunday)

Semester Starts from 15.01.2018 (Monday)

NEXT SEMESTER

1	Date Of Registration	15.01.2018 (Monday)
2	Commencement of classes	16.01.2018 (Tuesday)
3	Last date of registration with late registration fee	27.01.2018 (Saturday)
4	Midterm semester examination	26.03.2018 to 05.04.2018 (Monday to Thursday)
5	Mid semester Report to Dean from Teacher	16.04.2018 (Monday)
6	Instruction Ends	15.06. 2018 (Friday)
7	Preparation Break	16.06.2018 to 17.06.2018 (Saturday to Sunday)
8	End term examination (Theory and Practical)	18.06.2018 to 30.06.2018 (Monday to Saturday)
9	Semester Break	1.07.2018 to 22.07.2018 (Sunday to Sunday)

New Academic Session 2018-19 to begins on 23.07.2018 (Monday)

Annexure-VI

Rani Lakshmi Bai Central Agricultural University, Jhansi
Annual Accounts 2017-18

BALANCE SHEET AS ON 31ST MARCH 2018

(Amount in Rupees)

Corpus/Capital Fund & Liabilities			
	Schedule	**Current Year**	**Previous Year**
Corpus/Capital Fund	1	247388488.00	54158972.00
Reserves	2	0.00	0.00
Earmarked/Endowment Fund	3	0.00	0.00
Current Liabilities & Provisions	4	468973922.00	370736972.00
Total		**716362410.00**	**424895944.00**
Assets			
Fixed Assets	5	229025790.00	39272277.00
Investments- Earmarked/Endowment Funds	6	0.00	0.00
Current Assets, Loans & Advances	7	487336620.00	385623667.00
Total		**716362410.00**	**424895944.00**
Significant Accounting Policies	23	0.00	
Contingent Liabilities & Notes to Accounts	24		

Sd/-
Vice-Chancellor

Sd/-
Finance & Accounts Officer

Annexure-VII

Rani Lakshmi Bai Central Agricultural University, Jhansi
Annual Accounts 2017-18

INCOME & EXPENDITURE ACCOUNT FOR THE YEAR ENDED 31ST MARCH 2018

(Amount in Rupees)

A. Income	Schedule	Current Year	Previous Year
Grants from DARE	8	38478917.00	25051045.00
Income from Sales & Services	9	207406.00	24442.00
Academic Receipts	10	422965.00	368540.00
Interest Earned	13	2103491.00	13158968.00
Other Income	14	742141.00	78645.00
Prior Period Income	15	0.00	0.00
Total (A)		**41954920.00**	**38681640.00**
B. Expenditure			
Establishment expenses	16	4345144.00	4320618.00
Administrative expenses	17	11679084.00	6914733.00
Academic Expenses	18	16744516.00	11858863.00
Research Expenses	19	5234301.00	1513332.00
Extension Activities Expenses	20	37720.00	42476.00
Other Expenses	21	438152.00	401023.00
Prior period expenditure	22	0.00	0.00
Depreciation	5	3255230.00	692903.00
Total (B)		**41734147.00**	**25743948.00**
Balance being surplus/(Deficit) carried to corpus/Capital Fund		**220773.00**	**12937692.00**

Sd/-
Vice-Chancellor

Sd/-
Finance & Accounts Officer

Annexure-VIII

Statutory Officers

The list of the Statutory Officers of the university during the year 2017-18

Visitor

Shri Pranab Mukherjee
(till 24th July, 2017)

Shri Ram Nath Kovind
(Since 25th July, 2017)
Hon'ble President of Republic of India

Chancellor

Prof. Dr. Panjab Singh
Former Secretary, DARE & DG ICAR and
Ex-Vice Chancellor, Banaras Hindu University

Vice-Chancellor

Dr. Arvind Kumar

Registrar

Dr. Mukesh Srivastava